VYAS PANCHANG

ज्योतिष-पंचांग-पूजा पाठ एवं ज्योतिष परामर्श

बालागाम,ता.केशोद,जिला.जूनागढ़,गुजरात,भारत(इन्डिया) पिन:362220

www.vyaspanchang.com, help@vyaspanchang.com, MO.NO.94087 28736 (11 AM TO 06 PM)

ज्योतिष विज्ञान

हिन्दी

VYAS PANCHANG

रवींद्र कुमार दुबे

"राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान,
कलकत्ता के सौजन्य से प्राप्त।"

प्रकाशक : प्रतिभा प्रतिष्ठान,

1661 दखनीराय स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई
सर्वाधिकार : सुरक्षित / संस्करण : प्रथम, 2002 / मूल्य : एक

मुद्रक : नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली ISBN

BHARTIYA JYOTISH V GYAN *by* Ravindra Ku

Published by P Pratishthan 1661 Dakhn

श्री साँईं शरणम्

भूमिका

किसी भी विषय का सामान्य ज्ञान जनसाधारण को न होने की दशा मे उस विषय के प्रति जनसामान्य मे अनेक भ्रातियाँ उत्पन्न हो जाती है। ज्योतिष एक विज्ञान है, परतु विज्ञान के रूप में इसका अध्ययन/अध्यापन न होने के कारण इसे जादू--टोने के रूप में या अचानक आई विपत्ति के समय कष्ट--निवारक साधन के स्वरूप मे याद किया जाता है। इससे इसका वैज्ञानिक रूप अज्ञानता के बादलो मे खोया हुआ है। प्राचीन काल से भारत मे ही नही बल्कि अन्य देशो मे, जहाँ की प्राचीन सभ्यताओ का अध्ययन हुआ है, वहाँ प्राचीन काल मे ज्योतिष विज्ञान के विद्वानो को सम्मान देने का तथ्य उजागर होता है। बेवीलोन व ग्रीक मे प्राचीन काल में ज्योतिष शास्त्र के अनेक विद्वान् हुए है। ब्रिटिश म्यूजियम में उस समय की बनाई हुई कुछ लग्न तालिकाएँ सुरक्षित रखी हुई हैं। सिकदर के समय मे भी ज्योतिषियो को महत्त्व दिया जाता था। मिस्र मे 5000 ईसा पूर्व भी ज्योतिष का ज्ञान विद्वानों को था। फराह शासको के समय शासक के निर्णयो को प्रभावित करने मे 'बैविलस' नामक ज्योतिष सक्षम था।

प्राचीन भारत मे ज्योतिष विज्ञान एक प्रमुख विज्ञान था। 'रामायण' व 'महाभारत' के काल मे सभी विद्वान् ऋषि ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान रखते थे। उस समय की शिक्षा मे शस्त्र विद्या के साथ ज्योतिष विज्ञान गुरुकुलों में अध्ययन का प्रमुख विषय था। अत स्पष्ट है कि

उस समय जो भी विद्वान रहा होगा उसे अन्य विद्याओ के साथ साथ ज्योतिष शास्त्र का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त था। उस काल म ज्यातिष का अध्ययन 'विज्ञान' के रूप मे किया जाता था। अत जनसामान्य को भी इसकी सम्यक् जानकारी थी और जनसामान्य के हित मे इस विद्या का प्रयोग किया जाता था। प्राचीन काल के ज्योतिष सबधी अनेक ग्रथ पूर्ण या आशिक रूप मे अभी भी उपलब्ध है, जो इस बात को सिद्ध करते है कि प्राचीन काल में अध्ययन–अध्यापन मे इस विषय का प्रयोग भलीभॉति किया जाता रहा है।

प्रत्येक कालखड मे विज्ञान की किसी एक विधा का महत्त्व समय की परिस्थितियो के अनुसार अधिक होता रहा है, जैसे वर्तमान कालखड में कम्प्यूटर ने विज्ञान की अन्य विधाओ को पृष्ठभूमि मे डाल दिया है। वर्तमान समय में जब अधिकतर मेधावी छात्र कम्प्यूटर के क्षेत्र मे अध्ययन की रुचि रखेगे तो स्पष्ट है कि कुछ समय के लिए विज्ञान की अन्य विधाओ का विकास व उस क्षेत्र मे अन्वेक्षण की प्रगति धीमी हो जाएगी। इसी प्रकार सभव है कि पूर्व के किसी समय मे परिस्थितिवश ज्योतिष का अध्ययन भारत में पृष्ठभूमि मे चला गया हो। एक स्पष्ट कारण तो यह भी रहा होगा कि लगभग 2000 वर्ष पूर्व से समय–समय पर विदेशी आक्रमणो ने जहॉ एक ओर हमारे पारपरिक रहन–सहन व अध्ययन–अध्यापन की रीति को प्रभावित किया वही दूसरी ओर कई आक्रमणकारियो ने प्राचीन ग्रथालयो को भी नष्ट कर दिया। यही कारण है कि अब यदि ज्योतिष विज्ञान का कोई ज्ञाता प्रारंभिक अध्ययन से पूर्ण ज्ञान की सीमा तक अध्ययन करना चाहे तो उसे पुस्तकें चुनने व प्राप्त करने मे अत्यत कठिनाई होगी। इसी परिस्थिति ने जनसामान्य के बीच ज्योतिष का महत्त्व एक विज्ञान के रूप मे समझने के बजाय एक अबूझ पहेली के रूप मे कर दिया है।

यद्यपि आजकल समाज के सभी वर्ग के लोग व्यक्तिगत रूप से सभी महत्त्वपूर्ण कार्यो के लिए अवसर का चयन ज्योतिषी के परामर्श

से करते हैं तथापि आधिकारिक रूप से ज्योतिष पर विश्वास न करने की बात वे कहते है। जो व्यक्ति समाज मे सबके सामने ज्योतिष को ढकोसला' कहता दिखाई देता है, वही व्यक्ति अपना नया कारोबार करने से पूर्व ज्योतिषी से मुहूर्त की जानकारी प्राप्त करते हुए देखा जाता है। यह एक प्रकार का मानसिक दौर्बल्य है। इसी के साथ यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि समाज मे जिस विषय का महत्त्व सभी लोगो के बीच व्यक्तिगत रूप से है उस विषय का विकास यदि अन्वेषण व नए प्रयोगो के द्वारा नही किया जाता है तो वह विषय अर्द्धज्ञानी व्यक्तियो के माध्यम से जनसामान्य के बीच केवल धन कमाने के माध्यम के रूप मे बनकर रह जाता है। हम ज्योतिषी से परामर्श लेने के लिए तैयार है, परतु सार्वजनिक रूप से ज्योतिष विज्ञान के महत्त्व को स्वीकार करने मे हिचकते है। इस द्विविधापूर्ण स्थिति से समाज मे अस्तित्व मे अर्द्धज्ञानी व्यक्ति आनेवाले धन देकर पूछनेवाले व्यक्ति को यथासभव प्रसन्न करने का ही प्रयास करेगे। अत यह आवश्यक है कि ज्योतिष विज्ञान की सामान्य जानकारी सभी उत्सुक व्यक्तियो को मिले, ताकि जनसामान्य इसे एक 'विज्ञान' के रूप मे समझ सके।

सभी वैज्ञानिक विषयो के समान ज्योतिष विज्ञान की भी अपनी सीमा है। इस सीमा के अतर्गत ही ज्योतिषी को ज्ञान होगा। अत हर समस्या का निदान ज्योतिषी के पास अवश्य होगा, यह समझना भी गलत होगा।

प्रत्येक काल मे मनुष्य के ज्ञान की सीमा रही है। अज्ञात क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने के प्रयास सदैव जारी रहे हैं। भौतिक विज्ञान के विकास के एक कालखड मे पदार्थ का सबसे छोटा कण 'अणु' माना जाता था। बाद मे वैज्ञानिको ने अणु के अदर परमाणुओ की खोज की। इससे यह स्पष्ट है कि किसी भी विज्ञान की जानकारी मनुष्य को एक सीमा तक होती है और उससे आगे की सीमा की जानकारी के लिए अध्ययन, प्रयोग व अन्वेषण की आवश्यकता होती है। अत ज्योतिष विज्ञान की भी जानकारी जिस सीमा तक है, उससे आगे की

जानकारी के लिए इस विज्ञान के भी सतत अध्ययन प्रयोग व अन्वेषण की आवश्यकता है। यह तभी सभव है जब इसका नियमित अध्ययन एक विषय के रूप मे प्रारभिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हो। अमेरिका व यूरोप के कुछ विद्यालयो मे ज्योतिष विषय को पाठ्यक्रम मे सम्मिलित किया गया है, परंतु जब तक इस विषय के गहन अध्ययन की व्यवस्था नही होती है तब तक जनसामान्य को इस विषय की इतनी जानकारी प्राप्त कराना आवश्यक है कि वह इस विज्ञान के अर्द्धज्ञानी व्यक्तियो की 'पैसा खीचू मानसिकता' का शिकार न बने तथा इस विज्ञान का वास्तविक लाभ अपने परिवार व समाज की उन्नति हेतु स्वयं प्राप्त कर सके। प्रस्तुत पुस्तक ज्योतिष विज्ञान इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक लघु प्रयास है।

—रवींद्र कुमार दुबे

अनुक्रमणिका

1	ज्योतिष एक विज्ञान क्यों?	13
2	ज्योतिष विज्ञान के मूल तत्त्व	17
3	बारह राशियो के सामान्य गुण	35
4	ग्रहो के सामान्य गुण	54
5	बारह भावो का महत्त्व	85
6	ज्योतिष फल–विचार	113

[illegible]

अध्याय—1

ज्योतिष एक विज्ञान क्यों?

ज्योतिष का मूल आधार लग्न तालिका है, जो व्यक्ति के जन्म के समय पृथ्वी के सापेक्ष अन्य ग्रहो (अतरिक्षीय पिंडों) की स्थिति को प्रदर्शित करता है। भौतिक विज्ञान के सभी सिद्धात मूल अभिकल्पनाओ पर आधारित होते है। ये अभिकल्पनाएँ भौतिक पदार्थो के मूल गुणो पर आधारित होती है। ज्योतिष का भी मूल आधार यह है कि किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय, अर्थात् माँ के शरीर से जैसे ही बच्चा पृथक् अस्तित्व में आता है, उस समय अन्य ग्रह, नक्षत्र आदि की जन्म–स्थान से जो सापेक्ष दूरी है वह उस बच्चे के शरीर के सभी अवयवों पर स्थायी प्रभाव डालती है तथा बच्चे का पूर्ण भविष्य इस प्रभाव के अधीन रहता है। मानसिक रोगियो पर पूर्णमासी का विशेष प्रभाव सभी जानते है। ऐसे रोगियो को ल्यूनेटिक (Lunatio) इसी कारण से कहा जाता है कि इनकी मनोदशा चंद्रमा की स्थिति से प्रभावित होती है। ऐसा क्यो होता है? पूर्णमासी व अमावस्या पर समुद्र मे ज्वार–भाटा की स्थिति के कारण से हम सभी परिचित है कि चूँकि चद्रमा पृथ्वी से सबसे समीप है, अत उसकी स्थिति का गुरुत्वीय प्रभाव सबसे अधिक पडता है।

ब्रह्मांड का प्रत्येक पिंड गुरुत्वीय शक्ति से एक–दूसरे पर आकर्षण बल लगाता है। इस गुरुत्वाकर्षण बल के दो मूल सिद्धात है—

1 दो पिडो के बीच लगनेवाला गुरुत्वीय बल उन दोनो पिडो के द्रव्यमान के गुणनफल का समानुपाती होता है।

गुरुत्वीय बल α पिंडो के द्रव्यमान का गुणनफल ।

अत किसी भी आकाशीय पिड का द्रव्यमान जितना अधिक होगा, उसके द्वारा लगाया जानेवाला गुरुत्वीय बल उतना ही अधिक होगा।

2 दो पिडों के बीच लगनेवाला गुरुत्वीय बल दो पिडो के बीच की दूरी के वर्ग का व्युतक्रमानुपाती होता है।

$$\text{गुरुत्वीय बल } \alpha \frac{1}{(\text{पिंडों के बीच की दूरी})^2}$$

अर्थात् जो पिड अधिक समीप होंगे, उनके बीच गुरुत्वीय बल अधिक लगेगा।

यद्यपि चद्रमा का द्रव्यमान अन्य आकाशीय पिडो की तुलना मे कम है, परतु वह पृथ्वी के बहुत समीप है। अत उसके द्वारा पृथ्वी पर गुरुत्वीय बल अन्य पिडो की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है, परतु यह बल इतना नही होता है कि पृथ्वी व चद्रमा एक–दूसरे के समीप आ जाएँ, फिर भी समुद्र के जल की ऊपरी सतह आकर्षण बल के लिए स्वतत्र है। अत पूर्णमासी को समुद्र के जल की सतह गुरुत्वीय आकर्षण के कारण ऊपर आ जाती है।

उपर्युक्त उदाहरण के ही आधार पर हम जन्म के समय विभिन्न आकाशीय पिडो की स्थिति का प्रभाव जन्म लेनेवाले व्यक्ति पर पडने की बात समझ सकते है। मानव शरीर के द्रव्यमान का लगभग 80 प्रतिशत भाग तरल रूप में है तथा रक्त कोशिकाओ में लौह व अन्य खनिज होते है। अत जन्म के समय विभिन्न ग्रहों व आकाशीय पिडो की स्थिति इस द्रव पर तत्कालीन स्थिति के अनुसार गुरुत्वीय बल उत्पन्न करती है तथा लौह कणो पर चुबकीय बल का प्रभाव होता है। इस प्रकार जन्म के समय विभिन्न ग्रहो व अन्य आकाशीय

पिंडो की स्थिति मनुष्य के शरीर पर एक स्थायी प्रभाव उत्पन्न करती है इस स्थायी प्रभाव को लग्न तालिका के रूप मे ज्योतिषी गणना कर बनाता है। यद्यपि जीवन मे विभिन्न कालखड मे ग्रहादि की स्थिति बदलती रहती है, जिसकी गणना पृथक् से ज्योतिष विज्ञान मे की जाती है, परतु जन्म के समय की स्थिति के अनुसार जो लग्न–तालिका सामने आती है वही उस व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का मूल आधार होती है।

उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्योतिष एक विज्ञान है तथा विज्ञान की किसी भी शाखा के समान किसी भी व्यक्ति को ज्योतिष विज्ञान की जितनी जानकारी अध्ययन प्रयोग आदि के द्वारा होगी, उसी सीमा तक वह सफलतापूर्वक ज्योतिषीय गणना कर फलादेश बता सकेगा। हमारी कठिनाई यह है कि हम किसी भी ज्योतिषी से यह अपेक्षा करते है कि वह जादूगर के समान भूत, भविष्य व वर्तमान की सभी बाते बतलाएगा तथा प्रत्येक कष्ट के निवारण का साधन भी बतलाएगा। हम चिकित्सा विज्ञान से इसकी तुलना करे तो स्थिति पूर्ण स्पष्ट होगी।

किसी भी समय अन्वेषण आदि के द्वारा जिन रोगो के उपचार की दवाएँ खोजी गई है, उन रोगो का उपचार उस समय सभव हो सकता है। अब से पचास वर्ष पूर्व टायफाइड, टी.बी. आदि रोग लाइलाज थे। किंतु अब इनका उपचार सभव है। परतु कैंसर व एड्स के मरीज की अतिम दशा मे मृत्यु को कोई डॉक्टर नही रोक सकता है। इसी प्रकार ज्योतिष विज्ञान की भी जानकारी ज्योतिषी को जिस सीमा तक है उस सीमा तक ही किसी व्यक्ति के कष्ट को वह बता सकता है, और उसका ज्योतिषी उपचार कर सकता है। यदि पूर्ण उपचार संभव नही है तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ज्योतिष एक विज्ञान नही है। कारण यह है कि सबधित ज्योतिषी की ज्ञान की सीमा है। जिस प्रकार गॉव व छोटे कस्बो मे पूर्णत शिक्षित चिकित्सक उपलब्ध न होने के कारण अर्धशिक्षित चिकित्सक

मरीजों को दवाएँ देने लगते है, उसी प्रकार समाज मे पूर्णत शिक्षित ज्योतिषी उपलब्ध न होने के कारण अर्द्धज्ञानी व्यक्ति ही ज्योतिषी का कार्य करने लगते है। इन व्यक्तियो के द्वारा धन कमाने की प्रवृत्ति के कारण ज्योतिष विज्ञान का वास्तविक स्वरूप सामने नही आता है, परतु यदि गभीरता से सोचे तो आप पाएँगे कि ज्योतिष एक विज्ञान है। आवश्यकता है इस विज्ञान के पठन–पाठन, प्रयोग–अन्वेषण आदि की उचित व्यवस्था की। ज्योतिष का पर्याप्त ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति बहुत कम है, परतु समाज मे सभी लोग अपना भूत–भविष्य जानना चाहते है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता आपूर्ति का वही उदाहरण लागू होगा, जो दूध की मॉग अधिक होने पर दूधिया द्वारा दूध मे पानी की मात्रा बढाने की प्रवृत्ति को जन्म देता है।

यद्यपि मात्र एक पुस्तक पढकर कोई व्यक्ति ज्योतिषी नही बन सकता है, परंतु यह बात अवश्य है कि रुचि रखनेवाले सभी व्यक्तियो को ज्योतिष विज्ञान के मूल तत्त्वों का ज्ञान अवश्य प्राप्त हो जाए तथा हम ज्योतिष को एक विज्ञान के रूप मे समझने का प्रयास करे। यदि ज्योतिष का इतना सामान्य ज्ञान आप प्राप्त कर लेते है तो आप साधारण बातो के लिए अर्द्धज्ञानी व्यक्तियो के पीछे नही जाएँगे। ज्ञान रखनेवाले ज्योतिषी के सपर्क का सौभाग्य यदि आपको वास्तव मे प्राप्त हो जाए तो निस्सदेह आप अपने इस सामान्य ज्ञान की सहायता से उस ज्ञानी के ज्ञान को समझने में सक्षम होगे। लेखक का मानना है कि जिस प्रकार सभी व्यक्तियो को भौतिक विज्ञान के मूलभूत सिद्धातो की सामान्य जानकारी आवश्यक है उसी प्रकार ज्योतिष विज्ञान के भी मूल सिद्धातो की जानकारी सभी जिज्ञासु व्यक्तियो को होना आवश्यक है। इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस पुस्तक को आगे पढ़ने मे आपको अवश्य आनंद आएगा।

☐

अध्याय–2

ज्योतिष विज्ञान के मूल तत्त्व

किसी भी समय विशेष पर पृथ्वी अपने परिपथ मे घूमते समय जिस स्थान पर है, उस स्थान से विभिन्न ग्रह, नक्षत्र व अन्य आकाशीय पिडो की दूरी उस समय विशेष पर जन्म लेनेवाले व्यक्ति की लग्न तालिका निर्धारित करने का मुख्य आधार होगी। अपने सौरमडल के नौ प्रमुख ग्रह (या अन्य आकाशीय पिंड), जो दूरस्थ सौरमडलो के पिडो की तुलना मे बहुत कम दूरी पर है, पृथ्वी पर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव रखते है। अत इन सभी नौ आकाशीय पिडो के पृथक्–पृथक् प्रभाव को लग्न तालिका मे रखा जाता है, जैसा बाद मे दिए गए वर्णन से स्पष्ट होगा, परतु ब्रह्माड मे अन्य सभी आकाशीय पिडो के व्यक्तिगत प्रभाव को पृथक्–पृथक् ऑकना सभव नहीं है, क्योकि असख्य आकाशीय पिडो मे समय विशेष पर प्रत्येक की पृथ्वी से दूरी गणना करना कदापि सभव नही है। अत पृथ्वी के पूरे गोल परिपथ को बारह भागो में विभाजित कर उन भागो मे पडनेवाले अन्य आकाशीय पिडो के प्रभाव के आधार पर पृथ्वी के मार्ग मे बारह किमी के पत्थर काल्पनिक रूप से माने गए है। (चित्र–1) यदि एक नगर से दूसरे नगर के बीच की दूरी अधिक है तो मार्ग मे जो किमी के पत्थर लगे होते है, उनके बीच की स्थिति के अनुसार हम यह बताते है कि किमी 14 व 15 के बीच

मार्ग खराब दशा मे है या कि मी 17 व 18 के बीच टूटी हुई पुलिया है। कोई भी वृत्ताकार मार्ग कुल 360^0 का होता है, अत इसे 12 बराबर भागो में बॉटने पर प्रत्येक भाग 30^0 का होगा। पृथ्वी के परिपथ मे जो बारह भाग माने गए है उन्हे ही ज्योतिष विज्ञान मे बारह राशियो के रूप मे जाना जाता है। प्रत्येक राशि पृथ्वी के घूमने के मार्ग मे 30^0 के भाग मे होती है। राशियो के नाम उनकी डिग्री (अश) सहित इस प्रकार है—

क्र.	डिग्री (अंश)	राशि का नाम (हिंदी में)	राशि का नाम (अंग्रेजी में)
1	0–30	मेष	ARIES
2	31–60	वृष	TAURUS
3	61–90	मिथुन	GEMINI
4	91–120	कर्क	CANCER
5	120–150	सिह	LEO
6	151–180	कन्या	VIRGO
7	181–210	तुला	LIBRA
8	211–240	वृश्चिक	SCORPIO
9	241–270	धनु	SAGGATIRUS
10	271–300	मकर	CAPPRICORN
11	301–330	कुभ	ACQUARIUS
12	331–360	मीन	PISCES

राशियो के स्वामी ग्रह : यद्यपि खगोल विज्ञान के अनुसार सूर्य एक नक्षत्र है और पृथ्वी, मगल, बुध, शनि, बृहस्पति, शुक्र आदि उसके ग्रह हैं तथा चद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है, परतु ज्योतिष विज्ञान मे हम क्योकि पृथ्वी पर उसके समीप के आकाशीय पिडो के प्रभाव का अध्ययन करते हैं, अत. पृथ्वी के समीप के सभी आकाशीय पिडो, यथा—सूर्य, चद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि के लिए सामान्य नाम ग्रह का प्रयोग किया जाता है। यह परंपरा चली आ

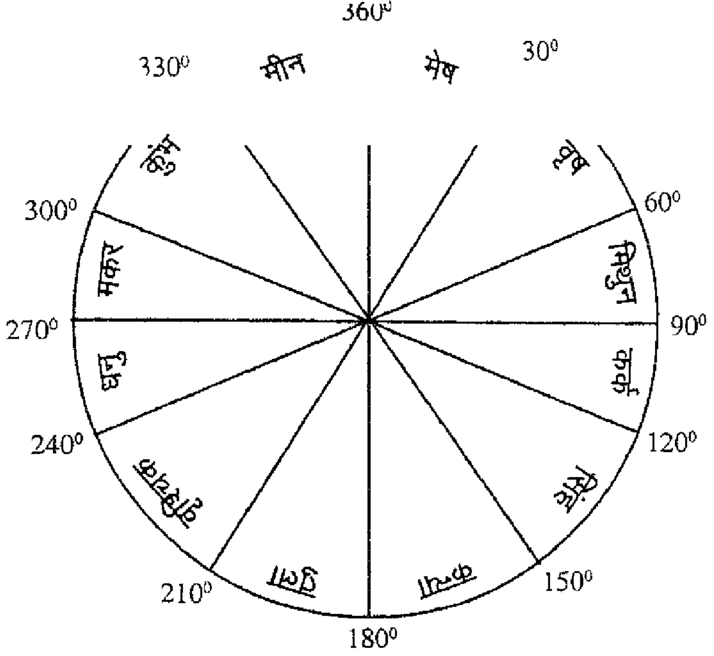

चित्र—1 पृथ्वी के परिपथ मे राशियो का विभाजन

रही है। अत इस पुस्तक मे भी इन आकाशीय पिडो के लिए 'ग्रह शब्द का ही प्रयोग किया जा रहा है। यदि आप चाहे तो इसके स्थान पर आप 'पृथ्वी के समीपस्थ आकाशीय पिड' पढे। इसके अतिरिक्त राहु व केतु के लिए भी 'ग्रह' शब्द का ही प्रयोग किया जाता रहा है। ग्रहों के व्यक्तिगत गुणो का वर्णन पृथक् अध्याय मे किया जाएगा।

पूर्व मे जिन बारह राशियो का उल्लेख किया गया है उनमे प्रत्येक राशि का स्वामी एक विशेष 'ग्रह' होता है, अर्थात् उस राशि मे उसके स्वामी ग्रह का विशेष प्रभाव होता है। राशि व उसके स्वामी निम्नवत् है—

क्र	राशि का नाम	स्वामी ग्रह का नाम
1	मेष	मगल (MARS)
2.	वृष	शुक्र (VENUS)
3.	मिथुन	बुध (MERCURY)
4.	कर्क	चद्र (MOON)
5	सिह	सूर्य (SUN)
6	कन्या	बुध (MERCURY)
7	तुला	शुक्र (VENUS)
8	वृश्चिक	मगल (MARS)
9	धनु	बृहस्पति (JUPITER)
10	मकर	शनि (SATURN)
11	कुभ	शनि (SATURN)
12	मीन	बृहस्पति (JUPITER)

लग्न तालिका मे बारह भाव—उत्तर भारत मे लग्न तालिका चित्र–2 मे दिखाए गए रूप मे बनाई जाती है। इसमे जो बारह खाने बने है उनमे चित्र की भॉति केद्र के प्रथम भाव से प्रारंभ करके घडी की सुई की उलटी दिशा मे चलते हुए बारहवे भाव तक बनाए जाते है। उक्त बारह भाव मे प्रत्येक भाव मनुष्य के जीवन के किसी विशेष क्षेत्र को तथा किसी विशेष अंग की स्थिति को बताता है। प्रत्येक भाव का विस्तृत अध्ययन अलग से आगे किया जाएगा। उदाहरणार्थ—प्रथम भाव मनुष्य के सामान्य शारीरिक गठन व सिर के सबध मे बताता है।

लग्न तालिका में बारह भाव

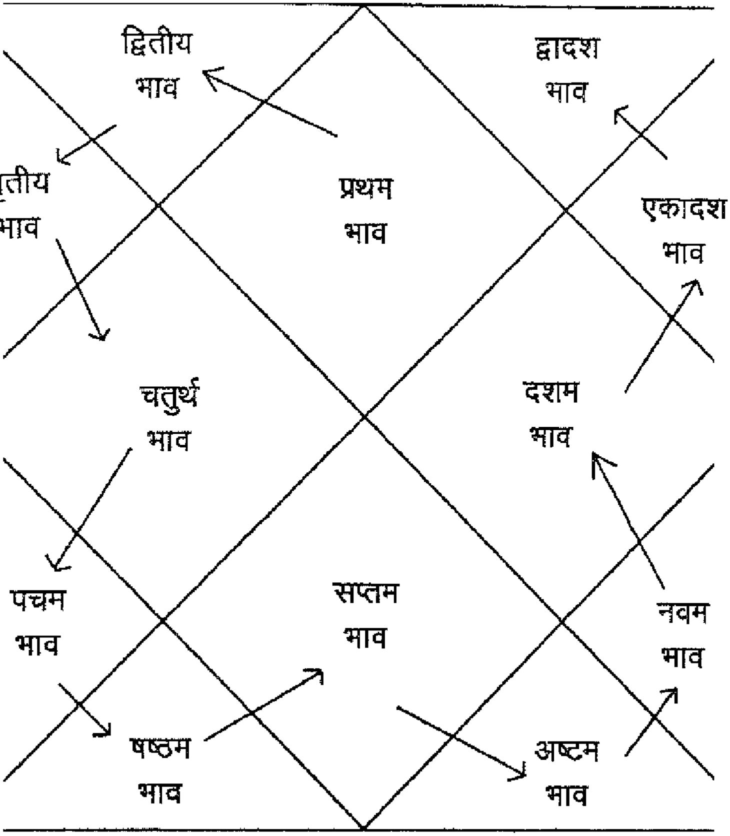

चित्र–2

लग्न तालिका में राशियों व ग्रहों को प्रदर्शित करना

किसी व्यक्ति के जन्म के समय पृथ्वी अपने परिपथ पर चलते हुए जिस राशि में है, वह राशि की क्रम सख्या के रूप मे प्रथम भाव मे लिखी जाती है तथा उसके आगे की राशियाँ घडी की सुइयो के उलटी दिशा मे क्रमश: दूसरे, तीसरे.... .आदि भावो मे लिखी जाती है

उदाहरणार्थ—यदि किसी व्यक्ति का जन्म चित्र (3) के अनुसार उस समय हुआ है, जब पृथ्वी 30^0 व 60^0 के बीच, अर्थात् वृष राशि मे थी तो लग्न तालिका के प्रथम भाव मे वृष राशि की क्रम सख्या, अर्थात

2 लिखा जाएगा तथा उसके बाद द्वितीय, तृतीय आदि भावो मे 3, 4 ... .आदि चित्र–4 के अनुसार लिखा जाएगा। बारहवे भाव मे राशि क्रम सख्या–1 (मेष) लिखा जाएगा।

राशियो को अकित करने के बाद अन्य ग्रहो की स्थिति जन्म के समय देखकर उसे सबधित राशिवाले भाव मे लिखा जाएगा। उदाहरणार्थ–चित्र–3 के अनुसार, जन्म के समय बृहस्पति वृष (2) राशि में चद्र मिथुन (3) राशि मे है। अत चित्र –4 मे प्रथम भाव मे बृहस्पति व द्वितीय भाव में चंद्र लिखा गया है। इसी प्रकार चित्र–3 में जन्म के समय शनि व राहु सिह (5) राशि मे, शुक्र, मकर (10) राशि में, बुध, सूर्य व केतु कुभ (11) राशि में तथा मगल मीन, वृष (12) राशि मे हैं। अत चित्र–4 मे इसी के अनुसार सबधित राशिवाले भाव में इन ग्रहो के नाम लिखे गए है। जन्म के समय पृथ्वी किस राशि मे किस डिग्री पर थी तथा अन्य ग्रहो की क्या स्थिति थी, इसको ज्ञात कर पूर्ण लग्न तालिका

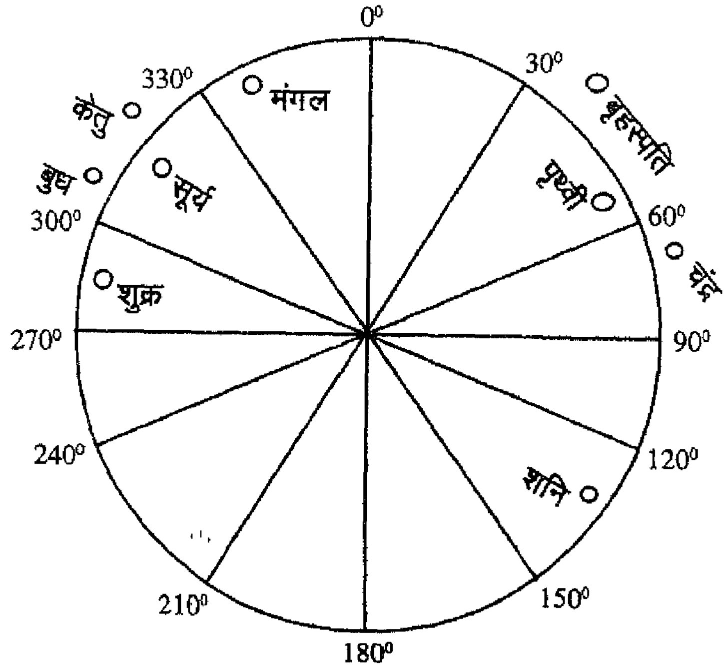

चित्र–3

बनाना आसानी से सीखा जा सकता है लग्न तालिका (जन्म कुडली) बनाना इस पुस्तक का विषय नही है परतु पाठको की जानकारी के लिए यह बतलाना पर्याप्त होगा कि जन्म कुडली निम्नलिखित साधनो से बनाई जा सकती है।

वृष राशि मे लग्न—कुंडली

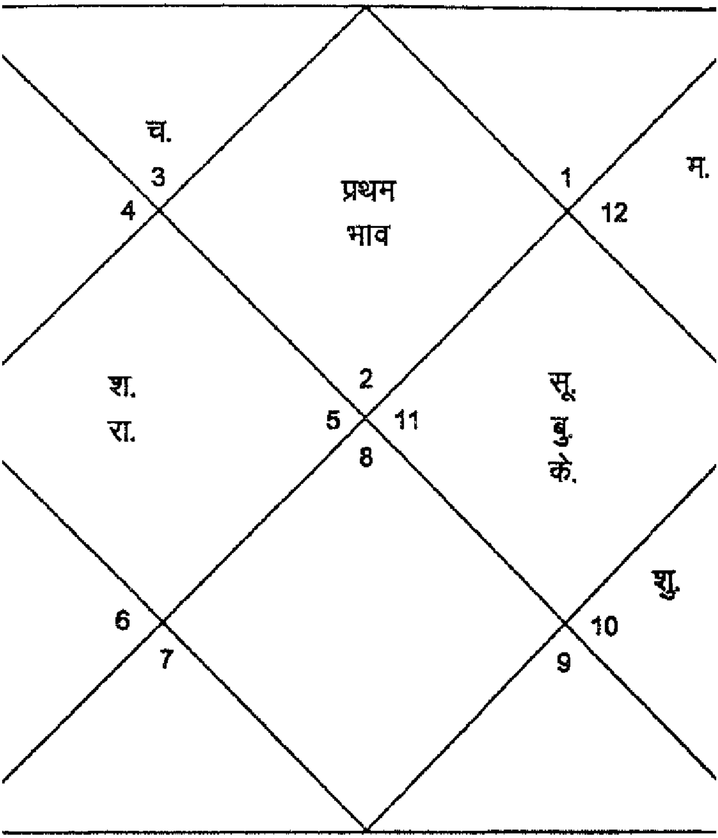

चित्र—4

1 विभिन्न प्रकाशनों की Table of Ascendant के द्वारा जन्म के समय पृथ्वी की राशि (डिग्री) की गणना की जाती है। लग्न तालिका मे इसे प्रथम भाव मे लिखा जाता है तथा Table c. Ephimeris के द्वारा अन्य ग्रहो की स्थिति की गणना की जाती

है। गणना की विधि इन पुस्तको मे लिखी होती है, जिसे पढकर साधारण गणितीय गणना करने मे सक्षम व्यक्ति जन्म कुडली बना सकता है। Table of Ascendant मे जन्म–स्थान के अक्षाश देशातर के अनुसार गणना मे शुद्धि लाई जाती है। अत इस विधि से जन्म कुंडली शुद्ध रूप से बन जाती है।

2 हिंदी मे पंचाग सभी स्थानो पर सरलता से उपलब्ध है। इसमे भी किसी भी तिथि पर लग्न राशि व अन्य ग्रहो की स्थिति दी गई होती है। अतः समय विशेष के लिए पचाग मे ग्रह की जो गति दी जाती है, उसके अनुसार ग्रहों की सही स्थिति की गणना कर जन्म कुडली बनाई जा सकती है।

3 जन्म कुंडली बनाने हेतु कप्यूटर मे सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध है। अत कप्यूटर की सहायता से भी जन्म कुडली बनाई जा सकती है, परतु जन्म कुडली के फल की विवेचना इस पुस्तक को पढ़कर स्वय ही करना उचित होगा, क्योकि जन्म कुडली के फलादेश की विवेचना का कोई प्रमाणित सॉफ्टवेयर अभी तक बनाना संभव नही हुआ है। निकट वर्षो मे ऐसा करना भी सभव नही है, क्योकि जन्म कुडली की विवेचना मे असख्य परिवर्तनीय (Variables) तत्त्व है।

लग्न कुंडली व चंद्र कुंडली–चित्र–4 मे वृष राशि मे जनमे व्यक्ति की लग्न कुडली प्रदर्शित है। यह कुडली चित्र–3 के अनुसार पृथ्वी व अन्य ग्रहो की स्थिति प्रदर्शित करते हुए बनाई गई है। किसी व्यक्ति के सबध मे ज्योतिषीय अध्ययन के लिए जन्म कुंडली के अतिरिक्त चंद्र कुडली भी बनाई जाती है। उत्तर भारत मे बहुधा जन्म के समय पृथ्वी जिस राशि मे होती है उस राशि को उस व्यक्ति की **'लग्न राशि'** या सक्षेप मे केवल **'लग्न'** कहते है तथा जन्म के समय चद्रमा जिस राशि मे हो उसे **'चद्र राशि'** या सक्षेप मे केवल **'राशि'** कहते हैं किसी व्यक्ति की चद्र कुंडली बनाने के लिए उसकी लग्न कुडली मे चंद्रमा जिस राशि मे हो उस राशि को हम प्रथम भाव मे लिख देते है तथा उसके आगे की राशियॉ द्वितीय आदि भाव मे पूर्व मे दी गई विधि से ही लिखते है।

इसके बाद लग्न कुडली मे जो ग्रह जिस राशि मे है उसी राशि मे वह ग्रह लिख देते हैं उदाहरणार्थ चित्र 4 मे बनाई गई लग्न कुडली की चद्र कुडली चित्र–5 के अनुसार होगी। चित्र–4 मे चद्रमा राशि सख्या–3 (मिथुन) मे है। अत चित्र–5 मे प्रथम भाव मे 3 लिखा गया है तथा उसके बाद की राशियाँ द्वितीय, तृतीय आदि भाव मे लिखी गई है। जो ग्रह जिस राशि मे चित्र–4 मे है, वह उसी राशि मे चित्र–5 में लिखा गया है। यदि किसी व्यक्ति के जन्म के समय पृथ्वी व चद्रमा एक ही राशि मे हो तो उसकी लग्न कुडली के प्रथम भाव मे ही चद्रमा होगा। अत उसकी लग्न कुडली व चद्र कुडली एक समान होगी।

चित्र–4 के व्यक्ति की चंद्र कुडली

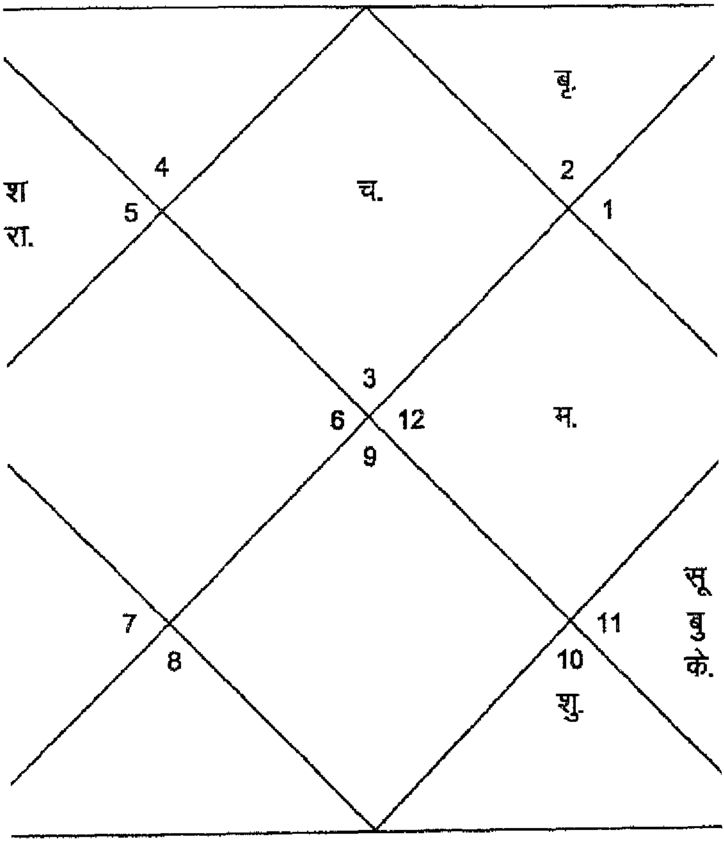

चित्र–5

नवाश कुडली नवाश कुडली एक प्रकार स लग्न कुडली को सूक्ष्मदर्शी यत्र से देखने के समान है। (यदि आप गणित के विद्यार्थी नही रहे है तो प्रारभिक अध्ययन मे नवाश गणना को सरसरी रूप से पढकर छोड सकते है तथा अत मे दी गई तालिका से नवाश बिना गणना किए लिख सकते है। गणना का यह अश इस उद्देश्य से दिया जा रहा है कि आप यह समझ सके कि नवाश वास्तव मे एक गणना के फलस्वरूप प्राप्त होता है तथा यह कोई काल्पनिक अश नही है।) यदि हम प्रत्येक राशि को नौ बराबर हिस्से मे बॉटे तो प्रत्येक छोटा हिस्सा $30^0 \div 9 = 3^0 20'$ (तीन डिग्री बीस मिनट) का होगा। यहॉ यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक डिग्री (अश) मे 60 मिनट माना जाता है। परतु नवाशो के स्वामी का क्रम राशियो के स्वामी के क्रम से ही चलता है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है—

नवाश	राशि स्वामी	नवांश	राशि स्वामी
1	1	11	11
2	2	12	12
3	3	13	1
4	4	14	2
5	5	15	3
6	6	16	4
7	7	17	5
8	8	18	6
9	9	↓	↓
10	10		

उक्त के क्रम मे पच्चीसवीं नवाश मे राशि स्वामी पुन 1 (मगल) आ जाएगा। यद्यपि नवाश की गणना जटिल है तथा कप्यूटर द्वारा आसानी से इसे बनाया जाने लगा है, तथापि इस लेखक को ईश्वर की कृपा से इसकी गणना की एक सरल विधि प्राप्त हुई है, जिसके

द्वारा कुछ क्षणो मे ही लग्न व ग्रहो की डिग्री (अश) से उसके नवाश की गणना की जा सकती है

उदाहरणार्थ--यदि किसी ग्रह की स्थिति 9-12^0-35' (अर्थात् नौवी राशि के बाद मकर राशि मे 12^0 35') है तो हम पूर्ण राशि सख्या मे 9 का गुणा करेगे तथा शेष डिग्री अंश को प्रत्येक नवाश 3^0 20 का मानते हुए उस भाग की नवाश सख्या ज्ञात करेगे और उसके उपरात दोनो सख्याओ का योग करेगे।

उपर्युक्त उदाहरण से–

$9 \times 9 = 81$

12^0 35′ में प्रत्येक नवाश 3^0 20 मानते हुए यह चौथा नवाश आएगा।

अत प्राप्त सख्या $81 + 4 = 85$

अब उपर्युक्त प्राप्त सख्या मे 12 का भाग देने पर जो सख्या शेष होगी, वही नवाश होगा। अत 85 मे 12 का भाग देने पर क्योकि शेष 1 बचता है, अत उपर्युक्त नक्षत्र, जो 9-12^0-35′ की स्थिति पर है, का नवाश 1 होगा, परंतु यदि शेष शून्य है तो नवाश 12 माना जाएगा।

नवाश गणना को पूर्णत स्पष्ट करने के लिए यदि चित्र–3 मे दिखाए गए ग्रहो की स्थिति डिग्री अश सहित निम्नानुसार हो तो उसकी नवाश गणना करके स्थिति स्पष्ट की जा रही है। लग्न या ग्रह की स्पष्ट स्थिति के लिए जो तीन मान लिखे जा रहे है, उनमे बाई ओर सबसे पहले पूर्ण हो चुकी राशि लिखते हैं, उसके बाद पूर्ण डिग्री तथा अत मे मिनट लिखा जाता है। चित्र–3 व 4 मे चंद्र मिथुन (3) में है, यदि मिथुन मं 10^0 25′ पर है तो हम 2-10^0-25' लिखेगे (यदि पूर्ण राशि के अनुसार न लिखकर वास्तव मे केवल डिग्री अश लिखना चाहे तो 70^0 25′ होगा, क्योंकि वृष राशि पूर्ण होने पर 60^0 पूर्ण होगी; परंतु सामान्यत 70^0 25′ के स्थान पर 2-10^0 15′ ही लिखने की परपरा है)

चित्र–3 व 4 की कुंडली की नवांश गणना

लग्न/ग्रह	डिग्री अंश स्थिति	नवाश गणना
लग्न	$1\text{-}19^{0}\text{-}26$	$\frac{(1 \times 9) + 19^{0}\text{-}26' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(9 + 6)}{12}$ शेष 3
बृहस्पति	$1\text{-}22^{0}\text{-}35$	$\frac{(1 \times 9) + 22^{0}\text{-}35' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(9 + 7)}{12}$ शेष 4
चद्र	$2\text{-}16^{0}\text{-}50$	$\frac{(2 \times 9) + 16^{0}\text{-}50' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(18 + 6)}{12}$ शेष 0 अत 12
शनि	$4\text{-}3^{0}\text{-}10$	$\frac{(2 \times 9) + 3^{0}\text{-}10' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(36 + 1)}{12}$ शेष 1
राहु	$4\text{-}27^{0}\text{-}55$	$\frac{(4 \times 9) + 27^{0}\text{-}55' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(36 + 9)}{12}$ शेष 9
शुक्र	$9\text{-}13^{0}\text{-}25$	$\frac{(9 \times 9) + 13^{0}\text{-}25' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(81 + 4)}{12}$ शेष 1
सूर्य	$10\text{-}17^{0}\text{-}19$	$\frac{(10 \times 9) + 17^{0}\text{-}19' \text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(90 + 6)}{12}$ शेष 0

0 ?) 59	10 × 9) + 29 59 का नवाश / 12 = (90 + 9) / 12 शेष 3	3
$10\text{-}27^{0}\text{-}55'$	$\frac{(10 \times 9) + 27^{0}\text{-}55'\text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(90 + 9)}{12}$ शेष 3	3
$11\text{-}26^{0}\text{-}47'$	$\frac{(11 \times 9) + 26^{0}\text{-}47'\text{ का नवाश}}{12}$ $= \frac{(99 + 9)}{12}$ शेष 0 अत 12	12

त नवाश गणना के बाद नवाश कुडली बनाते समय ा लग्न का नवाश अर्थात् 3 (मिथुन) राशि लिखा जाएगा। त पूर्व की भॉति राशियॉ द्वितीय, तृतीय भावों मे घडी की दिशा मे चलते हुए लिखी जाएगी। इसके पश्चात् नवाश ग्रह उनकी नवाश सख्या के अनुसार लिखे जाऍगे। –बृहस्पति 4 मे, चद्र 12 मे आदि। इस प्रकार चित्र–6 के ाश कुडली बन जाएगी।

एक चित्र–3, 4, 5 व 6 एक ही व्यक्ति के जन्म के अलग–अलग रूप मे प्रदर्शित करते है। चित्र–3 मे जन्म थ्वी के परिपथ में पृथ्वी व अन्य ग्रहो का सीमाकन किया चित्र–4 मे यही स्थिति जन्म कुडली के रूप मे दिखाई जन्म की इसी स्थिति को चित्र–5 मे चंद्र कुडली व नवाश कुडली के रूप में प्रदर्शित किया गया है। विवेचना ग्न चद्र कुंडली व नवाश कुडली तीनो को देखकर ही रना उत्तम होता है।

त से यह स्पष्ट है कि सामान्यत मात्र जन्म कुडली को

न–सी
ी की।
स्त्र के
तथा
शास्त्र
य मे
सन्
एस
राज,

देखकर या मात्र राशि के आधार पर कुछ बातें बताकर दूसरो को प्रभावित करना मनोरजन का साधन मात्र है। इसी प्रकार नित्य प्रात समाचार–पत्र आदि मे केवल राशि के अनुसार फल देखकर प्रसन्न हो जाना भी आपका मनोविलास है। इस बात का वास्तविक ज्योतिष विज्ञान से कोई सबध नहीं है।

चित्र–4 के व्यक्ति की नवांश कुंडली

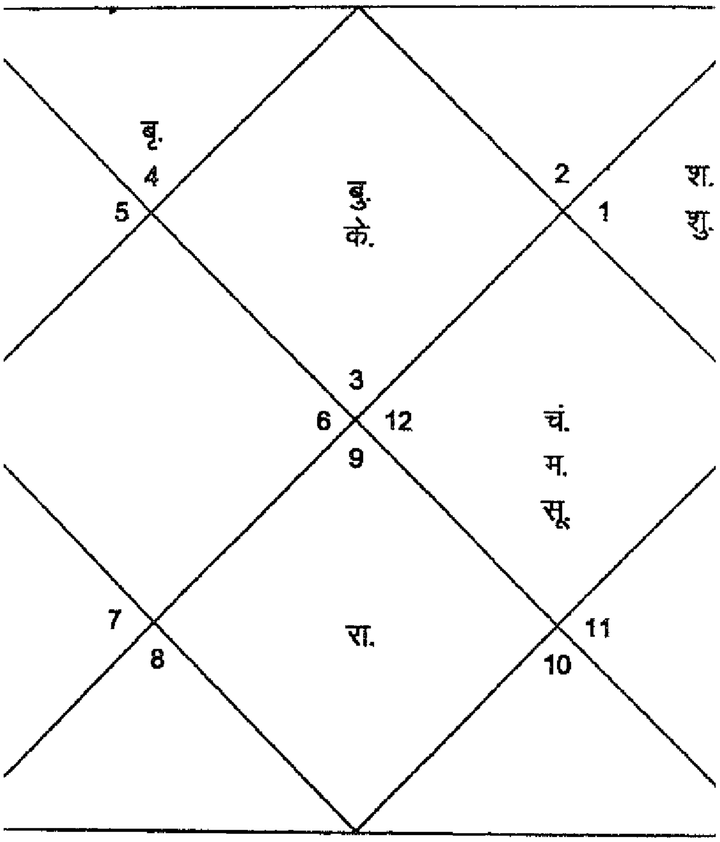

चित्र–6

उपर्युक्त विधि से आप नवांश की गणना स्वय कर सकते है, परन्तु जैसा प्रारंभ मे कहा गया है, यदि आप गणना नहीं करना चाहते हैं तो निम्नलिखित तालिका मे लग्न या नक्षत्र जिस राशि मे

पर है उसको देखते हुए नवाश देख सकते हैं
र की गणना हेतु दिए गए उदाहरण मे लग्न 1 19^0
ाशि मे 19^0-26 पर है तो निम्नलिखित तालिका से
त होगा, जैसा गणना से भी प्राप्त हुआ है। इसी
ना मे शनि 4-3^0-10′ का नवाश 1 ही है।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम	मीन
1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

था कोई ग्रह लग्न कुडली मे जिस राशि मे हो तथा
सी राशि मे हो तो उसे 'वर्गोत्तम' कहते है। वर्गोत्तम
लग्न या ग्रह को विशेष बल प्राप्त होता है। ऊपर
गए उदाहरण मे मगल 11-26^0-47′ पर है। अत
मगल बारहवी राशि, अर्थात् मीन मे है। मंगल की
र्गत् 11-26^0-47′ (मीन मे 26^0-47′) के नवाश की
भी 12 प्राप्त होता है। अत नवाश कुडली मे मगल
गया है, तथा लग्न कुडली व नवाश कुडली मे
ाशि मे होने के कारण इस उदाहरण मे मंगल की
है।

ज्योतिष—पद्धति मे नक्षत्र का भी विशेष महत्त्व माना

गया है। पृथ्वी के कुल 360° के परिपथ को नक्षत्रो के लिए कुल 27 भागो मे बॉटा गया है (वैसे ही जैसे राशियो के लिए इसे 12 भागो मे बॉटा गया है)। अत प्रत्येक नक्षत्र 360/27=13° 20′ का होगा। इसके उपरात भी नक्षत्र को चार चरणो मे बॉटा गया है। प्रत्येक चरण 13° 20/4=3° 20′ का होगा। ज्योतिष विज्ञान मे किसी व्यक्ति के जन्म का नक्षत्र वह नक्षत्र होगा। जिसमे उसके जन्म के समय चद्रमा स्थित था, अर्थात् जन्म के समय चद्रमा की राशि डिग्री मिनट से उसका नक्षत्र ज्ञात कर सकते हैं, गणना हेतु ऊपर उदाहरण दिया गया है। उसमे चद्रमा 2-16° -50′ है। अत नीचे दी गई तालिका से उसका नक्षत्र आर्द्रा होगा। प्रत्येक नक्षत्र को 3° 20 के चार भागों में बॉटकर उस नक्षत्र को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण के अनुसार लिख सकते है। ऊपर दिए गए उदाहरण मे चंद्रमा 2-16° -50′ होने के कारण आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होगा, क्योकि आर्द्रा नक्षत्र 2-6°-40′ से 2-20° -0′ तक है। इसका प्रथम चरण 6°-40′ से 10°, द्वितीय चरण 10° से 13°-20′, तृतीय चरण 13° -20′ से 16°-40′ तथा चतुर्थ चरण 16°-40′ से 20° तक होगा।

क्र.स.	चद्रमा की स्थिति (राशि–डिग्री–मिनट)				नक्षत्र
1.	0-0-0'	से	0-13°-20	तक	अश्विनी
2	0-13°-20	से	0-26°-40′	तक	भरणी
3	0-26°-24′	से	1-10°-0′	तक	कृत्तिका
4	1-10°-0	से	1-23°-20′	तक	रोहिणी
5	1-23°-20	से	2-6°-40	तक	मृगशिरा
6	2-6°-40′	से	2-20°-0′	तक	आर्द्रा
7	2-20°-0′	से	3-3°-20′	तक	पुनर्वसु
8.	3-3°-20	से	3-16°-40′	तक	पुष्य
9.	3-16°-40′	से	4-0°-0	तक	आश्लेषा

4 0' 0	स	4 3^0 20	तक	मघा
4 13 0	स	4 26 24	तक	पूर्वा फाल्गुनी
4-26-24	से	5-10^0-0	तक	उत्तरा–फाल्गुनी
5-10^0-0	से	5-23^0-20	तक	हस्त
5-23^0-20	से	6-6^0-40	तक	चित्रा
6-6^0-40	से	6-20^0-0'	तक	स्वाती
6-20^0-0'	से	7-3^0-20	तक	विशाखा
7-3^0-20'	से	7-16^0-40'	तक	अनुराधा
7-16^0-40	से	8-0^0-0	तक	ज्येष्ठा
8-0^0-0	से	8-13^0-20'	तक	मूल
8-13^0-20	से	8-26^0-40'	तक	पूर्वाषाढ
8-26^0-40'	से	9-10^0-0	तक	उत्तराषाढ
9-10^0-0	से	9-23^0-20'	तक	श्रवण
9-23^0-20	से	10-6^0-40'	तक	धनिष्ठा
10-6^0-40	से	10-20^0-0	तक	शतभिष
10-20^0-0	से	11-3^0-20'	तक	पूर्वा–भाद्रपद
11-3^0-20'	से	11-16^0-40	तक	उत्तरा–भाद्रपद
41-16^0-40'	से	0-0^0-0'	तक	रेवती

ा व अंतर्दशा

ोतिष विज्ञान मे यह परिकल्पना की गई है कि प्रत्येक समय ख ग्रहो में से किसी एक ग्रह का अधिक प्रभाव होता है, उस ग्रह की महादशा चल रही होती है। महादशा की गणना न्म के समय चंद्रमा के डिग्री अश के समकक्ष Table of eris मे दी गई तालिका की सहायता से सरलता से किया जा है। प्रत्येक ग्रह की महादशा जिस क्रम से जितने वर्षो तक है वह निम्नानुसार है—

क्र सं.	ग्रह	महादशा की अवधि (वर्षों में)
1	केतु	7
2	शुक्र	20
3	सूर्य	6
4.	चद्र	10
5	मगल	7
6.	राहु	18
7	बृहस्पति	16
8	शनि	19
9	बुध	17

प्रत्येक ग्रह की महादशा मे सभी नौ ग्रहो की अतर्दशाएँ इसी अनुपात के समय के लिए चलती है। किसी भी व्यक्ति के लिए कोई विशेष ग्रह अच्छा या सामान्य जैसा होगा वैसे ही फल की आशा उस ग्रह की महादशा व अतर्दशा मे की जाएगी।

महादशा व अतर्दशा के समय की गणना जन्म के समय चद्रमा की स्थिति से की जाती है, अतः लग्न व चंद्रमा के डिग्री अशो की गणना में विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

ज्योतिष विज्ञान एक अथाह सागर की भॉति है। इस विज्ञान मे अध्ययन के जो मुख्य बिंदु हैं, उनपर ही इस अध्याय मे प्रकाश डाला गया है और आगे इस पुस्तक में इन बिदुओ पर ही पूरा विवरण देते हुए ज्योतिष विज्ञान का सामान्य ज्ञान पाठको को दिया जा रहा है। यदि पाठको को इस पुस्तक का अध्ययन करने के बाद इस विषय मे आगे रुचि उत्पन्न होती है तो वह ज्योतिष विज्ञान के किसी भी ग्रथ का अध्ययन करने योग्य ज्ञान इस पुस्तक से प्राप्त करने मे सक्षम होगा।

अध्याय–3

बारह राशियों के सामान्य गुण

जैसा पूर्व अध्याय मे उल्लेख किया गया है कि किसी व्यक्ति के सबध मे ज्योतिष फल बताने के लिए उसकी लग्न कुडली, चद्र कुडली एव नवांश कुडली मे विभिन्न भावो मे स्थित राशियो व ग्रहो को देखते हुए विचार करना होगा। अत यह आवश्यक है कि सभी राशियो, भावो व ग्रहो के सबध मे ज्ञान प्राप्त किया जाए, ताकि सपूर्ण स्थिति को देखकर निष्कर्ष निकाला जा सके, परतु आगे अध्ययन के पूर्व यह सावधान करना आवश्यक है कि मात्र राशियो के सामान्य गुण पढकर स्वय को ज्योतिषी न समझ ले। ज्योतिष विज्ञान एक गूढ विषय है। इस अध्याय मे राशियो के सामान्य गुण बताए जा रहे है, किसी व्यक्ति विशेष की जन्म कुडली मे यह राशि किस भाव मे है, उस भाव मे कौन सा ग्रह स्थित है, राशि का स्वामी किस भाव मे है तथा अन्य कौन से ग्रह इस भाव को देख रहे है— इन सभी बातों को विचार करने के बाद ही निष्कर्ष निकाला जाता है। अत मात्र इस अध्याय को पढकर किसी व्यक्ति के सबध मे कोई निष्कर्ष निकालने की त्रुटि न करे।

प्रत्येक राशि के गुणो का पृथक्–पृथक् अध्ययन करने के पूर्व राशियों के कुछ सामान्य गुणो को मोटे रूप से कुछ श्रेणियो मे विभाजित कर सक्षेप में हम समझ सकते है। राशियो का यह श्रेणीबद्ध

सक्षिप्त परिचय बाद मे राशियो के सभी गुणो के अध्ययन के समय सहायक होगा। इस श्रेणीबद्ध अध्ययन मे हमारे लिए राशियो क नामो के स्थान पर उनकी क्रम सख्या का प्रयोग हम करगे। जैसे–मेष के लिए 1, वृष के लिए 2 मीन के लिए 12।

राशियों के पुरुष व स्त्री गुण · राशियॉ क्रमश पुरुष व स्त्री गुणवाली होती है, अर्थात् **मेष (1) पुरुष गुण, वृष (2) स्त्री गुण, मिथुन (3) पुरुष गुण आदि।**

पुरुष गुण राशि : 1, 3, 5, 7, 9, 11

स्त्री गुण राशि · 2, 4, 6, 8, 10, 12

यहॉ यह तात्पर्य नही है कि विषम सख्याओवाली राशि मे पुरुष का ही गुण होगा अथवा सम सख्यावाली राशि में स्त्री का ही जन्म होगा। यहाँ अभिप्राय यह है कि विषम सख्यावाली राशि के व्यक्ति में पुरुषोचित गुण, अर्थात् साहस, पौरुष आदि होगा। यदि किसी स्त्री की राशि विषम है तो उसके व्यक्तित्व मे कुछ साहस का समावेश अवश्य होगा। इसके विपरीत यदि किसी पुरुष की राशि सम है तो उसका व्यक्तित्व कुछ रक्षात्मक होगा।

2. राशियों के अग्नि, पृथ्वी, वायु व जल गुण · राशियो मे क्रमश अग्नि, पृथ्वी, वायु व जल के गुण होते हैं, अर्थात् मेष (1) मे अग्नि गुण, वृष (2) मे पृथ्वी गुण, मिथुन (3) में वायु गुण व कर्क (4) में जल के गुण होते है। इसी प्रकार क्रम–संख्यावार आगे की राशियो मे ये चारो गुण पाए जाते हैं।

(1) अग्नि गुण राशि · 1, 5, 9

(2) पृथ्वी गुण राशि : 2, 6, 10

(3) वायु गुण राशि : 3, 7, 11

(4) जल गुण राशि : 4, 8, 12

राशि 1, 5, 9 के अग्नि गुण से तात्पर्य आक्रामक स्वभाव, स्वतत्र व साहसी व्यक्तित्व है। इन व्यक्तियों मे महत्त्वाकाक्षा, शक्ति

व आगे बढने के प्रयास के गुण देख जा सकते हैं

राशि 2 6 10 के पृथ्वी गुण से तात्पर्य व्यक्तित्व की गभीरता व स्थिरता है। ऐसे व्यक्ति बुरे समय के लिए अपने पास कुछ बचत करने व दूसरो को भोजन कराने की इच्छावाले होते है। इस राशि मे सतर्कता, आत्मरक्षा, आत्मकेंद्रित होना, व्यावहारिकता आदि गुण होगे।

राशि 3, 7, 11 के वायु गुण से तात्पर्य अस्थिरता, दूसरो से शीघ्र प्रभावित होना, सहृदयता, कल्पनाशीलता आदि है। वायु सगीत का सचालन करते है। अत इस राशि मे सगीत का प्रेम प्रमुख गुण है। ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व मे प्रसन्नता, तर्कशीलता, दूसरो के प्रति सद्व्यवहार आदि गुण भी होते है।

राशि 4, 8, 12 के जल तत्त्व का तात्पर्य जल के समान जिस पात्र (स्थान) मे है, उसके अनुसार अपने व्यक्तित्व को ढालने की प्रवृत्ति है। अत इस राशि मे आक्रामकता या अधिक महत्त्वाकाक्षा का अभाव होगा, परतु इस राशि मे सफल परामर्शदाता, साहित्यकार कलाकार, अध्यापक, अन्वेषक आदि के गुण होगे। जल मे भी सगीत की तरगे उठती है। अत सगीत प्रेम का गुण भी इन राशियो मे होगा।

3. राशियो के चर–अचर व द्विस्वभाव गुण · राशियाँ क्रमश· चर, अचर व द्विस्वभाव गुण रखती है, अर्थात् मेष (1) मे चर गुण, वृष (2) मे अचर गुण, मिथुन (3) मे द्विस्वभाव गुण और इसके बाद पुन क्रमश राशियों के चर, अचर व द्विस्वभाव गुण होते है।

चर स्वभाव राशि : 1, 4, 7, 10

अचर स्वभाव राशि · 2, 5, 8, 11

द्विस्वभाव राशि : 3, 6, 9, 12

मेष (1), कर्क (4), तुला (7) व मकर (10) राशियो के चर गुण से यह अभिप्राय है कि इन राशियो मे एक स्थान से दूसरे स्थान मे

जाने की यात्रा करने की तथा लगातार एक ही स्थान पर न बैठे रहने की इच्छा होती है। यह व्यक्ति अपेक्षाकृत खुले दिमागवाला तथा दूसरो के सुझाव पर ध्यान देनेवाला होता है। ऐसे व्यक्तियो मे उत्साह व आगे बढने की महत्त्वाकांक्षा होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इन राशियो के व्यक्ति के सिर, पेट व गुरदे संवेदनशील होते हैं।

वृष (2), सिंह (5), वृश्चिक (8) व कुंभ (11) के अचर स्वभाव से अभिप्राय यह है कि यह व्यक्ति आसानी से दूसरों के द्वारा प्रभावित नही होता है तथा दृढ प्रतिज्ञ होता है। यदि यह किसी कार्य को पूर्ण करने का निश्चय करता है तो उस कार्य के पूर्ण करने मे आनेवाली बाधाओ को दूर कर कार्य को पूर्ण करने का प्रयास करते है। ऐसे लोग व्यावहारिक होते है तथा लगातार बैठकर कार्य कर सकते है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इन व्यक्तियो के हृदय व श्वसन–तत्र सवेदनशील होते है।

मिथुन (3), कन्या (6), धनु (9) व मीन (12) के द्विस्वभाव गुण से अभिप्राय यह है कि इन राशियो मे चर व अचर दोनो स्वभाव सम्मिलित होते है। ये कभी चर स्वभाव व कभी अचर स्वभाव के अनुसार व्यवहार करते है अथवा एक समान व्यवहार करते है। इन व्यक्तियो मे अनिर्णय की स्थिति रहती है। ये शांतप्रिय व दूसरो के प्रति सहानुभूति रखनेवाले होते है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इन व्यक्तियो के फेफडे व नाडी–तंत्र संवेदनशील होते हैं।

स्वर व मूक राशियाँ : ध्वनि वायु माध्यम मे सबसे तीव्र गति से चलती है। मिथुन (3), तुला (7) व कुभ (11) वायु गुणोवाली राशियाँ है तथा द्वितीय भाव अन्य बातो के अतिरिक्त स्वर (आवाज) के सबध मे जानकारी देता है। अत द्वितीय भाव में मिथुन (3), तुला (7) या कुभ (11) राशि होने पर उस व्यक्ति का स्वर (आवाज) अच्छा होगा। वह अच्छा वक्ता या गायक हो सकता है। अत 3, 7 व 11 राशि को

'स्वर राशि' कहते है

जल माध्यम मे ध्वनि की गति कम होती है अत इस माध्यम मे स्वर (आवाज) सामान्य नही रहेगी, कुछ कुप्रभाव पडेगा। अत जल गुणवाली मीन राशियो, अर्थात् कर्क (4), वृश्चिक (8) व मीन (12) को 'मूक राशि' कहा जाता है। द्वितीय भाव में इन राशियो के होने पर तथा उसपर अशुभ ग्रह का कुप्रभाव होने पर स्वर (आवाज) सामान्य नही होगी। बहुत कुप्रभाव होने पर व्यक्ति मूक भी हो सकता है, परतु द्वितीय भाव मे यदि केवल मूक राशि है, उसपर अन्य कोई कुप्रभाव नही है तो स्वर प्रभावित नही होगा। यहॉ यह बात केवल उदाहरण के रूप मे ही दी जा रही है, कोई स्पष्ट निष्कर्ष तभी निकालना चाहिए जब ज्योतिष विज्ञान का सम्यक् ज्ञान भलीभॉति हो जाए। राशियों से परिचय कराने के लिए उनके कुछ सामान्य गुण ऊपर बताए गए है, अब निम्नलिखित विवरण मे सभी राशियो के गुणो का पृथक्–पृथक् विवरण विस्तृत रूप से दिया जा रहा है। यह विवरण शुद्ध राशियो के सबंध मे है। वास्तव मे जो गुण होगे, वे राशि स्वामी की स्थिति, ग्रहो की स्थिति आदि की पूर्ण स्थिति देखकर ही बताए जा सकते है।

1 **मेष :** मेष 0^0 से 30^0 के बीच स्थित प्रथम राशि है। इसका स्वामी मगल है तथा इस राशि मे सूर्य उच्च का व शनि नीच का होने का प्रभाव रखता है। मेष राशि मे स्थित चद्र व बृहस्पति मित्र–स्थान का लाभ पाते हैं। शुक्र, शनि सम स्थान में तथा बुध शत्रु स्थान की स्थिति प्राप्त करते है। अश्विनी व भरणी नक्षत्र के चारो चरण तथा कृत्तिका नक्षत्र का चतुर्थ चरण मेष राशि के अतर्गत आते है। यह राशि अग्नि गुण की प्रधानता, चर स्वभाव व पुरुषोचित चरित्र रखती है। इस राशि का चिह्न नर भेड है।

शारीरिक गठन : मध्यम ऊॅचाई, मजबूत मांसपेशीयुक्त चुस्त शरीर रग गुलाबीपन सहित गोरा। गरदन लंबी, सिर चौडा तथा चेहरा

ठोडी की ओर कम चौडा, नजर तीखी। सुदर दॉत व बडी ऑखे।

मनोवृत्ति · सदैव सक्रिय, महत्त्वाकाक्षी, साहसी व स्वतत्र विचार रखने वाला। दूसरो से मार्गदर्शन करवाने की रुचि नही हाती है।

सामान्य चरित्र प्रथम राशि व स्वामी मगल के प्रभाव से मेष राशि का व्यक्ति सदैव अन्य व्यक्तियो के बीच अग्रणी स्थान को पाने की इच्छा रखेगा। यह दूसरो के सुझावो पर शीघ्र प्रभावित नहीं होगा तथा अपने स्वतंत्र विचारो पर ही चलना चाहेगा। वैज्ञानिक विचारधारा व कार्य–प्रणाली, उद्यमी व महत्त्वाकाक्षी होना इनके गुण है। आत्मविश्वास व सकारात्मक विचार इनके चरित्र मे निखार लाते है। चर राशि होने के कारण जिस वस्तु या परिस्थिति को ये पसद नही करते है उसमे परिवर्तन करने मे इन्हें कोई अरुचि नही होगी, परतु यदि मेष राशि पर कोई ग्रह आदि का दुष्प्रभाव है तो मानसिक परेशानी या सिर मे चोट सभव है। मेष लग्न मे शनि या चद्रमा स्थित होने पर भी मानसिक स्थिति में दुष्प्रभाव सभावित है। बहुधा ऐसे व्यक्ति किसी समस्या पर गभीरतापूर्वक विचार किए बगैर कार्य करने की प्रवृत्ति के कारण परेशानी में आ जाते है। अत इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है।

सामान्यत इनका स्वास्थ्य सतोषजनक होगा, परतु दुर्घटना मे सिर मे चोट लगने की सभावना रहती है। यदि षष्ठम भाव कुप्रभावित है तो सिरदर्द व पाचन–तत्र सबधी रोग सभावित है।

मेष राशि के व्यक्ति मित्रो के प्रति सहृदय होते है। अत इनकी मित्र–मंडली बड़ी होती है। ये व्यक्ति परिवार के सदस्यो के प्रति लगाव रखते हैं तथा अपने घर के रख–रखाव के प्रति भी ध्यान देते है।

2. वृष : ज्योतिष चक्र की यह द्वितीय राशि है, जो 30^0 से 60^0 के बीच स्थित रहती है। यह राशि पृथ्वी गुण की प्रधानता, अचर स्वभाव व स्त्रियोचित चरित्र रखती है। इस राशि मे स्थित होने पर चद्रमा उच्च का होता है, सूर्य के लिए यह शत्रु स्थान है, बुध व शनि के लिए मित्र

स्थान तथा मगल व बृहस्पति के लिए सम स्थान है कृत्तिका नक्षत्र के द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारो चरण तथा मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम व द्वितीय चरण वृष राशि के अतर्गत आते है। इस राशि का स्वामी शुक्र है तथा कोई भी ग्रह वृष मे स्थित होने पर नीच नही होता है। इस राशि का चिह्न वृष (Bull) है।

शारीरिक गठन · मध्यम ऊँचाई, राशि के स्वामी शुक्र के कारण शरीर भारी, मोटापे की सभावना, चौडे कधे व मजबूत मासपेशियाँ। चेहरा व ऑखे सुदर, बडे कान।

मनोवृत्ति : हठ व घमड सहित महत्त्वाकाक्षा रखनेवाला, परतु साथ ही मित्रो व परिचितो के प्रति प्यार व सहृदयता की प्रवृत्ति। कभी–कभी अपनी बात पर अडियल रहने की प्रवृत्ति।

सामान्य चरित्र : पृथ्वी के गुण व अचर स्वभाव के कारण इस राशि मे धैर्य की प्रमुखता है तथा परिणाम के तत्काल आशा के बगैर धैर्यपूर्वक कार्य करने की क्षमता है, परंतु यदि इन्हें जानबूझकर उत्तेजित किया जाएगा तो अपने चिह्न वृष के समान प्रतिद्वद्वी से बदला लेने की भी इच्छा इनमे उत्पन्न हो जाती है। वृष के समान इनकी शारीरिक शक्ति पर्याप्त है। अत भले ही देखने मे इन व्यक्तियों में उतनी शारीरिक शक्ति प्रतीत न हो, परतु इनके शरीर मे गुप्त शारीरिक शक्ति अवश्य होती है। गुप्त शारीरिक शक्ति रोगो के प्रति प्रतिरोधक क्षमता भी देती है। अत सामान्यतः इन व्यक्तियो का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

शारीरिक सुख की इच्छा रखेगा तथा अच्छे भोजन व मिष्टान्न के प्रति रुचि रखेगा। आर्थिक स्थिति सुधारते रहने, अर्थात् धन कमाने की इच्छा रखेगा। साथ ही अपने सुख के कार्यो के लिए व्यय भी करेगा। यह अपने घर को व्यवस्थित व सुरुचिपूर्ण रखेगा तथा यदि पारिवारिक सदस्य इस कार्य में सहयोग नही करेंगे तो उनसे

स्वत सबध मे मधुरता नही रहेगी मित्रो के बीच बातचीत की विशेष रुचि रहेगी।

यद्यपि सामान्यत इसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है, परतु यदि यह अस्वस्थ होता है तो टॉन्सिल अथवा गले की अन्य बीमारी की अधिक आशंका रहेगी। चालीस वर्ष की आयु के बाद कब्ज व इससे सबंधित अन्य रोगो की सभावना रहती है।

3. मिथुन : ज्योतिष चक्र की यह तृतीय राशि है, जो 60^0 से 90^0 के बीच स्थित रहती है। यह राशि वायु गुण की प्रधान, द्विस्वभाव तथा पुरुष चरित्र–पूर्ण है। यह एक स्वर राशि है। इस राशि का स्वामी बुध है। अन्य कोई ग्रह इस राशि में स्थित होने पर उच्च या नीच का प्रभाव नहीं रखता है। बृहस्पति के लिए यह सम स्थान है, शनि व शुक्र के लिए मित्र स्थान तथा सूर्य, चंद्र व मगल के लिए यह शत्रु स्थान है, गदा लिये हुए पुरुष व वीणा ली हुई स्त्री की जोडी इस राशि का चिह्न है। मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय व चतुर्थ चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय व तृतीय चरण मिथुन राशि मे पडते है।

शारीरिक गठन : ऊॅचा व सीधा कद, लंबे हाथ तथा उभरी हुई नसे, पैरो का गठन अपेक्षाकृत कम मोटाईवाला। ऑखो मे हलका लाल या भूरा रग। गेहुँआ रग। नजर तीखी व नाक बडी।

मनोवृत्ति : निष्कपट, सरल व हाजिरजवाब। लेखन व अध्ययन के प्रति अभिरुचि। कभी–कभी अस्थिर चित्त, स्थिरता व धैर्य की कमी। परिवर्तन की प्रवृत्ति।

सामान्य चरित्र : सक्रिय तथा गणित, यात्रिकी, वैज्ञानिक विषयो के अध्ययन के प्रति अभिरुचि। किसी भी विषय पर पक्ष व विपक्ष मे तर्क देने की सामर्थ्य रहती है, परतु राशि का स्वामी वायु होने के कारण धैर्य व स्थिरता का अभाव है। अत. प्रबधक के कार्य को

कुशलता से करने मे कठिनाई आएगी यात्रा करने की इच्छा रहेगी द्विस्वभाव के कारण यह व्यक्ति एक समय मे एक से अधिक कार्य करने की प्रवृत्ति रखता है तथा नई परिस्थितियो मे आसानी से अपना स्थान बना लेते हैं। सामान्यत आवाज अच्छी व तेज होगी गायन मे भी रुचि होगी। राशि का स्वामी बुध होने के कारण बौद्धिक विषयो मे विशेष रुचि किसी भी नए विचार को स्वीकार करने मे तत्पर। अपनी हाजिरजवाबी के कारण समाज मे पहचाने जाएँगे। किसी कार्य को करते समय परिणाम की प्रतीक्षा के लिए धैर्य का अभाव रहता है तथा शीघ्र परिणाम जानने की उत्सुकता रहती है, जिसके कारण कार्य का सही प्रकार से किया जाना प्रभावित होता है। छोटे रास्ते से मजिल पर पहुँचने की कोशिश मे छोटे रास्ते की परेशानियों में फॅस सकते हैं।

धैर्य का अभाव तथा अनावश्यक चिंता मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा तथा इससे संबधित रोग की आशका रहेगी, परतु यदि मानसिक तनाव पर नियंत्रण रखे तो स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। बीमारी की दशा मे सर्दी, जुकाम, फेफडे के रोग होने की सभावना अधिक रहेगी।

4. कर्क : ज्योतिष चक्र की यह चतुर्थ राशि है, जो 90^0 से 120^0 के बीच स्थित होती है। इसका स्वभाव चर, जल व नारी चरित्रवाला होता है। यह मूक राशि है। कर्क राशि का स्वामी चद्रमा होता है। इस राशि मे स्थित होने पर बृहस्पति उच्च का प्रभाव रखता है, परतु मगल नीच का प्रभाव रखता है। सूर्य के लिए यह राशि मित्र स्थान है तथा बुध, शुक्र व शनि के लिए शत्रु स्थान है। पुनर्वसु नक्षत्र का अतिम चरण व पुष्य तथा आश्लेषा नक्षत्र के चारो चरण इस राशि के अतर्गत आते हैं। इस राशि का चिह्न 'केकडा' है।

शारीरिक गठन : मध्यम ऊँचाई, भरा हुआ चेहरा, आयु बढने के साथ–साथ तोद निकलने की सभावना। शरीर का ऊपरी भाग भारी व गढ़ा हुआ, परतु हाथ–पैर अपेक्षाकृत पतले। रग गोरा, सीना चौडा।

मनोवृत्ति अति सवेदनशील अन्वेषणशील धैर्य की कमी सगीत प्रेमी कल्पनाशील। मानसिकता मे समय–समय पर परिवर्तन, क्षणिक क्रोध आना। कभी अति साहसी, कभी साहस का अभाव।

सामान्य चरित्र · अति बुद्धिमान, मितव्ययी, परिश्रमी, मस्तिष्क मे सहज बोधशक्ति व किसी परिस्थिति को गहराई से समझने की क्षमता होगी। आमोद–प्रमोद व सगीत के प्रति रुचि। अपने परिजनो के प्रति विशेष लगाव व आत्मविश्वास। यह बातूनी, ईमानदार व अपनी बात पर दृढ़ होता है।

जल–प्रधान होने के कारण कर्क राशि के व्यक्ति को आसानी से प्रभावित किया जा सकता है। यह व्यक्ति किसी भी परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढालने की शक्ति रखता है। यह व्यक्ति कर्तव्यपरायण होता है तथा इसमे उत्तरदायित्व की भावना होती है। पुरानी घटनाओं को याद रखने की तथा बातचीत में इन घटनाओ को दोहराने की आदत इस आदमी में होती है। प्यार व न्यायपूर्ण व्यवहार व अतिथि–सत्कार इसके चरित्र की विशेषता है।

इस व्यक्ति का स्वास्थ्य बचपन व यौवनकाल मे अच्छा नही रहता है। सॉस व पाचनतत्र के रोग के प्रति इसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। अच्छे भोजन की ओर विशेष लगाव भी पाचन सबंधी रोग को दे सकता है। मदिरापान की प्रवृत्ति भी हो सकती है, जिसपर नियंत्रण की आवश्यकता है।

5. सिंह : यह ज्योतिष चक्र की पॉचवीं राशि है, जो 120^0 से 150^0 के बीच स्थित है। यह अग्नि, अचर व पुरुष चरित्र से युक्त है। इस राशि का स्वामी सूर्य है। अन्य कोई ग्रह इस राशि में उच्च या नीच का नही होता है। सिह राशि चंद्र, मंगल व बृहस्पति के लिए मित्र स्थान है तथा बुध, शुक्र व शनि के लिए शत्रु स्थान है। मघा व पूर्वा–फाल्गुनी नक्षत्रों के चारो चरण तथा उत्तरा–फाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण सिंह राशि के अंतर्गत पड़ता है। इस राशि का चिह्न भी

इसके नाम के अनुसार सिंह है

शारीरिक गठन : आकर्षक शरीर, मजबूत हड्डी, चौड़े कंधे, औसत ऊँचाई, शरीर के ऊपरी भाग का गठन अधिक आकर्षक। विचारशील मुखाकृति। गेहुँआ रंग। सामान्यतः इनका शरीर चुस्त रहता है।

मनोवृत्ति : साहित्य, कला या संगीत के प्रति लगाव, महत्त्वाकांक्षी तथा गर्मजोशी। प्रसन्नचित्त, सहृदय व स्थिर चित्त स्वभाव।

सामान्य चरित्र : सिंह के समान अन्य उपस्थित व्यक्तियों के बीच अपनी उपस्थिति को अनुभव कराने की इच्छा व महत्त्वाकांक्षा। दूसरों की कठिनाई में उन्हें सहायता देने की तथा अपनी मित्र–मंडली रखने की प्रवृत्ति। आत्मविश्वास, विश्वासपात्र तथा परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता। सदैव अध्ययन की प्रवृत्ति । सद्व्यवहार व संवेदनशील। क्षमाशीलता तथा दूसरों की गलतियों को भी भुला देनेवाला। सरल, न्यायपूर्ण व खुला व्यक्तित्व। कठिनाई के क्षणों में इसकी कार्यक्षमता विशेष रूप से सामने आती है। कला–साहित्य व संगीत के प्रति विशेष लगाव। दूसरों के विचार व सुझाव की ओर ध्यान न देने की प्रवृत्ति, जिसके कारण इन व्यक्तियों के संबंध अपने वरिष्ठ सहयोगियों व अधिकारियों से मधुर नहीं रहते है। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य संबंधी परेशानी पर विजय पाने की विशेष क्षमता इसमें रहती है, यद्यपि कुछ कष्ट में भी यह विशेष चिंतित होगा। सामान्यतः स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदि कुंडली में रोग संबंधी लक्षण होंगे तो हृदय रोग की आशंका रहेगी।

6 कन्या : ज्योतिष चक्र की छठी राशि कन्या 150^0 से 180^0 के बीच स्थित होती है। यह द्विस्वभाव युक्त पृथ्वी गुणवाली नारी राशि है। इस राशि का स्वामी बुध है तथा कन्या में स्थित बुध उच्च हो जाता है। शुक्र यद्यपि बुध के प्रति मित्र है, परंतु कन्या में स्थित शुक्र नीच

हो जाता है सूर्य चद्र मगल व बृहस्पति के लिए यह राशि श् स्थान है, केवल शनि के लिए यह राशि मित्र स्थान होती है उत्तरा–फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण, हस्त नक्षत्र के चारों चरण तथा चित्रा नक्षत्र के प्रथम व द्वितीय चरण इस राशि के अंतर्गत आते है। चित्रकारी किए हुए वस्त्र पहनकर धान को भूनती हुई कन्या इस राशि का चिह्न है।

शारीरिक गठन : औसत ऊँचाई, चौडा व उभरा हुआ माथा, सदैव सक्रिय पतली आवाज, सीधी लबी नाक, तीखी व गहराई से देखती हुई नजर, शारीरिक गठन सुडौल रहेगा।

मनोवृत्ति : भावुक, संवेदनशील तथा अध्ययन की प्रवृत्ति। आत्मविश्वास की कमी। सक्रिय मस्तिष्क, किसी कार्य को करने के लिए निर्धारित तरीके से करने की प्रवृत्ति, धैर्यशील, कला, साहित्य या सगीत के प्रति लगाव।

सामान्य चरित्र : अपनी बात संक्षेप में कहने की तथा दूसरों से भी सक्षेप में उनकी बात सुनने की प्रवृत्ति। किसी समस्या को गहराई से सोचकर व्यावहारिक तरीके से कार्य करेगे। अन्य व्यक्ति की गलती को शीघ्र पकड सकते है। अत ये व्यक्ति ऑडिटर के रूप में विशेष रूप से सफल होते हैं। बचपन से ही कन्या लग्न के बच्चे की प्रतिभा सामने आ जाती है। सतर्कता से कार्य करनेवाला। मुसीबत के समय के लिए धन बचाकर रखनेवाला। अत ऐसे व्यक्ति को कभी अचानक आर्थिक सकट का सामना नही करना पडता है। अपने कार्यालय या व्यवसाय सबंधी कागजात व्यवस्थित रूप से रखेंगे। विज्ञान व गणित सबधी विषयों मे विशेष रुचि। साथ ही कला, साहित्य व संगीत के प्रति प्रेम। ऐसे व्यक्ति के लिए अध्ययन का विषय विज्ञान या गणित उचित होगा। रुचि के रूप में कला व सगीत के लिए कुछ समय दे सकते हैं। ये व्यक्ति दूसरों की प्रतिभा

से शीघ्र प्रभावित हो जाते है परंतु अपने निजी निर्णय स्वविवेक से लेते हैं कन्या लग्न के व्यक्तियो की पाचन शक्ति अच्छी नहीं होती है और लीवर कमजोर रहता है।

7 तुला : ज्योतिष चक्र की सातवी राशि तुला 180^0 से 210^0 के बीच स्थित होती है। यह चर, प्रकृति, वायु गुण व पुरुष राशि है। इस राशि का स्वामी शुक्र है। इस राशि मे स्थित होने पर शनि उच्चं हो जाता है, परतु यदि सूर्य तुला राशि मे स्थित हो तो वह नीच हो जाता है। चद्रमा, मगल व बृहस्पति के लिए यह शत्रु राशि है। अत यह ग्रह तुला राशि मे स्थित होने पर दुर्बल हो जाता है। बुध के लिए यह मित्र स्थान है। अतः तुला राशि मे स्थित होने पर बुध सबल हो जाता है। इस राशि का चिह्न हाथ में वस्तुओ को तौलते हुए सीधी दडी की तुला लिये हुए मनुष्य है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय व चतुर्थ चरण, स्वाती नक्षत्र के चारो चरण तथा विशाखा नक्षत्र के प्रथम तीन चरण तुला राशि मे आते है।

शारीरिक गठन : सामान्य से कुछ लबा कद, रग साफ, चौडा चेहरा सुदर ऑखे, मधुर मुसकान। अधिक आयु में भी कम आयु के प्रतीत होते है। चौडा सीना, हाथ–पैर पतले, परतु सुदृढ।

मनोवृत्ति : आदर्शवादी, त्वरित बुद्धि, अपनी बात पर बल देनेवाले व सकारात्मक विचार। मानसिक सतुलन स्थिर व किसी से पूर्वागृहित न होने की प्रवृत्ति।

सामान्य चरित्र : न्यायपूर्ण दृष्टि, शांतिप्रिय स्वभाव। महत्त्वाकाक्षी, परतु व्यावहारिकता के स्थान पर आदर्शवादिता को महत्त्व देंगे। अपने विचार पर चलने के लिए दृढप्रतिज्ञ। इनके सबध में अन्य व्यक्ति क्या आलोचना कर रहे हैं, उसकी चिंता तुला लग्नवाले व्यक्ति नहीं करते हैं। राजनीतिक नेता या धर्मगुरु के रूप मे यह व्यक्ति जन सामान्य पर विशेष प्रभाव रख सकता है। यह व्यक्ति

स्वस्थ आलोचना पसद करता है परतु किसी विषय पर कटु बहस से बचता है। सगीत–प्रेमी व जीवन के प्रति प्रेम, सद्भाव रखेगा। मानव स्वभाव को समझ सकने की क्षमता। अन्य व्यक्तियो को कष्ट न पहुँचाने की इच्छा रखता है। अच्छे स्वच्छ कपडे व अच्छे रहन–सहन की इच्छा रखता है।

इन व्यक्तियो का स्वास्थ्य सामान्यत अच्छा रहता है, परतु यदि लग्न कुडली में विपरीत प्रभाव षष्ठम भाव मे है तो किडनी व जननेंद्रिय सबंधी बीमारी हो सकती है।

8. वृश्चिक : ज्योतिष चक्र की आठवी राशि वृश्चिक है। यह ज्योतिष चक्र मे 210^0 से 240^0 के बीच स्थित रहती है। यह अचर, प्रकृति, जल गुण व नारी राशि है। इसका स्वामी मगल है। कोई भी ग्रह इस राशि मे उच्चत्व प्राप्त नही करता है, परतु चद्रमा वृश्चिक मे स्थित होने पर नीच हो जाता है। सूर्य व बृहस्पति वृश्चिक राशि के स्वामी मगल के मित्र है। अत वृश्चिक राशि मे स्थित होने पर सूर्य व बृहस्पति बली हो जाते है। इसी प्रकार बुध, शुक्र व शनि के लिए मगल शत्रु है। अत वृश्चिक मे स्थित होने पर बुध, शुक्र व शनि दुर्बल हो जाते हैं। इस राशि का चिह्न वृश्चिक (बिच्छू) है। विशाखा नक्षत्र का चतुर्थ चरण एव अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्रो के चारो चरण वृश्चिक राशि के अंतर्गत आते है।

शारीरिक गठन : औसत से कुछ अधिक ऊँचाई, सुदर–सुगठित शरीर, लबे हाथ, चौडा माथा, छोटे व घुँघराले बाल, चौडी व मजबूत हड्डियॉ, प्रभावशाली व्यक्तित्त्व, बडी ऑखें।

मनोवृत्ति : प्रेरित करनेवाला व्यक्तित्व, अहकारपूर्ण, द्वेषपूर्ण व शत्रु को कष्ट पहुँचाने की इच्छा। कठिनाई में भी धैर्य से लक्ष्यपूर्ति का प्रयास रखना।

सामान्य चरित्र : उदार स्वभाव, अस्थिर मानसिकता तथा उत्तेजना

उत्पन्न करनेवाली परिस्थितियो की इच्छा रखना ऐसे व्यक्तियो को मदिरापान की आदत शीघ्र पड सकती है उद्यमी स्वभाव स्वतन्त्र विचार तथा बुद्धिमान। मितव्ययी, परिस्थिति का सहज ज्ञान। अत डॉक्टर होने की दशा मे रोग की पहचान शीघ्र कर सकते हैं। अहित करनेवाले से बदला लेने की इच्छा हमेशा रहेगी। स्पष्ट पसंदगी व नापसदगी। कला व सगीत के प्रति प्रेम, दूसरो की आलोचना करने की प्रवृत्ति, कुशल वक्ता व लेखक।

वृश्चिक राशि के व्यक्ति को मदिरापान व अन्य मादक पदार्थो के सेवन से बचना चाहिए। इन व्यक्तियो को बवासीर की बीमारी होने की आशका रहती है।

9. धनु : ज्योतिष चक्र की नौवी राशि धनु ज्योतिष चक्र मे 240^0 से 270^0 के बीच स्थित रहती है। यह द्विस्वभाव, अग्नि गुणवाली व पुरुष राशि है। इस राशि का स्वामी बृहस्पति है। कोई भी ग्रह धनु राशि मे उच्चत्व या नीचता नही प्राप्त करता है। सूर्य, चद्रमा व मगल धनु मे स्थित होने पर मित्र स्थान का लाभ प्राप्त करते हैं, परतु बुध, शुक्र व शनि के लिए बृहस्पति शत्रु है। अत बुध, शुक्र व शनि धनु राशि मे स्थित होने पर शत्रु स्थान की स्थिति पाते हैं।

मूल व पूर्वाषाढ नक्षत्रों के चारो चरण तथा उत्तराषाढ नक्षत्र का प्रथम चरण धनु राशि मे स्थित होता है। धनु राशि का चिह्न घोडे के ऊपरी भाग पर धनुष–बाण लिये हुए मनुष्य के शरीर का ऊपरी भाग है।

शारीरिक गठन : गोरा रग, औसत से कुछ अधिक लबाई, सुदर सुगठित शरीर, सुगठित दॉत व मधुर मुसकान, भूरापन लिये हुए बाल, उम्र के साथ शरीर मे मोटापा लेना।

मनोवृत्ति : साहसी व महत्त्वाकाक्षी, दार्शनिक व मानवीयतापूर्ण मनोवृत्ति, कठिन परिस्थिति मे भी गुण–दोष का विचार कर निर्णय लेने की क्षमता।

सामान्य चरित्र : अध्ययन की सदैव इच्छा, प्रथाओ व पुरानी मान्यताओ

के प्रति विश्वास, सवेदनशील व दूरदृष्टि रखनेवाला। स्पष्ट वक्ता, अपने विचार निस्सकोच दूसरो के समक्ष व्यक्त करेगा। किसी कार्य को प्रारभ करने के पूर्व गुण–दोष पर विचार करेगा। अत कार्य का प्रारभ भले ही विलब से हो, परतु कार्य पूर्ण करने मे सफलता मिलेगी। खेलकूद मे रुचि। आत्मविश्वास व न्यायपूर्ण व्यवहार, धर्म के प्रति श्रद्धा व ईश्वरीय सत्ता में विश्वास, अपने खान–पान के प्रति सचेत। बाहरी दिखावे मे विश्वास नहीं होगा।

कफ व श्वास सबधी रोग होने की आशका रहेगी। अधिक उम्र पर साइटिका व गठिया रोग हो सकता है।

10. मकर : ज्योतिष चक्र की दसवी राशि मकर 270^0 से 300^0 के बीच स्थित होती है। 270^0 की स्थिति पर सूर्य दक्षिण के दूरस्थ स्थान पर रहता है तथा इसके बाद उत्तर की ओर बढने लगता है। इसी कारण 270^0 की स्थिति पर सूर्य होने को 'मकर सक्रांति काल' भी कहते है। इस समय दक्षिणी ध्रुववासी के लिए आधा दिन बीत चुका होता है, जबकि उत्तरी ध्रुव के लिए यह मध्य रात्रि का समय होता है। मकर चर, पृथ्वी गुण व नारी चरित्रवाली राशि है। मकर राशि का स्वामी शनि है, मकर राशि में स्थित होने पर मगल उच्च का गुण प्राप्त कर लेता है; परतु बृहस्पति की स्थिति मकर मे नीच की हो जाती है। सूर्य व चद्रमा के लिए यह शत्रु स्थान है, परतु शुक्र व बुध के लिए यह मित्र स्थान है।

उत्तराषाढ का द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण, श्रवण नक्षत्र के चारो चरण तथा धनिष्ठा नक्षत्र का प्रथम व द्वितीय चरण मकर राशि के अतर्गत पडते हैं। इस राशि का चिह्न भी मकर है।

शारीरिक गठन : बचपन मे कमजोर शरीर, परतु पंद्रह–सोलह वर्ष की आयु मे शारीरिक स्वास्थ्य मे उल्लेखनीय सुधार। इसके बाद लबा व स्वस्थ शरीर। बडा सिर, चौडा चेहरा, बडी नाक, कडे बाल।

मनोवृत्ति सहानुभूति दयालुता व सह्रदयता से परिपूर्ण चालाक व दृढप्रतिज्ञ कार्य शीघ्र पूर्ण करने की इच्छा व साहस दुःख सुख को समभाव से सहन करने की शक्ति।

सामान्य चरित्र . किसी भी परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढालने की शक्ति। परिवार के रख–रखाव मे मितव्ययी नही होगे। किसी व्यक्ति से मित्रता करने के पूर्व समय लगेगा। बातूनी स्वभाव। शर्त, बाजी या जुआ मे धन गँवाने की अपेक्षा थोडी–थोड़ी बचत करके धन जोडने मे विश्वास। मकर राशि के पृथ्वी गुण के फलस्वरूप यह व्यक्ति सामान्यत: फिजूल खर्च नही करता है। यह सामान्यत. व्यवहार मे ईमानदार, हितैषी व विश्वसनीय होता है। किसी भी विपरीत परिस्थिति मे कार्य पूर्ण करने मे यह जुट जाता है, परतु यह व्यक्ति स्वय निराशावादी होता है, यद्यपि बाहरी व्यवहार से यह निराशावादी प्रतीत नही होता है।

निराशावादी सोच के कारण इन व्यक्तियो का पाचन तंत्र प्रभावित होता है। आयु बढने के साथ–साथ पाचन तत्र सबधी रोग हो सकते है। इसके अतिरिक्त पैर के बीच के भाग (परिया) मे दर्द व पैरो मे त्वचा सबंधी रोग भी हो सकते है।

11. **कुंभ :** ज्योतिष चक्र की ग्यारहवी राशि है, जो ज्योतिष चक्र मे 300^0 से 330^0 के बीच स्थित होती है। यह अचर, वायु गुण व पुरुष चरित्रवाली राशि है। मकर के ही समान इस राशि का स्वामी शनि है। अन्य कोई भी ग्रह कुभ राशि में स्थित होने पर उच्च या नीच नही होता है। बुध व शुक्र के लिए कुभ राशि मित्र है तथा सूर्य, चद्र, मगल व बृहस्पति के लिए कुंभ शत्रु स्थान है। धनिष्ठा नक्षत्र का तृतीय व चतुर्थ चरण, शतभिष नक्षत्र के चारों चरण तथा पूर्वा–भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय व तृतीय चरण कुभ राशि के अंतर्गत आते हैं।

कुंभ राशि का चिह्न 'घडा' है, जिसमें से पानी बाहर निकल रहा है। यह उल्लेखनीय है कि केवल कुंभ राशि का चिह्न ऐसा है, जिसमे

किसी जीव का शरीर प्रदर्शित नहीं है।

शारीरिक गठन : बुद्धिमान, दूसरे व्यक्तियों के विचारो को समझने की क्षमता। अत: कुभ राशि के व्यक्ति को कोई व्यक्ति मीठी बातो से प्रभावित्त कर सकता है। अति सहानुभूतिपूर्ण व सहृदय व्यक्तित्व, दूसरो की सहायता के लिए सदैव तत्पर।

सामान्य चरित्र : दार्शनिक व्यक्तित्व इन व्यक्तियों को सफल अध्यापक या लेखक बना सकता है। यह अन्य व्यक्तियो के बीच घुलने-मिलने मे समय लगाता है, परंतु बाद में अच्छा मित्र बनाता है। मानवीय संवेदनाओं के प्रति सवेदनशील होने के कारण दूसरे व्यक्ति इनके बारे मे गलतफहमी रख सकते हैं। इन व्यक्तियों मे बातचीत करने की क्षमता होती है। सामान्यत शात स्वभाव होगा; परंतु यदि कोई इनकी भावनाओं को आहत करेगा तो ये तीव्र प्रतिरोध करेगे। पारिवारिक जीवन के प्रति समर्पित तथा अपने जीवन साथी को प्रसन्न रखने का प्रयास करेंगे। विभिन्न बिदुओं पर ये अपने स्वतत्र विचार रखेगे। यदि इन्हे नैतिक रूप से उचित प्रतीत होगा तो ये असामान्य व कुछ हद तक नियम-विरुद्ध विचार रखने में भी नहीं हिचकेंगे। रहन-सहन व कपडे पहनने के बारे मे भी ये व्यक्ति प्रथा या फैशन के विपरीत अपनी इच्छा व रुचि का प्रदर्शन करेंगे। इन व्यक्तियों में प्रत्यक्ष बोध-शक्ति होती है। अत. ये व्यक्ति सफल ज्योतिषी, चिकित्सक, सगीत-प्रेमी आदि हो सकते है।

इन व्यक्तियों को सर्दी से विशेष बचाव करना चाहिए। ठडक से होनेवाले रोगों की आशका इन्हें अधिक रहेगी। इन व्यक्तियो को थकान जल्दी होगी। अतः ये कडी शारीरिक मेहनत के योग्य नही है। चिता व थकान होने के कारण पाचन-तंत्र भी प्रभावित हो सकता है।

12. मीन : ज्योतिष चक्र की अंतिम बारहवी राशि ज्योतिष चक्र मे 330^0 से 360^0 के बीच स्थित रहती है। मीन राशि के अतिम बिंदु

360^0 (मेष राशि का प्रारभ 0^0) पर सूर्य की स्थिति ठीक भूमध्य रेखा पर रहती है। मीन राशि का स्वामी बृहस्पति है। इस राशि में स्थित शुक्र उच्च हो जाता है, जबकि बुध की मीन राशि में स्थिति बुध को नीच बना देती है। सूर्य, चद्रमा व मगल के लिए मीन मित्र राशि है, परतु मेष राशि के व्यक्ति के लिए मीन में स्थित मगल मित्रवत् परिणाम नही देगा। शनि के लिए यह राशि शत्रु स्थान है। मीन राशि द्विस्वभाव, जल गुण व नारी चरित्र की राशि है। इस राशि मे पूर्वा–भाद्रपद नक्षत्र का चतुर्थ चरण, उत्तरा–भाद्रपद नक्षत्र के चारो चरण व रेवती नक्षत्र के चारो चरण स्थित होते हैं।

इस राशि का चिह्न विपरीत दिशा मे मुख की हुई दो मछलियाँ है।

शारीरिक गठन : सामान्य से कम ऊँचाई, परतु मोटापा लिये हुए शारीरिक गठन, बडी व उभरी हुई ऑखे, मुलायम बाल। हाथ–पैरो की लंबाई कम, परंतु मजबूत।

मनोवृत्ति : धार्मिक व दार्शनिक स्वभाव, दब्बू व्यक्तित्व, अपने सपनो मे खोए रहना, रोमास की कल्पना। अन्य व्यक्तियो से शीघ्र प्रभावित होगे।

सामान्य चरित्र : पुरानी रूढ़ि व प्रथाओ पर चलने मे विश्वास तथा रूढियों व प्रथाओ के प्रति डर। किसी समस्या पर गभीरता से विचार करने के पूर्व ही निर्णय पर पहुॅचने की आदत। धार्मिक क्रियाओ पर भी विश्वास। अहिंसा में विश्वास, दूसरो को किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहेगा। विचारो में स्थिरता न रहने के कारण व्यावहारिक जीवन में अधिक सफलता मिलने में कठिनाई। यह व्यक्ति अपनी आकांक्षा भी व्यक्त नही करता है तथा दूसरों पर निर्भर रहने में कोई हीन भावना अनुभव नही करता है। इतिहास व पौराणिक कथाओ के अध्ययन मे विशेष रुचि। आत्मविश्वास का अभाव तथा मितव्ययी।

मादक पेय पदार्थो के सेवन से बचे। एडी व पैर के रोग की आशका। पाचन–तंत्र संबंधी रोग भी हो सकते हैं। □

अध्याय–4

ग्रहों के सामान्य गुण

आत्मा रवि शीतकरो मनस्तु सत्वं कुजो भाषणमव्ज सूनु ।
वाचापतिज्ञनिसुखे मदश्च शुक्रो भवेदर्कसुतस्तु दुःखम् ।।

—अर्थात् सूर्य शरीर, चद्रमा मन, मंगल बल, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान एवं सुख, शुक्र काम व शनि दुःख—ऐसा ग्रहमय हमारा शरीर है।

उपर्युक्त श्लोक से यह सुस्पष्ट है कि जन्म के समय सूर्य, चद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि की स्थिति जन्म लेनेवाले मनुष्य के सपूर्ण शरीर को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त जैसा अध्याय 3 मे उल्लेख किया जा चुका है, उक्त 7 आकाशीय पिडों के अतिरिक्त राहु व केतु, जो वास्तव मे छाया ग्रह है, को भी सम्मिलित कर कुल नौ ग्रहो के प्रभाव का अध्ययन भारतीय ज्योतिष पद्धति मे किया जाता है। कुछ विद्वान् पश्चिमी पद्धति में यूरेनियस, नैप्च्यून व प्लूटो को भी जन्म कुडली मे सम्मिलित करते हैं, परंतु ये ग्रह अधिक दूरी व कम द्रव्यमान के होने के कारण इनका कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पडता है, अत. भारतीय पद्धति में उपर्युक्तानुसार नौ ग्रहो के ही प्रभाव का अध्ययन किया जाता रहा है। इस पुस्तक में भी भारतीय पद्धति के अनुसार उपर्युक्त नौ ग्रहों का ही वर्णन किया गया है।

सभी ग्रहो के सामान्य गुणो का पृथक–पृथक अध्ययन करने के पूर्व ग्रहो के पारस्परिक सबध के विषय मे कुछ बिदुओ पर जानकारी देना उपयोगी होगा अत जिस प्रकार अध्याय 4 मे राशियों के पृथक्–पृथक् वर्णन के पूर्व कुछ प्रारंभिक परिचय दिया गया है उसी प्रकार इस अध्याय मे ग्रहो के सबध मे कुछ जानकारी प्राप्त कर लेने से बाद में ग्रहों के पृथक्–पृथक् विवरण को समझने मे पाठकों को आसानी होगी।

ग्रहों की पारस्परिक मित्रता व शत्रुता : ग्रहो की पारस्परिक मित्रता या शत्रुता भी दो रूपो में होती है—प्रथम, नैसर्गिक मित्रता, अर्थात् ग्रहों के स्वभाव के अनुसार पारस्परिक मित्रता या शत्रुता तथा द्वितीय, किसी जन्म कुंडली मे ग्रहों की स्थिति के अनुसार तात्कालिक मित्रता या शत्रुता। जिन ग्रहों के बीच मित्रता या शत्रुता न होकर सामान्य संबंध रहता है, उसे **'सम'** संबंध कहते है।

नैसर्गिक या स्वाभाविक संबंध : ग्रहो के नैसर्गिक सबध इस तालिका मे प्रदर्शित किए जा रहे है–

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	च मं.बृ	बु.	शु शु.
चद्र	सू.बु.	म.बृ शु शु	×
मगल	सू.चं बृ.	शु श	बु.
बुध	सू.शु	मं बृ.श.	च
बृहस्पति	सू च मं	श.	बु शु
शुक्र	बु.शु.	म बृ.	सू चं.
शनि	बु.शु	बृ	सू.च म

तात्कालिक संबंध–ग्रहों के तात्कालिक सबंध किसी जन्म कुंडली में ग्रहों की विभिन्न भावों मे स्थिति के अनुसार स्थापित होते हैं।

तात्कालिक सबध निम्नलिखित सिद्धातो के अनुसार होते है

1. कोई ग्रह जिस भाव मे स्थित है, उस भाव को सम्मिलित करते हुए उससे द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, दशम, एकादश तथा द्वादश भाव मे जो ग्रह स्थित होते हैं, वे उस ग्रह के तात्कालिक मित्र होते है।
2 जो ग्रह एक ही भाव मे स्थित हो या परस्पर पचम–नवम भाव में, छठे–आठवें भाव मे या सातवे भाव मे स्थित होते हैं, वे तात्कालिक शत्रु होते हैं।

तात्कालिक संबध की स्थिति स्पष्ट करने के लिए अध्याय 3 के चित्र 4 में दी गई जन्म कुंडली के ग्रहो का तात्कालिक सबध उपर्युक्त सिद्धातो के सदर्भ मे आकलन करने पर निम्नलिखित तात्कालिक मैत्री–चक्र सामने आएगा–

ग्रह	मित्र	शत्रु
सूर्य	मं बृ शु	बु.च श
चंद्र	बृ.म श	सू बु श
मगल	बृ च सू बु शु	श
बुध	म.बृ शु	सू.चं श
बृहस्पति	च.श मं सू.बु	शु
शुक्र	मं सू.बु.	बृ चं.श
शनि	वृ च	म.सू.बु.शु

पंचधा मैत्री चक्र : नैसर्गिक व तात्कालिक सबधो को एक साथ विचारकर पचधा मैत्री चक्र की ही सहायता से हम यह निष्कर्ष प्राप्त करते हैं कि किसी विशेष जन्म कुडली में ग्रहो के वास्तविक संबध कैसे होंगे। पंचधा मैत्री चक्र बनाने के लिए निम्नलिखित पॉच सिद्धांत होते हैं–

1. जो ग्रह नैसर्गिक रूप से तथा तात्कालिक रूप से भी मित्र हैं,

मत्र अत्यत मित्र) होगे
नैसर्गिक रूप से तथा तात्कालिक रूप से भी शत्रु है, शत्रु (अत्यत शत्रु) होगे।
नैसर्गिक व तात्कालिक मे से एक स्थान पर मित्र व स्थान पर शत्रु है, वे परस्पर 'सम' (न शत्रु, न मित्र) सबध

नैसर्गिक व तात्कालिक मे से एक स्थान पर मित्र व स्थान पर 'सम' है, वे अतिम रूप से मित्र ही होगे।
नैसर्गिक व तात्कालिक मे से एक स्थान पर शत्रु व स्थान पर 'सम' है, वे अतिम रूप से परस्पर शत्रु होगे।
सिद्धातो के सदर्भ मे अध्याय 3 के चित्र 4 की जन्म पचधा मैत्री--चक्र इस प्रकार से होगा।

. के चित्र 4 की जन्म कुडली का पंचधा मैत्री–चक्र

अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
म बृ	—	च शु	बु	श
—	बृ मं श	सू ब	शु	—
सू च बृ	शु	बु	श	—
शु	म बृ	सू	श	च
सू च म	श	बु	—	शु
बु.	मं	सू श	बृ	च
—	बृ	बु शु.च.	—	सू.म

-चक्र का महत्त्व : कोई भी ग्रह किसी जन्म कुडली मे राशि मे स्थित है अथवा मित्र या शत्रु के साथ स्थित है शत्रु की दृष्टि उसपर पड रही है, इसका महत्त्व हम एक उदाहरण से समझ सकते है। कोई सबल व्यक्ति भी यदि स्थान पर रह रहा है जो उसके शत्रु का घर है तो वह

सी
की।
। के
तथा
स्त्र
मे
सन्
,स
ज,

सबल व्यक्ति भी स्वय को निर्बल महसूस करेगा। इसके विपरीत यदि कोई दुर्बल व्यक्ति भी किसी मित्र के घर रुका हुआ है तो स्वाभाविक है कि वह दुर्बल व्यक्ति भी अपने को सबल महसूस करेगा। इसी प्रकार कोई ग्रह अपने अधिमित्र या मित्र ग्रह की राशि मे स्थित हो या अधिमित्र या मित्र ग्रह की दृष्टि उसपर हो तो वह ग्रह अधिक बल प्राप्त कर लेगा। इसके विपरीत शुभ ग्रह भी यदि अधिशत्रु या शत्रु ग्रह की राशि मे स्थित हो या अधिशत्रु ग्रह शत्रु ग्रह की दृष्टि उसपर पड रही हो तो शुभ ग्रह भी पूर्णत शुभ फल देने मे समर्थ नही रहेगा। इस संबंध में विस्तृत रूप से विचार जन्म तालिका के फल विवेचन संबधी अध्याय में किया जाएगा।

ग्रह राशि का उच्च–नीच व मूल त्रिकोण : ग्रह के मित्र, शत्रु आदि को राशि मे स्थित होने के अतिरिक्त ग्रह स्वभाववश किसी विशेष राशि मे विशेष बलशाली हो जाते हैं। इस स्थिति को ज्योतिष विज्ञान मे उस ग्रह को 'उच्च राशिगत' होना कहते हैं। कोई ग्रह जिस स्थिति में उच्च राशिगत होता है, उससे 180^0 की स्थिति मे नीच राशिगत होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह के लिए कोई विशेष राशि उसे मूल त्रिकोण राशि होती है। उच्च राशिगत होने पर ग्रह विशेष प्रभावी हो जाता है। इससे कम, परतु फिर भी पर्याप्त प्रभाव मूल त्रिकोण व स्वराशिगत ग्रह मे भी होता है। इसके विपरीत शुभ ग्रह भी नीच राशिगत होने पर अपना शुभ प्रभाव छोड देता है। विभिन्न ग्रह किन राशियों में उच्च राशिगत या नीच राशिगत होते हैं–यह निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट किया गया है। इस तालिका मे राशियो को उनकी क्रम सख्या से प्रदर्शित किया गया है।

ग्रहों की विभिन्न राशियों में विशेष स्थिति

ग्रह	स्वराशि	मूल त्रिकोण राशि	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	5	5	1	7
चंद्र	4	2	2	8

मगल	1 8	1	10	4
बुध	3 6	6	6	12
बृहस्पति	9 12	9	4	10
शुक्र	2,7	7	12	6
शनि	10,11	11	7	1

विद्वानो ने उपर्युक्त के अतिरिक्त ग्रह जिस राशि मे उच्च होते है, उसमे भी विशेष अश मे परम उच्च होना बतलाया है। परम उच्च अश से ठीक 180^0 की स्थिति पर ग्रह परम नीच की स्थिति प्राप्त कर लेता है। उदाहरणार्थ सूर्य मेष (1) राशि मे 10^0 पर परम उच्च होता है। अत. तुला (7) राशि में 10^0 पर परम नीच स्थिति प्राप्त करेगा। इसी प्रकार चद्र–वृष (2) मे 3^0 पर परम उच्च तथा वृश्चिक (8) मे 3^0 पर परम नीच होता है, मंगल–मकर (10) मे 28^0 पर परम उच्च तथा कर्क (4) में 28^0 पर परम नीच होता है, बुध–कन्या (6) मे 15^0 पर परम उच्च तथा मीन (12) में 15^0 पर. परम नीच होता है, बृहस्पति–कर्क (4) मे 5^0 पर परम उच्च तथा मकर (10) मे 5^0 पर परम नीच होता है, शुक्र–मीन (12) मे 27^0 पर परम उच्च तथा कन्या (6) मे 27^0 पर परम नीच होता है, शनि–तुला (7) मे 20^0 पर परम उच्च तथा मेष (1) में 20^0 पर परम नीच होता है।

ग्रहों का अस्त व उदित होना : हम जानते हैं कि सूर्य अत्यधिक ज्योतिष ऊर्जा रखता है। अत' विभिन्न ग्रह सूर्य के अति समीप होने पर उनका प्रभाव कुछ कम हो जाता है। किसी ग्रह के इस प्रकार आने की अवस्था मे यह कहा जाता है कि ग्रह अस्त हो गया है। सूर्य के समीप विभिन्न ग्रहों के आने पर अस्त होने के डिग्री अशमान विद्वानो द्वारा निर्धारित किए गए है। उदाहरणार्थ, चद्रमा सूर्य से 12^0 के दूर होने (अर्थात् चंद्रमा की स्थिति सूर्य से 12^0 पीछे या 12^0 आगे होने) पर चद्रमा को अस्त माना जाता है। इसी प्रकार मगल के अस्त होने की स्थिति सूर्य से 17^0 की दूरी पर होती है। बुध सूर्य से 14^0

की दूरी होने पर अस्त होता है। बृहस्पति सूर्य से 11^0 की दूरी होने पर अस्त होता है। शुक्र सूर्य से 10^0 की दूरी पर तथा शनि सूर्य से 15^0 की दूरी पर अस्त रहता है। जो ग्रह अस्त अवस्था मे नही है वह ग्रह 'उदित' कहलाता है।

ग्रहों की दृष्टि - ग्रह जिस स्थान पर (अर्थात् लग्न तालिका के जिस भाव मे स्थित रहता है, केवल उसी भाव पर अपना प्रभाव नही रखता है, उसके अतिरिक्त उसकी दृष्टि अन्य स्थान पर भी होती है। इस प्रकार ग्रह की दृष्टि जिस अन्य भाव पर होती है, उस भाव पर भी उस ग्रह का प्रभाव होता है। सामान्यत सभी ग्रह अपने ठीक सामने, अर्थात् 180^0 को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। 180^0 की दृष्टि से तात्पर्य है कि ग्रह जिस भाव में स्थित है उस भाव को सम्मिलित कर अपने सातवे भाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है। अत यदि कोई ग्रह प्रथम भाव मे स्थित है तो वह सातवे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह पॉचवे भाव मे स्थित है तो वह ग्यारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

उक्त सातवे भाव की दृष्टि के अतिरिक्त मगल, बृहस्पति तथा शनि कुछ अन्य भावो को भी पूर्ण दृष्टि से देखते है। विभिन्न ग्रह अपने से आगे जिन भावो को पूर्ण दृष्टि से देखते है वह इस तालिका मे वर्णित है–

सूर्य	पूर्ण दृष्टि से अपने आगे जिस भाव को देखते हैं
सूर्य	7
चद्र	7
मंगल	1,7,8
बुध	7
बृहस्पति	5,7,9
शुक्र	7
शनि	3,7,10

उपर्युक्त पूर्ण दृष्टि के अतिरिक्त प्राचीन ग्रंथो मे ग्रहो की आधी या चौथाई दृष्टि का भी उल्लेख किया गया है परतु ज्योतिष विज्ञान के सामान्य ज्ञान के लिए आधी या चौथाई दृष्टि का विचार किया जाना आवश्यक नहीं है।

शुभ, अशुभ तथा क्रूर ग्रह : उदित चंद्रमा, बुध बृहस्पति एव शुक्र को 'शुभ ग्रह' माना जाता है, अर्थात् ये ग्रह सामान्यत शुभ फल ही देते है। अस्त चंद्रमा, मगल व शनि अशुभ ग्रह होते है, जबकि सूर्य क्रूर ग्रह होता है। राहु व केतु भी सामान्यत अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यद्यपि राहु व केतु जिस भाव में स्थित होते है उस भाव के स्वामी के समान व्यवहार करते है, परतु इनका सामान्य चरित्र शनि के समान होता है। अत इन्हे 'अशुभ ग्रह' माना जाता है। अशुभ व क्रूर ग्रह स्वग्रही या उच्च न हो अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि इनपर पड रही हो तो ये ग्रह जिस भाव मे स्थित हैं, उसपर अपना अशुभ प्रभाव छोडते है। उदाहरणार्थ, प्रथम भाव में शनि यदि स्वगृही या उच्च का नही है तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि उसपर नहीं पड रही है तो जातक (जिसपर व्यक्ति की जन्म कुंडली का अध्ययन किया जा रहा है) के प्रथम भाव पर शनि के प्रभाव के कारण वह आलसी, विलब करनेवाला व श्याम वर्ण का होगा। इसी प्रकार किसी स्त्री के पंचम भाव में मगल (उपर्युक्त शुभ प्रभावरहित) स्थित होने पर उसका प्रथम प्रसव अत्यत कष्टप्रद होगा, जिसमें ऑपरेशन की आशका अधिक होगी।

ग्रहो के उपर्युक्त सामान्य गुणो के अध्ययन के उपरांत यह आवश्यक है कि सभी ग्रहों के व्यक्तिगत विशेष गुणो की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जाए। ग्रह जिस भाव मे स्थित होगे उस भाव पर अपने गुण का प्रभाव डालेगे, परतु जैसा पूर्व मे अनुरोध किया जा चुका है, किसी जन्म कुंडली का निष्कर्ष प्राप्त करने के पूर्व सभी भावो, ग्रहो व राशियों की स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है, केवल किसी एक भाव या किसी एक ग्रह की स्थिति के आधार पर

निष्कर्ष निकालना अनुचित होगा।

सूर्य : सूर्य समस्त सौरमडल का केंद्रबिंदु है। अत सूर्य को सभी ग्रहो का पिता समान कहा जाता है। ज्योतिष के अध्ययन के अतर्गत सभी नक्षत्रो मे सूर्य सबसे बड़ा है। सभी नक्षत्रो को यदि सम्मिलित कर ले तो उससे भी 750 गुना बड़ा पिता सूर्य है। सूर्य शुष्क, नर सत्त्वगुण–प्रधान, स्थिर स्वभाव व अग्नि के तेज से युक्त है। धातुओ मे स्वर्ण, पित्त दोष–प्रधान, अल्पकेश वस्न व चतुष्पाद पशुओ का स्वामी, शासक का प्रिय, पहाड व वन की यात्रा की इच्छा रखनेवाला, लाल रग, दैवी बुद्धि—ये सब सूर्य के गुण बताए गए हैं। सूर्य सिह राशि का स्वामी है तथा यह मेष राशि मे उच्चत्व व तुला राशि मे नीचत्व प्राप्त करता है।

शारीरिक गठन : सूर्य से प्रभावित शरीर (यदि लग्न या राशि सिह हो) सामान्यत सुदर, स्वस्थ और गठन, शहद के समान ऑखो तथा बडे सिरवाला होगा।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : सूर्य यदि बलवान् नही है तथा रोगकारक है तो हृदय व ऑख सबधी बीमारी की आशंका होगी। यदि सूर्य पर शनि का दुष्प्रभाव है तो कम रक्तचाप, यदि बृहस्पति का दुष्प्रभाव है तो उच्च रक्तचाप तथा यदि मंगल का दुष्प्रभाव तो रक्त–विकार की आशका होगी। पित्त–विकार सूर्य का प्रमुख चिह्न है।

सामान्य चरित्र : बलवान् सूर्य सत्ता या राजसुख का प्रमुख द्योतक है। प्रथम या दशम भाव मे बलवान् सूर्य निश्चित रूप से राजसुख प्रदान करता है। वर्तमान काल मे ऐसे व्यक्ति को राजकीय सेवा अवश्य प्राप्त होती है। राजकीय सेवा किस स्तर की होगी, यह बात जन्म कुडली के सपूर्ण अध्ययन से ही बताई जानी चाहिए। स्वस्थ सूर्य आत्मविश्वास, ईश्वर के प्रति आस्था व मानवीयता के गुण प्रदान करता है, परतु सूर्य अधिक परिश्रम के बावजूद कम आय का

ें। संकेत करता है

रत्न : सूर्य का रत्न माणिक (रूबी) है। प्रभावित व्यक्ति के द्वारा रविवार को माणिक जडित अँगूठी दाएँ हाथ की तीसरी उँगली मे धारण करना चाहिए।

विभिन्न भावो मे सूर्य की स्थिति का प्रभाव : विभिन्न भावो मे सूर्य की स्थिति का सामान्य प्रभाव निम्नानुसार (यह वर्णन केवल सूर्य की स्थिति के अनुसार है तथा किसी जन्म कुडली मे विवेचना सभी भावो, राशियो व ग्रहो की स्थिति का पूर्ण अध्ययन करने के उपरात ही करनी चाहिए) होता है–

प्रथम भाव मे स्थित सूर्य सबल नैतिकता, शुद्ध अत करण, प्रतिष्ठा की इच्छा, प्रसन्नचित्त व आशावादी, किसी स्थिति के गुण–दोष के अत्यधिक चितन से मस्तिष्क मे स्वय उलझन उत्पन्न कर देता है।

द्वितीय भाव मे स्थित सूर्य : अधिक परिश्रम से अल्प आयु, जिद्दी व ईर्ष्यालु स्वभाव अपने पुत्र के लिए भी यह स्थिति अच्छी नही है।

तृतीय भाव मे स्थित सूर्य साहसी, अच्छा वक्ता, सक्रिय मस्तिष्क, सत्कार्य की प्रवृत्ति, वाहन सुख।

चतुर्थ भाव में स्थित सूर्य : सुख की कमी व चिता मे वृद्धि, आर्थिक स्थिति के लिए भी प्रतिकूल, उत्तराधिकार मे कुछ संपत्ति मिल सकती है।

पंचम भाव में सूर्य : सतान, धन व प्रसन्नता मे कमी, स्त्री के पचम भाव मे सूर्य प्रथम प्रसव मे कठिनाई उत्पन्न करेगा। व्यर्थ की यात्राएँ। शिव भक्त।

षष्ठम भाव में सूर्य : प्रसन्नता, शत्रुओ पर विजय, राजनीति मे सफलता, राजकीय पद प्राप्ति की सभावना। लबी चलनेवाली, परतु

जीवन पर सकट न देनेवाली बीमारी, जैसे–चर्म रोग आदि।

सप्तम भाव मे सूर्य : कम मित्र, मित्रो के साथ सबधो मे कठिनाई, विवाह मे विलब या वैवाहिक जीवन मे कठिनाई, राजकीय सेवा या राजकीय समर्थन के लिए प्रतिकूल।

अष्टम भाव में सूर्य : कमजोर ऑख, अधिक शत्रु, क्रोध, आर्थिक स्थिति के प्रतिकूल। उच्च या स्वगृही सूर्य लंबी आयु देगा।

नवम भाव में सूर्य : उच्च, स्वगृही या शुभ स्थिति मे सूर्य धर्म पिता (व अन्य गुरुजन) के प्रति आस्था देगा, परंतु सूर्य की स्थिति कमजोर होने पर प्रतिकूल प्रभाव होगा।

दशम भाव में सूर्य : सूर्य की सर्वोत्तम स्थिति दशम भाव मे है। संगीत–प्रेमी, राजनीति मे सफलता या उच्च राजकीय पद की प्राप्ति, बुद्धिमान, धन–सुख, संपत्ति–प्राप्ति प्रमुख लक्षण है।

एकादश भाव में सूर्य : सौभाग्य का प्रतीक, उच्च राजकीय पद, सगीत–प्रेमी, सिद्धातो के प्रति दृढ, परिवार के लिए भी शुभ।

द्वादश भाव मे सूर्य : कमजोर ऑख, नैतिकता मे कमी, सफलता मे कमी, परतु परिश्रमी।

चंद्र

चंद्रमा पृथ्वी के सबसे समीप है। अत. पृथ्वी के सापेक्ष इसकी गति सर्वाधिक है। प्रत्येक चौबीस घंटे में चद्रमा सभी बारह राशियों की यात्रा पूर्ण कर लेता है, अर्थात् प्रतिदिन चद्रमा लगभग दो घंटे के लिए एक–एक राशि की यात्रा पूर्ण कर सभी बारह राशियों में रहता है। अत स्पष्ट है कि चंद्रमा का प्रभाव जीवन मे सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। चद्रमा मस्तिष्क (मनोदशा) को पूर्णतः प्रभावित करता है, अर्थात् चंद्रमा जिस भाव मे स्थित होगा उसी भाव के

कार्यों के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न करेगा चंद्रमा आर्द्र भूमिचारी तमयुक्त गौरवर्ण जलचारी सत्त्वगुण प्रधान कफ प्रधान रजत (चांदी) का स्वामी अत्यंत पुष्ट तरुण व लवण रस–प्रधान शुभ ग्रह है। कर्क राशि का स्वामी चंद होता है। चंद्र वृष राशि मे उच्च तथा वृश्चिक राशि मे नीच हो जाता है।

शारीरिक गठन . गौर वर्ण, स्थूल चौकोर शरीर, पुष्ट वक्षस्थल, उभरा हुआ उदर।

सामान्य चरित्र : चंद्रमा का सामान्य चरित्र परिवर्तनशील है। शुभ या अशुभ ग्रहों का दृष्टि से इसका चरित्र अत्यधिक प्रभावित होता है। यह जन–सामान्य का भी द्योतक है। यह जनप्रिय व्यक्तित्त्व देता है तथा अन्य ग्रहो आदि के अनुकूल होने पर राजनीति में सफलता देता है। सामान्यत जन–संपर्क मे सहायक चंद्रमा द्रवो का भी द्योतक है। अत. यह द्रव पदार्थो, यथा–तेल, दूध, इत्र आदि के व्यवसाय मे सहायक है। कल्पनाशीलता भी चंद्रमा का गुण है। अत काव्य–रचना, संगीत व कला मे भी सफलता देता है। चंद्र पर बुध की शुभ दृष्टि अच्छे कवि या लेखक को जन्म देगी, परंतु अशुभ पूर्ण स्थिति मे बुध की दृष्टि मानसिक अस्थिरता व असत्य बोलने का गुण देगी। चंद्र पर शुक्र की शुभ दृष्टि संगीत व कला के क्षेत्र में योगदान में सहायक है, परंतु यदि अशुभ दशा मे दृष्टि है तो कामुकता को जन्म देगी। इसी प्रकार मंगल की चंद्र पर शुभ दृष्टि जातक के व्यक्तित्त्व मे सहायक है तथा निर्भीक बनाता है, परंतु यदि मंगल की चंद्र पर अशुभ स्थिति में दृष्टि है तो निराशा तथा मानसिक उत्तेजना को जन्म देता है तथा स्त्रियो मे ऐसी अशुभ स्थिति मासिक धर्म व प्रसव मे कष्ट देता है। बृहस्पति की चंद्र पर शुभ दृष्टि अति उत्तम है। इससे मस्तिष्क लगनशील, धैर्यवान्, कल्पनाशील और आशावादी होता है, परंतु शुभ दृष्टि न होने पर अधैर्य व फिजूलखर्च बनाता है। चंद्र पर शनि की शुभ दृष्टि मस्तिष्क में स्थिरता, धैर्य

तथा व्यय मे सयम प्रदान करता है, पर शनि की चंद्र पर कुदृष्टि अत्यत अशुभ लक्षण है। इसके फलस्वरूप घोर निराशा व मिरगी की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। ऐसी दशा मे जातक अपने मस्तिष्क को अध्ययन मे भी ध्यानस्थ करने में सफल नहीं होगा।

रत्न

मोती चंद्र का प्रमुख रत्न है। अत. चदमा से पीडित व्यक्ति को सोमवार को मोतीजडित चॉदी की अँगूठी दाएँ हाथ की सबसे छोटी अँगुली मे पहननी चाहिए। लेखक का यह भी अनुभव रहा है कि चंद्रमा से पीडित व्यक्ति को पूर्णमासी की तिथि पर चॉदी की चद्रमा की आकृति काले धागे मे गले मे पहनना लाभप्रद होता है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : कमजोर शनि पर शनि व मगल का प्रभाव मस्तिष्क को निराशापूर्ण दशा देता है। मिरगी या दौरे पडने की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। छठे या ग्यारहवे भाव मे चद्रमा बचपन मे अस्वस्थता देता है तथा सर्दी, कफ, श्वास आदि के रोग देता है।

विभिन्न भावों में चंद्र की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में स्थित चंद्र : कलात्मक अभिरुचि, जनसामान्य में लोकप्रिय व्यक्तित्व, गभीरता का अभाव, यात्रा की रुचि। मेष तथा वृष के लिए विशेष शुभ।

द्वितीय भाव में स्थित चंद्र : शुभ चद्र की दशा मे आर्थिक स्थिति समृद्ध; परतु परिवर्तनशील गौर वर्ण, व्यक्तित्व अधिक मिलनसार नहीं होगा।

तृतीय भाव में स्थित चंद्र : व्यवसाय में परिवर्तन, विभिन्न यात्राएँ, ज्ञानवान्।

चतुर्थ भाव में चद्र : अचल सपत्ति तथा वाहन सुख, राजकीय शक्ति का समर्थन, स्वय के सुख व प्रसन्नता के कार्यो की इच्छा।

पंचम भाव में चद्र : सत्यवादी सुख व प्रसन्नता सतान के लिए शुभ, प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा मे अच्छा स्थान। अशुभ दृष्टि होने पर प्रतिकूल प्रभाव।

षष्ठम भाव में चंद्र : बचपन में अत्यत अस्वस्थ, सर्दी का प्रकोप, श्वास रोग।

सप्तम भाव में चंद्र : घमडी, सुदर पत्नी या पति, आर्थिक स्थिति के लिए अशुभ स्थिति।

अष्टम भाव में चंद्र : मानसिक स्थिति के लिए प्रतिकूल स्थिति, राजकीय शक्ति के समर्थन का अभाव, आर्थिक स्थिति के लिए प्रतिकूल।

नवम भाव में चंद्र : पिता के प्रति आदर व लगाव, धर्म व अध्यात्म मे रुचि, धार्मिक यात्राएँ, आर्थिक स्थिति के लिए शुभ स्थिति। अशुभ व कुदृष्टि पर प्रतिकूल परिणाम।

दशम भाव में चंद्र : सच्चरित्र, आर्थिक स्थिति सुदृढ़, राजकीय शक्ति का समर्थन या राजकीय सेवा, जन–समर्थन, जन–सपर्क या पत्रकारिता के प्रति अभिरुचि।

एकादश भाव मे चंद्र : सौभाग्यशाली, प्रसन्नपूर्ण, वाहन–सुख, बचपन में अस्वस्थ, व्यापार मे उन्नति, सुखी परिवार।

द्वादश भाव में चंद्र : अधिक व्यय, दृष्टि दोष, कफ संबंधी रोग, अनुदार हृदय, अभाग्यशाली स्थिति।

मंगल : सूर्य से पृथ्वी के बाहर की ओर मगल पृथ्वी का समीपस्थ ग्रह है। मगल सूर्य की परिक्रमा जिस परिपथ पर करता है, वह

पृथ्वी के परिपथ के बाहर होता है। मगल सूर्य के आस–पास 687 दिनो मे एक परिक्रमा पूर्ण करता है, अर्थात् मगल को सभी 12 राशियो मे एक बार की यात्रा पूर्ण करने मे 687 दिनो का समय लगता है। किसी एक राशि मे मंगल औसतन 57 दिनो तक रहता है। मगल पृथ्वी के समान ही अपने अक्ष पर गोल घूमता है तथा एक चक्कर घूमने मे 24 घटे 37 मिनट 23 सेकेड का समय लगाता है अर्थात् मगल में भी पृथ्वी के समान दिन–रात होते हैं; यद्यपि उसका समय पृथ्वी की अपेक्षा कुछ अधिक होता है। लाल रग का मंगल ग्रह स्वच्छ आकाश होने पर रात्रि मे स्पष्ट दिखाई देता है। मगल शुष्क, लाल व पुरुष ग्रह है। यह मेष राशि का स्वामी है। मकर राशि मे मंगल उच्च हो जाता है, जबकि कर्क राशि मे यह नीच हो जाता है। मगल ऊर्जा, शक्ति व शौर्य का प्रतीक है। अतः यदि मगल शुभ स्थिति में है तो आत्मविश्वास, साहस व सफलता मे सहायक होगा; परतु यदि इसकी स्थिति शुभ नही है तो यह प्रतिकूल प्रभाव देगा। इसीलिए मंगल को सामान्यत 'पाप–ग्रह' माना जाता है। मगल अचल सपत्ति तथा भाई का भी प्रतीक है।

विद्वान् कहते हैं कि मगल से इन बातों का विचार करे, शारीरिक व मानसिक शक्ति, पृथ्वी तल के नीचे से उत्पन्न होनेवाले खनिज पदार्थ, अग्नि, स्वर्ण, अस्त्र, उत्साह, रति, पाप–कार्य, घाव, चोट, लहू, सेनापति (पुलिस संहित) क्रोध आदि।

शारीरिक गठन : गुलाबीपन सहित गोरा रंग, स्वस्थ मासपेशी सहित लबा शरीर, गोल ऑखें, पतली कमर व मजबूत हड्डियाँ।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : अशुभ स्थिति में मंगल गंभीर दुर्घटना व रक्तस्राव का द्योतक है (प्रथम भाव मे होने पर सिर में चोट)। इसके अतिरिक्त द्वादश भाव में अशुभ स्थिति मे मगल उस व्यक्ति को निरुद्ध कर सकता है (चिकित्सालय या जेल–यात्रा अन्य ग्रह व राशि की स्थिति के अनुसार)। स्त्री के पंचम भाव मे मंगल प्रथम प्रसव मे पीड़ा,

रक्तस्राव (ऑपरेशन) को प्रदर्शित करता है।

सामान्य चरित्र : क्रोध, अविवेकपूर्ण जल्दबाजी, सैनिक या पुलिस बल का मुखिया–यह मगल का सामान्य चरित्र है। मगल का चरित्र व्यक्ति विशेष की जन्म कुडली के अनुसार ही बताना उचित होगा, क्योकि शुभ स्थिति होने पर क्रोध पर विवेक का नियत्रण होता है। इसके फलस्वरूप एक अच्छे शासक का निर्माण होगा। इसके विपरीत अशुभ दृष्टि होने पर वह व्यक्ति केवल क्रोध व शारीरिक दुर्घटनाओ मे ही फॅसा रहेगा। अत मगल के विषय मे कोई भी निर्णय सपूर्ण जन्म कुडली की स्थिति को देखने के बगैर नही किया जाना चाहिए।

रत्न : मगल का रत्न मूँगा है। मगलवार को प्रभावित व्यक्ति के द्वारा मूँगा जडित अँगूठी दाएँ हाथ की तीसरी अँगुली मे धारण करनी चाहिए।

विभिन्न भावों में मंगल की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में मगल : आत्मविश्वास, साहस, उद्यमी, हिसक, अविवेकपूर्ण, तेजी, सिर में चोट लगने की आशका।

द्वितीय भाव में मंगल : कडे परिश्रम से अच्छी आय, असहिष्णु, वार्त्तालाप मे पटु। दाई ऑख कमजोर।

तृतीय भाव में मंगल : भाई–बहनों के लिए अशुभ, दाऍ कान में कष्ट, साहसी, राजकीय सहायता।

चतुर्थ भाव में मंगल : मॉ के लिए अशुभ, वाहन व अचल संपत्ति से कठिनाई, राजनीति मे रुचि। स्वगृही व शुभ दृष्टिगत मगल होने पर अशुभ भाव कम होगा।

पंचम भाव में मंगल : कफ सबंधी कष्ट, पाचन मे कष्ट, स्त्री के पचम

भाव मे मगल प्रथम प्रसव मे अत्यत पीडा व रक्तस्राव (ऑपरेशन) का द्योतक है।

षष्ठम भाव मे मंगल . शत्रु पर विजय, अच्छा पाचन, दुर्घटना से शारीरिक कष्ट, राजनीति मे सफलता।

सप्तम भाव में मंगल : वैवाहिक जीवन मे कष्ट, शत्रु से कष्ट, बुद्धिमान, जिद्दी।

अष्टम भाव में मंगल : अशुभ स्थिति होने पर आयु में कमी, वैवाहिक जीवन में कष्ट, दुर्घटना की आशका।

नवम भाव में मंगल : प्रशासक, समृद्ध, क्रूर, हिंसक, परिवार के लिए शुभ।

दशम भाव में मंगल : सत्ता–सुख, कुशल व क्रूर प्रशासक, सुदृढ आर्थिक स्थिति, प्रशंसा सुनकर हर्षित होनेवाला।

एकादश भाव में मंगल : कठोर शासक, चतुर, लालची, अचल संपत्ति प्राप्त होना, वाहन सुख, राजकीय सहायता।

द्वादश भाव में मंगल : कमजोर ऑखें, अशुभ स्थिति होने पर निरुद्ध होने की आशंका (कारागार या अस्पताल में)।

बुध : सूर्य का सबसे निकटवर्ती ग्रह बुध है (बुध के बाद शुक्र व उसके बाद पृथ्वी का परिपथ होता है)। बुध की सूर्य से कोणीय दूरी 28 अश से अधिक नही होती है। अतः एक भाव में आगे कुडली मे बुध सूर्य के साथ या एक भाव पीछे या एक भाव आगे स्थित होगा, इससे अधिक दूरी पर नही होगा। बुध मुख्यत. बुद्धि का ग्रह है। गणितज्ञ, भौतिक विज्ञानी, इजीनियर आदि की जन्म कुडली में बुध की शुभ स्थिति अवश्य होगी। बुध का चरित्र परिवर्तनशील है। अत. शुभ ग्रहो के साथ स्थित होने पर बुध शुभ ग्रह का चरित्र रखता है।

पाप ग्रहो के साथ स्थित होने पर या कुदृष्टि होने पर बुध शुभ ग्रह का चरित्र नही रखता है बुध के शरीर की काति नवीन दूर्वा (चमकीला हरा रग) के समान होती है, बुध मे वात, पित्त व कफ त्रिदोषो का सम्मिश्रण होता है। यह रोगकारक भी होता है। बुध स्नायुमडल (नर्वस सिस्टम) से भी सबध रखता है। यह अति विद्वान, सत्यवादी, रजोगुण प्रधान व हास्यप्रिय है। बुध त्वचाप्रधान हे। मिथुन तथा कन्या राशि का स्वामी बुध है। बुध कन्या राशि में उच्च एव मीन राशि में नीच हो जाता है।

शारीरिक गठन : लबा, छरहरा शरीर, लबे हाथ, काले बाल, भाव प्रकट करती ऑखे, पतली आवाज, तेज चाल।

सामान्य चरित्र : बुद्धि का प्रतीक बुध शुभ दशा में होने पर व्यक्ति विद्वान्, बुद्धिमान, तार्किक व विश्लेषण-क्षमतावान् होगा। किसी भी विवाद-बिदु को वह शीघ्र स्पष्ट समझ सकता है। गणित के गूढ समीकरणो को शीघ्र समझ सकेगा, परतु अस्थिरतायुक्त होने के कारण वह एक कार्य को पूर्ण करने के पूर्व ही दूसरा कार्य शुरू कर देगा। बातचीत मे वह अपने दृष्टिकोण को दृढतापूर्वक रखना चाहेगा तथा दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास नहीं करेगा। कुछ हद तक व्यक्ति मुँहफट होगा। हाथ-पैरो पर नीली नसें स्पष्ट दिखाई देंगी। यह व्यक्ति सदैव सक्रिय होगा तथा थोडी दूरी की यात्राओं मे आनद लेगा। इसकी चाल तेज होगी।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : बुध में वात, पित्त व कफ-त्रिदोष होने के कारण तथा त्वचा का प्रतीक होने के कारण संबंधित रोगो का कारण भी है। षष्ठम भाव का बुध से संबध होने की दशा मे तथा बुध की महादशा या अंतर्दशा मे वात, पित्त व कफ संबंधी व त्वचा सबंधी रोग की आशंका रहेगी। आयु पूर्ण होने के पूर्व यह रोग लंबी चलनेवाली व कष्ट देनेवाली बीमारी के रूप मे होगा।

रत्न : बुध के कष्ट निवारण हेतु पन्ना रत्न (55 रत्ती से अधिक), दाएँ हाथ की छोटी अँगुली मे बुधवार को धारण करे।

विभिन्न भावों में बुध की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में बुध · नम्र, शातिप्रिय, हाजिरजवाब, बुद्धिमान, अध्ययन मे रुचि।

द्वितीय भाव मे बुध : धनार्जन की क्षमता, सुसस्कृत, धर्म व दर्शन शास्त्र मे रुचि, जनहित व शुभ कार्यो मे व्यय की रुचि।

तृतीय भाव में बुध : साहसी, चालाक, बुद्धिमान, अध्ययन मे रुचि, कार्य प्रारभ होने पर अंत तक पूर्ण करने का प्रयास, भाई–बहनो के लिए शुभ, मित्र व सबधियो का प्रिय।

चतुर्थ भाव मे बुध : कूटनीतिज्ञ, शासक की नीतियों का आलोचक, अचल सपत्ति व वाहन लाभ, सगीत व कला मे रुचि, समाज मे आदर, मॉ के प्रति प्रेम।

पंचम भाव में बुध : बुद्धिमान, गणितज्ञ या इजीनियर, क्रीडा मे रुचि, संतान व मित्रो से सुख ।

षष्ठम भाव में बुध : आलस्य, कई शत्रु, रोगकारक, शीघ्र उत्तेजना तथा पाप–ग्रहों की दृष्टि होने पर मानसिक असंतुलन।

सप्तम भाव में बुध : सद्‌गुणयुक्त, गणित व ज्योतिष मे विशेष रुचि, धार्मिक सद्‌गुणयुक्त पत्नी, पत्नी से आर्थिक स्थिति मे सहायता।

अष्टम भाव मे बुध : सद्‌गुणी, विनम्र, सुदृढ आर्थिक स्थिति, विद्वान्, राजकीय सहायता।

नवम भाव में बुध : उच्च शिक्षा मे विशेष योग्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विदेश यात्रा।

दशम भाव में बुध कई विषयो मे विद्वान सुसस्कृत राजकीय सेवा की सभावना सत्यवादी

एकादश भाव में बुध : सासारिक सुख की लिप्सा, सुदृढ आर्थिक स्थिति, अचल सपत्ति का सुख।

द्वादश भाव मे मगल · स्वार्थी, निर्दय, दुर्बल शरीर।

बृहस्पति बृहस्पति पृथ्वी के आकार से दस गुना बडा है तथा सूर्य से अत्यधिक दूरी पर स्थित है, फिर भी अपनी चमक के कारण यह अमावस्या की रात्रि मे आकाश मे नगी ऑखो से ही देखा जा सकता है। मगल व शुक्र के बाद यह सबसे चमकीला ग्रह है। अपने परिपथ मे सूर्य की एक परिक्रमा लगभग बारह वर्षो में पूर्ण करता है। आपको ज्ञात है कि सूर्य के आस–पास गोल परिपथ मे प्रत्येक 30 अंश की दूरी पर बारह राशियॉ मानी गई है। अत स्पष्ट है कि बृहस्पति एक राशि मे लगभग एक वर्ष के लिए रहता है। बृहस्पति ज्ञान का प्रतीक है। बृहस्पति के अन्य गुण है—न्यायप्रिय, अनुशासनप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, सत्यवादी, क्रीडा–प्रेमी, धार्मिक व दार्शनिक होना। यह लबोदर, कफ–प्रकृति, सत्त्वगुणी, प्रसन्न व गुणवान् है। धनु व मीन राशि का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति कर्क राशि मे उच्च तथा मकर राशि मे नीच हो जाता है।

शारीरिक गठन : सुगठित व स्थूल शरीर, पेट निकला हुआ, मजबूत हड्डी व मासपेशियॉ।

सामान्य चरित्र : अध्ययन व ज्ञानार्जनयुक्त यह ग्रह अत्यत शुभ है। बुध भी मूल रूप से शुभ ग्रह है। इसका चरित्र पाप ग्रह के साथ होने पर या पाप ग्रह की दृष्टि होने पर परिवर्तित हो जाता है, परतु बृहस्पति अपना शुभ चरित्र अशुभ ग्रहो की दृष्टि होने पर भी पूर्णत नही खोता है तथा अपनी शुभता कुछ–न–कुछ बनाए रखता है। यह परिश्रम से खेलनेवाले खेलों (आउटडोर गेम) मे रुचि रखता है। यह

न्याय प्रेमी व न्यायिक कार्यों को करनेवाला है तथा देवताओ का गुरु है। यह धर्म मे निष्ठा रखनेवाला तथा बड़ो का आदर करनेवाला है। यह राजकीय सहायता का भी द्योतक है। यह यात्रा–प्रेमी भी है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : स्वास्थ्य के लिए बृहस्पति प्रतिकूल होने पर यकृत (लीवर) सबधी रोग, पीलिया, हार्निया आदि की आशका रहती है।

रत्न : बृहस्पति का रत्न हलका पीला पुखराज है। प्रशासकीय कार्य के लिए पुखराज अत्यत सहायक है। 5 5 रत्ती से अधिक का पुखराज सोने की अँगूठी मे बृहस्पतिवार को तर्जनी उँगली मे पहनना चाहिए।

विभिन्न भावों में स्थित बृहस्पति का प्रभाव

प्रथम भाव में बृहस्पति : चुबकीय व्यक्तित्व, शोभावान्, सत्कर्म करनेवाला, ज्ञानी, प्रशासक, दूसरों की सहायता मे तत्पर।

द्वितीय भाव में बृहस्पति : सुदर, प्रसिद्ध, सुदृढ़ आर्थिक स्थिति, कुशल वक्ता व लेखक, उत्तम भोजन करनेवाला।

तृतीय भाव में बृहस्पति : दार्शनिक, भाई के प्रति विशेष प्रेम, कजूस, परिवार के प्रति प्यार मे कमी।

चतुर्थ भाव में बृहस्पति : सुख–समृद्धि, अचल सपत्ति, माता, पत्नी, संतान आदि का सुख प्राप्त होगा।

पंचम भाव में बृहस्पति : बुद्धिमान, शासक का मित्र या मंत्री, शिक्षा क्षेत्र मे अच्छे परिणाम, अच्छे मित्र, वाहन–सुख, सतान–सुख।

षष्ठम भाव में बृहस्पति : शत्रुओं पर विजय, आलसी, अनादर सहन करना पड़ सकता है, संगीत–प्रेमी।

सप्तम भाव में बृहस्पति : विनम्र, कवि–हृदय, सफल पारिवारिक जीवन, उदार, संतान–सुख।

अष्टम भाव में बृहस्पति दीर्घायु, कष्ट मे वृद्धि निम्न स्तर का कार्य करनेवाला आलसी समृद्धि की कमी

नवम भाव मे बृहस्पति : सुप्रसिद्ध विद्वान्, बड़ो का आदर करनेवाला, धार्मिक, शासक, शुभ कार्य मे तत्पर, अध्यापन हेतु विदेश–यात्रा।

दशम भाव में बृहस्पति : शासन में उच्च स्थान, अचल संपत्ति तथा वाहन का सुख, उच्च नैतिकता, सिद्धांतप्रिय, यशस्वी।

एकादश भाव में बृहस्पति : अच्छा स्वास्थ्य, दीर्घ जीवन, कम सतान, सुप्रसिद्ध, सपत्ति व वाहन–सुख, सगीत–प्रेमी।

द्वादश भाव में बृहस्पति : आलसी, सतानहीन, सेवक, क्रोधी, दुष्ट हृदय।

शुक्र : शुक्र आकाश मे अपनी तेज चमक के लिए प्रसिद्ध है। यह कुछ माह सूर्यास्त के बाद सायंकाल व कुछ माह सूर्योदय के पूर्व प्रात काल स्पष्ट दिखाई देता है। दूरी में यह मगल व पृथ्वी के बीच स्थित है। सूर्य से शुक्र की कोणीय दूरी 48 डिग्री है। अत जन्म कुडली में शुक्र सूर्य के साथवाले भाव मे या उससे अधिकतम दो भाव पीछे या दो भाव आगे स्थित हो सकता है, इससे अधिक दूरी पर नहीं जा सकता। यदि किसी कुडली में सूर्य चतुर्थ भाव मे है तो शुक्र द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पचम व षष्ठम भाव के अतिरिक्त किसी अन्य भाव मे नही जाएगा। शुक्र सुख, सुदरता, प्यार, संगीत व रति का प्रतीक है। यह स्त्री, गृह, सुहाने नेत्र, सुखी, बलवान, सुदर कांति, समृद्धि से पूर्ण, नीले रंग से चिह्नित, रजोगुणी, कफ–प्रधान, खट्टे रस का प्रतीक है। वृष व तुला राशि का स्वामी शुक्र है। शुक्र मीन राशि में उच्च तथा कन्या राशि मे नीच हो जाता है।

शारीरिक गठन : औसत ऊँचाई, स्थूल शरीर, सुदर ऑखें, मधुर आवाज, घुँघराले बाल।

सामान्य चरित्र : सुखपूर्वक कुछ सीमा तक विलासपूर्ण रहन–सहन शुक्र की देन है। शुक्र की प्रधानता होने पर व्यक्ति में सगीत, सुगध व कला के प्रति प्रेम होता है। निवास–कक्ष को सुव्यवस्थित व सुदर रगो से सजाना चाहेगा। स्वय भी आधुनिक वस्त्र पहनना चाहेगा। अच्छे संगीतज्ञ व कलाकार की लग्न तालिका मे शुक्र की शुभ स्थिति मे उपस्थिति स्पष्ट लक्षित होगी। विपरीत लिग के सुदर व्यक्ति के लिए विशेष आकर्षण शुक्र की कलात्मक अभिरुचि का ही प्रभाव है। ऐसे व्यक्ति को अच्छे आधुनिक वाहन चलाने के प्रति रुचि होती है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव · स्वास्थ्य पर शुक्र का प्रमुख प्रभाव सर्दी के प्रति शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम करना है। अत. प्रभावित व्यक्ति श्वास सबधी रोग, जुकाम व टॉन्सिल आदि से पीडित रहता है। यही कारण है कि कलाकार व सगीतज्ञ आदि पर सर्दी का प्रभाव जल्दी होता है। जननांग सबधी रोग की भी आशका रहेगी।

रत्न : शुक्र का रत्न हीरा है। इसे सुविधानुसार अँगूठी में शुक्रवार को धारण किया जा सकता है।

विभिन्न भावों में शुक्र की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में शुक्र : प्रसन्नता व भौतिक सुख, सगीत, कला, अभिनय व सुगंध–प्रेमी। विपरीत लिग के व्यक्तित्व का आकर्षण, राजकीय सहायता।

द्वितीय भाव में शुक्र : बडा परिवार, आर्थिक समृद्धि, वाहन सुख, सुस्वादु भोजन–प्रेमी, सुखी पारिवारिक जीवन।

तृतीय भाव में शुक्र . कमजोर स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति सामान्य, कंजूस, बहन के लिए शुभ।

चतुर्थ भाव में शुक्र : अचल संपत्ति व वाहन–सुख, अच्छे मित्र, माँ के

प्रति विशेष लगाव सगीत प्रेमी व धार्मिक

पचम भाव में शुक्र : कवि हृदय, परिवार से प्रसन्नता, वाहन सुख, शासन से सम्मान, सतान सुख।

छष्ठम भाव में शुक्र · शत्रु पर विजय, जुकाम व श्वास सबधी रोग।

सप्तम भाव में शुक्र : कई कलाओ का ज्ञाता, विपरीत लिग के प्रति विशेष आकर्षण, सुख व सुविधापूर्ण जीवन के प्रति रुचि।

अष्टम भाव में शुक्र : आर्थिक समृद्धि के लिए शुभ स्थिति, राजकीय सम्मान, माँ के लिए अशुभ, प्रारंभिक जीवन में भावात्मक क्लेश।

नवम भाव में शुक्र : भाग्यशाली, यश प्राप्ति, धार्मिक, पारिवारिक सुख।

दशम भाव में शुक्र : सगीत, अभिनय व कला मे विशेष रुचि, भाग्यशाली, सम्मानित, अचल सपत्ति के लिए शुभ, सुखी पारिवारिक जीवन।

एकादश भाव में शुक्र : भ्रमणशील, विभिन्न भौतिक सुख–प्राप्ति, धार्मिक, सगीत–प्रेमी, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण।

द्वादश भाव में शुक्र : निवास–कक्ष विलासितापूर्ण रखने का अभिलाषी, नम्रता मे कमी।

शनि : सूर्य पुत्र शनि धीमी गति से चलनेवाला ग्रह है। इसे सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करने मे तीस वर्ष से कुछ कम समय लगाता है। अत. यह एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक रहता है। यह आयु को निर्धारित करता है। यह मकर व कुंभ राशि का स्वामी है। यह तुला राशि में उच्च व मेष राशि में नीच होता है। यह विप्लव का प्रतीक है, परतु इसके विषय मे यह भी कहा गया है कि यह विलब करता है, परतु पूर्ण इनकार नहीं करता है—अर्थात् सबंधित भाव का कार्य कुछ

बाधा के बाद पूर्ण कराता है। आलस्य, समय–पालन न करना, कजूसी आदि अवगुणो के साथ ही यह धर्म भी प्रदान करता है। यह ग्रह वायु प्राकृतिक, सध्याबली, वात–पित्त–कफ त्रिदोषयुक्त, कसैले रस का स्वामी, वृद्ध, कद मे लंबा व नील वर्ण है। यह पाप ग्रह है तथा क्रूर और दुष्ट स्वभाव, असत्य भाषण व दुबले शरीरवाला भी है।

शारीरिक गठन : प्रथम भाव पर शनि का प्रभाव होने से व्यक्ति कृष्ण वर्ण, दुबले शरीर व बालो की प्रधानतावाला होता है। मूँछ व दाढी रखने की भी इच्छा रखता है। ऑखो मे गहराई का आभास व पीलापन होगा।

सामान्य चरित्र : शनि की धीमी गति के कारण इससे प्रभावित व्यक्ति मे समय–पालन न होना तथा आलस्य पाया जाता है, परतु शनि की शुभ स्थिति बन जाने पर यही अवगुण धैर्य के गुण को विकसित कर कुशल प्रशासक व राजनेता भी बना सकता है। शनि को सदैव पाप ग्रह व दुष्ट प्रकृति के रूप मे ही नही देखा जाना चाहिए। शनि की पूर्ण स्थिति व अन्य ग्रहों की दृष्टि के आधार पर ही निर्णय लिया जा सकता है। शनि यद्यपि मारक भी है, परंतु अष्टम भाव में उपस्थित शनि व्यक्ति को दीर्घायु करता है। शुभ स्थिति मे शनि मस्तिष्क को किसी बिदु पर केद्रित करने मे तथा ध्यान योग मे सहायक है। सामान्यत ऐसा व्यक्ति निर्धारित समय पर किसी स्थान पर पहुँचने मे विलब करता है, परंतु स्वय उस विलब के लिए चितित नही होता है। शनि निराशा भी देता है। अत. बुध या चंद्र पर शनि की दृष्टि व्यक्ति को निराशावादी बनाती है। कमजोर चद्र पर शनि की कुदृष्टि आत्महत्या की मनोदशा उत्पन्न करती है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव : स्वास्थ्य पर शनि का कुप्रभाव होने पर लबी चलनेवाली बीमारी होती है। शनि व मगल के सम्मिलित प्रभाव से दुर्घटना, घायल होना, अग–भंग आदि सभव। शनि के प्रभाव से

त्वचा सबधी राग पथरी रोग कान मे रोग श्वास सबधी रोग भी सभव है

रत्न शनि का रत्न नीलम है, परतु शनि शुभ होने पर ही नीलम उसकी शक्ति बढाता है। अशुभ स्थिति में नीलम शनि को सबल बनाएगा, जिससे बाधाएँ बढेगी। सामान्यत दाएँ हाथ की मध्यमा अँगुली मे शनिवार को लोहे का छल्ला ही पहनना पर्याप्त है।

विभिन्न भावों में शनि की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में शनि : तुला, मकर या कुभ राशि मे प्रथम भाव मे शनि अत्यत भाग्यशाली, सुख-समृद्धि कारक है तथा राजकीय सेवा का अवसर देता है। अन्य राशियो मे होने पर दुबला शरीर, विलब की प्रवृत्ति के साथ ही आत्मविश्वास प्रदान करता है। किसी लक्ष्य की प्राप्ति मे विलब होगा, परतु आखिरकार सफलता मिलेगी।

द्वितीय भाव में शनि : द्वितीय भाव मे तुला, मकर या कुभ राशि में स्थित शनि आर्थिक स्थिति सुदृढ करता है। अन्य राशियो में स्थित होने पर कठिन परिश्रम से कम आय देता है, परतु व्यक्ति युवावस्था के बाद घर से दूर रहकर धन कमाता है।

तृतीय भाव में शनि : साहसी, उदार, बुद्धिमान, शासन मे उच्च पद, आर्थिक स्थिति के लिए शुभ, निराशा की प्रवृत्ति।

चतुर्थ भाव में शनि : बचपन में बीमारी/माँ, अचल संपत्ति व वाहन के लिए अशुभ स्थिति, आलसी।

पंचम भाव में शनि : शठ, दुष्ट बुद्धि, अस्थिर प्रारभिक शिक्षा या माध्यमिक शिक्षा मे व्यवधान। सतान, ज्ञान, धन व पारिवारिक सुख मे कमी।

षष्ठम भाव में शनि : साहसी, शत्रुओ पर विजय, अधिक भोजन

करनेवाला। लबी चलनेवाली, परतु कम कष्टवाली बीमारी अन्यथा स्वास्थ्य सामान्य।

सप्तम भाव में शनि . पारिवारिक जीवन मे कठिनाई, कमजोर पाचनतत्र कूटनीतिज्ञ, विदेश यात्रा।

अष्टम भाव में शनि . दीर्घायु, आलस्य, दुर्बल शरीर, कर्तव्यनिष्ठ श्वास सबधी बीमारी, कम सतान।

नवम भाव में शनि शनि बलवान् होने पर धार्मिक क्षेत्र मे उच्च आदर पाएगा, परतु प्रतिकूल स्थिति होने पर भाग्य में कमी, अधर्मी व बडो का आदर न करनेवाला होगा।

दशम भाव में शनि : शासन मे उच्च स्थान, सुप्रसिद्ध, कृषि कार्य मे निपुण। गरीब व निर्बल व्यक्तियो की सहायता हेतु तत्पर, धार्मिक स्थानो की यात्रा।

एकादश भाव में शनि : भाग्यशाली, सुदृढ़ आर्थिक स्थिति, सुखी परिवार, शासन सहायक, अनेक सेवको का स्वामी।

द्वादश भाव में शनि : निराशावादी, भाग्य व धन में कमी, शत्रुओं में वृद्धि।

राहु और केतु

राहु और केतु अन्य ग्रहो की भॉति भौतिक रूप से किसी पिंड के रूप मे नहीं हैं, ये केवल छाया ग्रह के रूप में होते है। राहु–केतु की छाया ग्रह के रूप मे स्थिति इस प्रकार है कि इन छाया ग्रहो के 5^0 से कम दूरी पर आते ही सूर्य/चंद्रग्रहण–ग्रस्त हो जाते है। पृथ्वी से देखने पर सूर्य व चंद्र जिन परिपथ पर घूमते हैं वे परिपथ दो बिदुओ पर आपस मे कटते है। इस प्रकार सूर्य व चंद्र के परिपथ जिन दो बिदुओं पर आपस में कटते है, वे आपस में 180^0 की दूरी पर है। इन दोनों बिंदुओ में से जो बिंदु चद्रमा के दक्षिण से उत्तर

जाते समय बनता है उस कटान बिंदु को राहु कहा जाता है तथा दूसरी ओर चद्रमा के उत्तर से दक्षिण जाते समय जो कटान बिंदु बनता है उसे केतु कहा जाता है.

सूर्य व चद्र उच्च कटान–बिंदु के समीप होते है तो अमावस्या पर सूर्य व पृथ्वी के बीच चद्रमा होने पर सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर आने से रोकेगा। इसी स्थिति को 'सूर्यग्रहण' कहा जाता है। इसी प्रकार पूर्णमासी को यदि चद्रमा उक्त कटान–बिंदु के समीप से गुजरेगा तो पृथ्वी की छाया चद्रमा पर पडेगी तथा चद्रग्रहण की स्थिति उत्पन्न होगी। इसके आधार पर भी राहु व केतु के द्वारा सूर्य व चद्र के साथ शत्रुता स्पष्ट होती है। राहु व केतु के बीच 180° कोणीय दूरी होती है, अत यदि राहु प्रथम भाव में है तो केतु सप्तम भाव मे होगा। इसी प्रकार यदि राहु द्वितीय भाव में है तो केतु अष्टम भाव मे होगा। राहु व केतु सामान्यत पाप ग्रह का ही चरित्र रखते हैं। सामान्यत राहु का चरित्र चोर के रूप मे अर्थात् अंदर से बुरी भावना रखकर कार्य करनेवाला तथा केतु का चरित्र कुत्ते के समान दूसरे की वस्तु छीन लेनेवाली होती है, परंतु इसे अक्षरश नहीं लेना चाहिए, जन्म कुडली की पूर्ण स्थिति पर विचार करते समय इसे मस्तिष्क में रखना चाहिए। राहु व केतु का अपना कोई भौतिक रूप या आकार नही होता है। राहु व केतु किसी राशि के स्वामी नही होते हैं। कुछ विद्वान् राहु को शनि की प्रकृति का मानते रहे है, परंतु सामान्यतः राहु–केतु का चरित्र निम्नलिखित बिंदुओ के अनुसार निर्धारित होगा–

1. राहु व केतु जिस भाव मे स्थित है उस भाव मे इनके साथ अन्य जो ग्रह स्थित है, उनका ही चरित्र राहु व केतु प्राप्त कर लेते हैं।
2. यदि राहु व केतु के साथ अन्य ग्रह नहीं हैं तो जिस अन्य ग्रह की दृष्टि इनपर पड रही होगी उस ग्रह का चरित्र राहु–केतु प्राप्त कर लेते है।
3. यदि राहु व केतु किसी ग्रह के साथ नही हैं तथा किसी अन्य

ग्रह की दृष्टि भी उनपर नहीं पड रही है तो ऐसी दशा मे राहु व केतु जिस राशि मे स्थित है उस राशि के स्वामी का चरित्र राहु व केतु ग्रहण करते है।

राहु व केतु यद्यपि उपर्युक्तानुसार विभिन्न ग्रहो का चरित्र ग्रहण करते है, परतु साथ ही विभिन्न भावो मे उनकी स्थिति का विशेष प्रभाव होता है, जिसका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

विभिन्न भावों मे राहु की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में राहु : दूसरे के साथ व्यवहार मे विशेष सवेदनशील व सचेत, कमजोर शरीर, दॉत मे रोग।

द्वितीय भाव में राहु कपटपूर्ण बातें करनेवाला, धन संचय की प्रवृत्ति, ऑखें कमजोर।

तृतीय भाव में राहु : शत्रु पर विजय, धनी, दीर्घायु, दृढ बुद्धिवाला, भाई के लिए अशुभ।

चतुर्थ भाव मे राहु : सुख में कमी, कूटनीतिज्ञ, दूसरो पर सदेह करनेवाला, यात्राओ के प्रति रुचि।

पंचम भाव मे राहु : सतान के लिए अशुभ, कठोर हृदय, पेट के नीचे के भाग में रोग, नाक से बोलनेवाला, हृदय रोग की आशका।

षष्ठम भाव में राहु : शत्रु प्रभावित करेगे, धनी, दीर्घायु, लबी चलनेवाली बाधा तथा कम कष्ट देनेवाली बीमारी जिसमे गैर–परपरागत उपचार से लाभ होगा।

सप्तम भाव में राहु : पारिवारिक जीवन के लिए अशुभ, पति/पत्नी अस्वस्थ, स्वतत्र विचार, अच्छे भोजन का अभिलाषी।

अष्टम भाव में राहु : आयु में कमी, वात रोग, चितित, सम्मान में कमी।

नवम भाव में राहु : अधार्मिक, पिता के लिए अशुभ, धनवान्।

दशम भाव में राहु : विख्यात, व्यापार मे रुचि, काव्य मे रुचि, अपने से अधिक आयु के स्त्री/पुरुष से सबध।

एकादश भाव में राहु : भाग्यशाली, प्रसन्न, शासन की सहायता, धनवान, कान का रोग।

द्वादश भाव में राहु : ऑख का रोग, सतान मे कमी, पैरो मे दर्द भाग्य में कमी, दूसरों की सहायता हेतु तत्पर।

विभिन्न भावों में केतु की स्थिति का प्रभाव

प्रथम भाव में केतु : कृतघ्न, सुखहीन, असज्जनो का साथ, शरीर के किसी अग मे विकलता।

द्वितीय भाव में केतु : धन–सचय की प्रवृत्ति, परतु आर्थिक स्थिति सुदृढ नही, अकुशल वक्ता, मुँह मे रोग, अध्यात्म मे रुचि।

तृतीय भाव में केतु : दीर्घायु, बलवान्, सफल, धनवान् कृषि कार्य में रुचि, भाई के लिए अशुभ।

चतुर्थ भाव में केतु ' मॉ के लिए अशुभ, अचल सपत्ति की हानि, घर से दूर निवास।

पंचम भाव में केतु : संतान के लिए अशुभ, दुर्बुद्धि, अज्ञात कठिनाइयॉ, उदर रोग, प्रौढावस्था मे आध्यात्मिक।

षष्ठम भाव में केतु : शुभ स्थिति, शत्रुओं पर विजय, त्वरित बुद्धि, धनवान्।

सप्तम भाव में केतु : पारिवारिक जीवन में कष्ट, पति/पत्नी अस्वस्थ, धन में कमी, पेट के पिछले भाग मे रोग।

अष्टम भाव में केतु : मिथुन, कन्या व वृश्चिक राशि होने पर वाहन

सुख, मेष व वृश्चिक राशि होने पर धनवान्, शस्त्र से चोट, लबे समय तक चलनेवाली बीमारी।

नवम भाव मे केतु : पाप प्रवृत्ति, अशुभ कर्म, भाग्य मे कमी, पिता के लिए अशुभ, प्रदर्शन का स्वभाव।

दशम भाव में केतु : सत्कर्म मे बाधा, कन्या राशि होने पर धनवान् तथा सुखी, कूटनीतिज्ञ।

एकादश भाव में केतु : धन–सचय की प्रवृत्ति, सट्टा आदि से धन प्राप्त, साहसी, सद्गुणी।

द्वादश भाव मे केतु : भाग्य मे कमी, दुष्ट कार्य की प्रवृत्ति, अशुभ कार्यो मे व्यय, ऑखें कमजोर, पैरो मे दर्द।

□

अध्याय–5

बारह भावों का महत्त्व

अध्याय 3 में यह वर्णन किया जा चुका है कि कुडली मे बारह भाव होते है तथा उनकी क्रम सख्या घड़ी की सुइयो के चलने की दिशा से उलटी दिशा मे चलती है। यह क्रम सख्या कुडली मे लिखी नहीं जाती है, बल्कि भाव की स्थिति से नियत मानी जाती है तथा किसी भी भाव मे जो राशि स्थित है उस राशि की संख्या उस भाव में अकित की जाती है। दक्षिण भारत मे जो कुंडली बनाई जाती है उसमे राशि की क्रम सख्या स्थिर रहती है तथा जिस राशि मे लग्न स्थित होती है उस भाव मे 'लग्न' शब्द लिख दिया जाता है और इसे 'प्रथम भाव' समझकर वामावर्त्त द्वितीय–तृतीय आदि भावो को माना जाता है। प्रत्येक भाव शरीर के किसी विशेष अग व मनुष्य के जीवन के किसी विशेष क्रिया–कलाप को प्रदर्शित करता है। जिस प्रकार हम जानते है कि मनुष्य के शरीर में छाती मे अदर फेफडे होते हैं या पेट में दाई ओर लीवर होता है। अत इन अगो मे कष्ट होने पर एक्स–रे या अल्ट्रासाउड द्वारा उस विशेष अग की स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है, उसी प्रकार जिस भाव से जो अग या क्रिया–कलाप प्रदर्शित होता है उस भाव की स्थिति राशि, ग्रह के अनुसार जैसी होती है वैसी ही उस अग या क्रिया–कलाप की स्थिति बताई जाएगी।

किसी भी भाव मे जो राशि स्थित है उस राशि के स्वामी को ही उस भाव का स्वामी (भावेश) कहा जाता है। जैसे–यदि चतुर्थ भाव मे मेष राशि है तो मेष राशि के स्वामी मगल को 'चतुर्थेश' कहा जाएगा। विभिन्न भाव किन बातो को प्रदर्शित करते है तथा किसी भाव का भावेश अन्य जिस भाव मे स्थित है, उसका क्या प्रभाव होगा, इन बातो का विवरण नीचे दिया जा रहा है–

प्रथम भाव . लग्न, शारीरिक गठन, सिर, रूप, ज्ञान, रग, सामान्य स्वभाव, वर्तमान काल का विचार प्रथम भाव से करे। इन बातो के लिए प्रथम भाव पर मस्तिष्क केद्रित करे।

उपर्युक्त बातो से स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति की जन्म कुडली का सबसे महत्त्वपूर्ण भाव उसका प्रथम भाव है। यदि प्रथम भाव सशक्त है तो अन्य किसी भाव की कमजोर स्थिति को भी वह व्यक्ति अपने परिश्रम व बुद्धि से दूर कर लेगा।

दूसरी ओर यदि प्रथम भाव बलशाली नही है तो अन्य कोई भाव सबल होने पर भी जीवनपर्यंत उसका शुभ–लाभ भॉति प्राप्त नही होगा, केवल उस भाव से सबधित ग्रहों की दशा व अतर्दशा मे यथेष्ट लाभ होगा। जातक (जिस व्यक्ति की लग्न–कुडली का अध्ययन किया जाना है उस व्यक्ति के लिए **'जातक'** शब्द का प्रयोग किया जाता है) के शरीर की सरचना तथा मानसिकता प्रथम भाव मे स्थित राशि के अनुसार ही विचार की जानी चाहिए। विचार करते समय प्रथम भाव में स्थित ग्रह तथा अन्य ग्रह, जिनकी दृष्टि प्रथम भाव पर पड रही है, उसपर भी विचार किया जाना चाहिए। जातक की आतरिक, शारीरिक व मानसिक शक्ति जीवनपर्यत उसके जीवन को प्रभावित करती है। अत प्रथम भाव की स्थिति सपूर्ण जीवन की सफलता–असफलता को एक सीमा तक प्रभावित करेगी।

प्रश्न कुडली व राजनीति ज्योतिष मे प्रथम भाव क्रमश प्रश्नकर्ता व देशवासियो को प्रदर्शित करते हैं। इन विषयो का विस्तृत अध्ययन

इस पुस्तक का विषय नहीं है प्रथम भाव मे विभिन्न ग्रह स्थित होने पर उसका क्या प्रभाव होगा उसका वर्णन ग्रहो से सबधित अध्याय 5 में दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त लग्नेश (प्रथम भाव मे स्थित राशि का स्वामी ग्रह) जिस भाव मे स्थित होगा, उसके प्रभाव पर भी विचार आवश्यक है। लग्नेश के विभिन्न भावो मे स्थित होने पर निम्नलिखित विवरण के अनुसार फल प्राप्त होगा—

लग्नेश प्रथम भाव में : प्रसन्नता, सुगठित शरीर, स्वतत्र व्यक्तित्व, आत्मविश्वास से पूर्ण।

लग्नेश द्वितीय भाव मे : सुदृढ आर्थिक स्थिति, सच्चरित्र, सहृदय, परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ, समाज मे आदरपूर्ण स्थान।

लग्नेश तृतीय भाव में · बुद्धिमान, साहसी, भाग्यशाली, भाई से स्नेह।

लग्नेश चतुर्थ भाव मे : मॉ के प्रति समर्पित, अचल संपत्ति प्राप्त, सुदर शरीर, सद्व्यवहार।

लग्नेश पंचम भाव में : प्रथम संतान के लिए अशुभ, क्रोधी, अधीनस्थ स्थिति।

लग्नेश षष्ठम भाव में : साहसी, स्वास्थ्य के लिए अशुभ, शत्रुओ से प्रभावित।

लग्नेश सप्तम भाव में : पत्नी/पति के लिए अशुभ, भ्रमणशील, प्रौढावस्था मे सन्यासी प्रवृत्ति।

लग्नेश अष्टम भाव में . ज्ञानी, जुआ खेलने में रुचि, दूषित हृदय, अलौकिक शक्ति मे विश्वास।

लग्नेश नवम भाव में : भाग्यशाली, धार्मिक, पिता के प्रति समर्पित, प्रसन्न पारिवारिक जीवन, धनवान्।

लग्नेश दशम भाव में : व्यावसायिक सफलता, सम्मानित, शासन

लग्नेश एकादश भाव में [illegible] व्यापार में सफलता, सुप्रसिद्ध।

लग्नेश द्वादश भाव में : [illegible] दूषित हृदय, व्यापार में असफलता।

द्वितीय भाव : आर्थिक स्थिति धन, [illegible] आँख, वाणी, कुटुंब, पत्र लेखन–इन सब बातों पर विचार करना हो तो द्वितीय भाव को देखें। द्वितीय भाव मुख्यतः आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करता है। इसमें स्वार्जित धन ही प्रदर्शित होता है। अर्जित संपत्ति व उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति का संबंध द्वितीय भाव से नहीं है। द्वितीय भाव की संपत्ति में शेयर, बांड, बैंक में जमा धन सम्मिलित है।

द्वितीय भाव भोजन को भी प्रदर्शित करता है। अतः द्वितीय भाव में शुभ स्थिति होने पर जातक को सुस्वादु व अच्छा भोजन प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाव की शुभ स्थिति होने पर जातक का कुटुंब बड़ा होगा तथा वह अपने कुटुंब व परिजनों से घनिष्ठ संबंध रखेगा। इसके प्रतिकूल स्थिति होने पर उसके परिवार में कम सदस्य होंगे या वह अपने परिवार जनों से संबंध नहीं रखेगा।

द्वितीय भाव वाणी (बोलना) का भी भाव है। यदि द्वितीय भाव में मूक राशि (कर्क, वृश्चिक व मीन) के साथ केतु भी हो तो व्यक्ति हकलानेवाला होगा। यदि अन्य पाप ग्रह का भी प्रभाव हो तो गूँगा भी हो सकता है। द्वितीय भाव में मूक राशि न हो तथा शुभ ग्रह हो तो जातक की आवाज मधुर होती है।

द्वितीय भाव दाईं आँख का भी प्रतीक है। अतः द्वितीय भाव में क्रूर या अशुभ ग्रह होने पर जातक की दाईं आँख कमजोर होगी तथा कम आयु में ही चश्मा का प्रयोग करना पड़ सकता है। अन्य प्रतिकूल प्रभाव होने पर चोट लगने से दाईं आँख नष्ट भी हो सकती है।

राजनीतिक ज्योतिष मे द्वितीय भाव से देश की आर्थिक स्थिति पर विचार किया जाता है प्रश्न कुडली मे प्रश्नकर्ता की आर्थिक स्थिति सबधी प्रश्न का उत्तर द्वितीय भाव से दिया जाता है। द्वितीय भाव को सामान्यत 'धन भाव' कहते है। अत द्वितीय भाव के स्वामी को 'धनेश' कहा जाता है। धनेश के विभिन्न भावो मे स्थित होने का प्रभाव निम्नलिखित विवरण के अनुसार होता है—

धनेश प्रथम भाव में . धनवान्, परतु अपने परिवार से कम लगाव सहृदयता मे कमी।

धनेश द्वितीय भाव मे : घमडी, धनवान्, द्वितीय विवाह।

धनेश तृतीय भाव मे साहसी, बुद्धिमान, सद्व्यवहार, परंतु सच्चरित्र नही, विलासितापूर्ण जीवन।

धनेश चतुर्थ भाव मे : बुद्धिमान, वाहन व अचल सपत्ति के व्यापार मे लाभ, अपने सुख के लिए व्यय, अन्यथा कजूस।

धनेश पंचम भाव में : शुभ स्थिति होने पर लॉटरी आदि अवसर क्रीडा मे लाभ, परिवार से लगाव नही, अशिष्ट व्यवहार।

धनेश षष्ठम भाव में : शुभ स्थिति होने पर शत्रुओं से आर्थिक लाभ अन्यथा हानि, निचले पृष्ठ भाग व जॉघ मे रोग।

धनेश सप्तम भाव मे : नैतिकता मे कमी, चिकित्सक के रूप मे सफल, विलासिता पर व्यय।

धनेश अष्टम भाव मे : पारिवारिक जीवन मे कष्ट, अचल सपत्ति की प्राप्ति।

धनेश नवम भाव में : युक्तिपूर्ण, धनवान्, प्रसन्न, बचपन मे अस्वस्थ तत्पश्चात् स्वास्थ्य सामान्य।

धनेश दशम भाव मे : सम्मानित, ज्ञानी, धनवान्, स्वार्जित धन।

धनेश एकादश भाव मे : बचपन मे अस्वस्थ, सुदृढ आर्थिक स्थिति सहृदयता मे कमी।

धनेश द्वादश भाव मे · सम्मानित, राजकीय सेवा की सभावना।

तृतीय भाव . साहस, वीरता, दृढता, दायॉ कान, छोटे भाई बहन पौरुष, छोटी यात्राऍ आदि बातो को ज्ञात करने के लिए तृतीय भाव का अध्ययन करे।

तृतीय भाव मुख्यत जातक के साहस, पौरुष व वीरोचित गुणो को प्रदर्शित करता है। इसी कारण प्रथम भाव के अध्ययन मे वर्णित है कि लग्नेश यदि तृतीय भाव मे स्थित होगा तो जातक को साहसी बनाएगा। छोटे भाई–बहन के सबध मे भी तृतीय भाव से निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है। तृतीय भाव मे क्रूर या पाप ग्रह अशुभ स्थिति मे हो तो जातक का छोटा भाई–बहन नही होगा या यदि होगा तो उससे जातक के अच्छे सबध नहीं होगे।

इसके अतिरिक्त शरीर के अंगों मे तृतीय भाव कान (विशेष रूप से दायॉ कान) की स्थिति प्रदर्शित करता है। अत· तृतीय भाव मे अशुभ स्थिति मे पाप ग्रह होने पर उसकी दशा/अतर्दशा मे कान मे कष्ट सभावित होगा। राजनीतिक ज्योतिष मे तृतीय भाव से पडोसी देश की स्थिति देखी जाती है। तृतीय भाव में विभिन्न ग्रहों के स्थित होने के प्रभाव का विवरण अध्याय 5 मे दिया जा चुका है। तृतीय भावेश के विभिन्न भागों मे स्थित होने पर जो परिणाम प्राप्त होगे, उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

तृतीयेश प्रथम भाव में . साहसी, स्वपरिश्रम से जीवन में प्रगति, स्वास्थ्य कमजोर।

तृतीयेश द्वितीय भाव में . असावधान, नैतिकता मे कमी, प्रसन्नता मे कमी।

तृतीयेश तृतीय भाव में : साहसी, धनवान्, प्रसन्नता, सतान व भाई–बहन

तृतीयेश चतुर्थ भाव मे प्रसन्नता मे वृद्धि धनवान् ज्ञानी

तृतीयेश पचम भाव में . संतान से अप्रसन्नता, धनवान्, पारिवारिक जीवन मे तनाव।

तृतीयेश षष्ठम भाव मे ' धनवान्, भाई व अन्य सबधियो के अतिरिक्त नाना, मामा आदि के लिए भी अशुभ।

तृतीयेश सप्तम भाव मे : बचपन मे कष्ट, यात्रा से कष्ट, शासन से अप्रसन्नता, पारिवारिक जीवन के लिए अशुभ।

तृतीयेश अष्टम भाव में : गलत दोषारोपण मे आरोपित, गभीर रोग अभाग्यशाली।

तृतीयेश नवम भाव में : विवाह के वाद भाग्योदय, पिता से सबध मे तनाव, लबी यात्राएँ।

तृतीयेश दशम भाव में : बुद्धिमान व प्रसन्न, समृद्धि, पारिवारिक जीवन मे तनाव।

तृतीयेश एकादश भाव में : बचपन मे अस्वस्थ, दुबला शरीर, परिश्रम से धनार्जन।

तृतीयेश द्वादश भाव मे : विवाह के बाद भाग्योदय, जीवन मे उतार–चढाव, सबधियो से कष्ट।

चतुर्थ भाव : अचल सपत्ति, गृह, माता, वाहन, जल व विद्या के सबध मे विचार करना हो तो अपना ध्यान चतुर्थ भाव पर केंद्रित करे।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि मातृ–सुख के साथ–साथ अन्य भौतिक सुखो के लिए भी चतुर्थ भाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अचल सपत्ति मे निवास हेतु घर के अतिरिक्त कृषि योग्य भूमि भी सम्मिलित है। अत अन्य अनुकूल स्थितियाँ होने पर चतुर्थ भाव से ही यह

बताया जा सकता है कि जातक अचल सपत्ति के क्रय–विक्रय का व्यापार करेगा या कृषि कार्य से आजीविका कमाएगा। चतुर्थ भाव मे शुभ ग्रह होने पर भी यदि इसपर पाप ग्रह की दृष्टि पड रही है तो यह इस बात का द्योतक है कि जातक की अचल संपत्ति के सबध मे उसे कष्ट का सामना करना पड़ेगा। यह कष्ट मुकदमेबाजी के रूप मे होगा या अन्य किसी के द्वारा कब्जा करने का होगा, इस बात की विवेचना संपूर्ण कुडली के अध्ययन से ही स्पष्ट होगी।

वाहन–सुख प्राप्त होना चतुर्थ भाव से ही प्रदर्शित होता हे। पुराने ग्रंथो मे रथ की प्राप्ति का उल्लेख है। इसे आधुनिक समय मे 'मोटर कार' समझना चाहिए। चतुर्थ भाव मे शुक्र की उपस्थिति वाहन सुख का निश्चित सकेत है। कुछ विद्वान् प्रारंभिक शिक्षा का सबध भी चतुर्थ भाव से ही बताते है, परंतु इस लेखक का अनुभव है कि चतुर्थ भाव विद्या ज्ञान का प्रतीक है, परतु औपचारिक शिक्षा पचम व नवम भाव से ही ज्ञात होती है।

राजनीतिक ज्योतिष मे चतुर्थ भाव से देश की कृषि उपज, खनिज सपत्ति आदि पर विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रश्न कुडली मे प्रश्नकर्ता के अचल संपत्ति संबधी प्रश्न के उत्तर चतुर्थ भाव की स्थिति देखकर बनवाए जाते हैं। चतुर्थ भाव में विभिन्न ग्रहो की उपस्थिति का प्रभाव अध्याय 5 मे स्पष्ट किया जा चुका है। चतुर्थ भावेश (चतुर्थेश) के विभिन्न भावों मे उपस्थिति का प्रभाव नीचे दिया जा रहा है—

चतुर्थेश प्रथम भाव में : ज्ञानवान्, सपत्ति सुख, माँ से प्रभावित।

चतुर्थेश द्वितीय भाव मे : भाग्यशाली, साहसी, प्रसन्नता, नाना से सपत्ति–प्राप्ति।

चतुर्थेश तृतीय भाव में : रोगी, दयालु, सच्चरित्र, स्व–परिश्रम से संपत्ति–अर्जन।

चतुर्थेश चतुर्थ भाव में धार्मिक पुरानी मान्यताओ मे विश्वास सच्चरित्र सपति अर्जन

चतुर्थेश पचम भाव में : धार्मिक, स्व–परिश्रम से धनार्जन, योग्य माता वाहन सुख।

चतुर्थेश षष्ठम भाव मे : माता के लिए अशुभ, क्रोध, कुविचार।

चतुर्थेश सप्तम भाव में : ज्ञानी, प्रसन्न, अचल सपत्ति प्राप्ति सप्तम भाव मे चर राशि होने पर जन्म–स्थान से दूर निवास।

चतुर्थेश अष्टम भाव मे : पिता के लिए अशुभ, अचल सपत्ति के सबध मे कठिनाई।

चतुर्थेश नवम भाव में : प्रसन्न, धार्मिक, भाग्यशाली, पिता से प्रसन्नता, सपत्ति सुख।

चतुर्थेश दशम भाव में : राजनीतिक सफलता, रसायन शास्त्र का ज्ञाता, शत्रुओ पर विजय, सम्मानित।

चतुर्थेश एकादश भाव में : स्व–परिश्रम से सपत्ति अर्जन, मॉ के लिए भाग्यशाली, अचल संपत्ति के व्यापार से लाभ।

चतुर्थेश द्वादश भाव में : मॉ के लिए अशुभ, अचल सपत्ति व वाहन के सबध मे कठिनाई, अभाग्यशाली।

पंचम भाव : शासन से सम्मानित पद, मत्री, माध्यमिक स्तर तक शिक्षा, प्रथम संतान, पेट, बुद्धि, शास्त्र ज्ञान।

प्राचीन ग्रथों मे पचम भाव से बुद्धि का ज्ञान प्राप्त होना तो वर्णित है, परंतु शिक्षा के संबध मे कुछ विद्वान् चतुर्थ भाव को अधिक महत्त्व देते है, परतु लेखक का यह अनुमान रहा है कि प्रारंभिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा पचम भाव से ही प्रदर्शित होती है। पचम भाव मे शनि या राहु के उपस्थित होने पर जातक की प्रारभिक

शिक्षा मे किसी–न–किसी कारण से व्यवधान हो जाता हे। यह भी अनुभव रहा है कि जातक बुद्धिमान है। फिर भी पचम भाव मे अशुभ ग्रह की उपस्थिति के कारण शिक्षा मे व्यवधान हुआ है। इसका प्रत्यक्ष कारण अभिभावक के स्थानातरण के कारण विद्यालय बदलना भी हो सकता है या स्वय जातक का अस्वस्थ रहना भी हो सकता है। प्राचीन ग्रथो मे शास्त्र–ज्ञान पचम भाव से होना कहा गया हे। इसका कारण भी यही है कि प्राचीन काल मे प्रारभिक व माध्यमिक शिक्षा मे शास्त्र–ज्ञान अवश्य कराया जाता है। लेखक के विचार से वर्तमान विद्यालयो के पाठ्यक्रम को देखते हुए शास्त्र–ज्ञान के सबध मे स्पष्ट स्थिति चतुर्थ व नवम भाव (धर्म सबंधी) दोनों को मिलाकर ही बताई जानी चाहिए।

स्त्री जातक के लिए पंचम भाव अत्यत महत्त्वपूर्ण है, क्योकि पचम भाव मे पाप ग्रह उपस्थित होने पर प्रथम प्रसव अत्यत कष्टप्रद होगा तथा अन्य प्रतिकूल परिस्थिति होने पर ऑपरेशन की आशका होगी और प्रथम सतान के जीवन के लिए भी प्रतिकूल परिस्थिति होगी।

पचम भाव की स्थिति अनुकूल होने पर जातक शासन मे उच्च स्थान, मत्री पद भी प्राप्त कर सकता है। राजनीतिक ज्योतिष मे पचम भाव राजदूत की स्थिति बताता है। प्रश्न कुडली में भी जातक के उपर्युक्त पचम भाव से सबधित प्रश्नों का उत्तर पचम भाव को देखकर दिया जाता है। पचम भाव मे विभिन्न ग्रहो की स्थिति के प्रभाव का उल्लेख अध्याय 5 मे किया जा चुका है। पचम भाव के स्वामी पचमेश के विभिन्न भावो मे उपस्थित होने पर क्या प्रभाव होगा, इसका उल्लेख नीचे किया जा रहा है–

पचमेश प्रथम भाव मे : ज्ञानी, शासन में उच्च स्थान, शत्रुता, कम सतान, भाग्यशाली। पचमेश निर्बल होने पर प्रतिकूल परिणाम।

पंचमेश द्वितीय भाव में : सुखी पारिवारिक जीवन, शासन से सम्मान, ज्ञानवान्। पंचमेश निर्बल होने पर प्रतिकूल परिणाम।

पचमेश तृताय भाव मे माई तथा सतान के लिए शुभ पचमेश निर्बल होने पर प्रतिकूल परिणाम

पचमेश चतुर्थ भाव में : मॉ तथा सतान के लिए शुभ, अचल सपत्ति की प्राप्ति। पचमेश निर्बल होने पर प्रतिकूल परिणाम।

पचमेश पचम भाव मे : सतान के लिए शुभ, प्रारभिक शिक्षा से प्रत्यक्ष योग्यता, गणित मे विशेष रुचि।

पचमेश षष्ठम भाव मे . मामा के लिए शुभ, सतान के लिए अशुभ।

पचमेश सप्तम भाव मे : समृद्धि, प्रसिद्धि, योग्य सतान, विदेश मे सतान की प्रसिद्धि।

पंचमेश अष्टम भाव में ' श्वसन व फेफडे का रोग, पैतृक सपत्ति की हानि, आर्थिक स्थिति सामान्य।

पंचमेश नवम भाव मे : कुशल अध्यापक, प्रथम संतान विद्वान्।

पचमेश दशम भाव मे : राजयोग, अचल सपत्ति प्राप्ति, सम्मानित, शासकीय पद, सतान के लिए भी शुभ।

पंचमेश एकादश भाव मे . भाग्यशाली, धनवान्, विद्वान्, सहृदय, लेखन मे रुचि।

पंचमेश द्वादश भाव मे ' आध्यात्मिक, भ्रमणशील, दार्शनिक।

षष्ठम भाव : ऋण, रोग, शत्रु, भय, चोर, घाव, पाप, दुष्कर्म, अपमान, मामा के सबध मे ज्ञान षष्ठम (छठे) भाव से प्राप्त होता है।

उपर्युक्त बातो से स्पष्ट है कि छठे भाव मे उपस्थित ग्रह छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित ग्रह तथा छठे भाव व उसके स्वामी पर दृष्टि डालनेवाले ग्रह रोग आदि के सबंध मे महत्त्वपूर्ण सूचना देते है तथा इन्ही ग्रहों की दशा व अतर्दशा मे रोग होने की आशंका रहेगी।

छठे भाव का स्वामी ग्रह जिस भाव मे स्थित है उस भाव से सबधित शरीर का अग रोगी होने की आशका होगी। छठे भाव मे विभिन्न ग्रह स्थित होने पर उसका क्या प्रभाव होगा, इसका उल्लेख अध्याय 5 मे किया जा चुका है, जिससे यह स्पष्ट है कि 'केतु' के छठे भाव मे उपस्थित होने से शत्रुओ पर विजय होती है।

छठे भाव मे सामान्यत क्रूर व पाप ग्रह स्थित होने पर शत्रुओ पर विजय व अन्य शुभ परिणाम प्राप्त होते है। इसके विपरीत छठे भाव मे शुभ ग्रह उपस्थित होने पर अशुभ परिणाम प्राप्त होते है। छठे भाव मे शुभ ग्रह की उपस्थिति यद्यपि अन्य शुभ परिणाम नही देता है, परतु ऋण की अदायगी समय से सुनिश्चित करता है, अर्थात् छठे भाव मे शुभ व अशुभ ग्रह की उपस्थिति मिश्रित परिणाम देता है। शुभ ग्रह यदि रोग मे वृद्धि करता है तो साथ ही जातक को ऋणग्रस्तता से बचाता है। इसी प्रकार अशुभ ग्रह यद्यपि संबधित रोग का प्रभाव प्रकट करता है, किंतु साथ ही शत्रु पर विजय मे सहायक भी होता है। अत छठे भाव का अध्ययन अत्यत सावधानी से कुडली की सपूर्ण स्थिति को देखकर ही करना चाहिए।

छठे भाव का स्वामी (षष्ठेश) के विभिन्न भावो मे स्थित होने पर निम्नलिखित विवरण के अनुसार परिणाम प्राप्त होगे–

षष्ठेश प्रथम भाव मे . सेना मे कार्य करने की सभावना, रोगी शरीर, मामा से अच्छे सबध।

षष्ठेश द्वितीय भाव में . ऑखे कमजोर, असम्मान, दु ख, शत्रु से धन–हानि, द्वितीय भाव मे मूक राशि होने पर वाणी प्रभावित।

षष्ठेश तृतीय भाव में : भाई के लिए अशुभ, क्रोधी, आलसी।

षष्ठेश चतुर्थ भाव मे : मॉ के लिए अशुभ, निजी–निवास गृह व अचल सपत्ति के सबध मे कठिनाई।

षष्ठेश पंचम भाव में : रोगी सतान, वित्तीय स्थिति मे उतार–चढाव,

षष्ठेश षष्ठम भाव मे मामा के लिए शुभ, कुटुब जनो के साथ अप्रिय सबध।

षष्ठेश सप्तम भाव में · पारिवारिक जीवन के लिए अशुभ, साहसी।

षष्ठेश अष्टम भाव में · मध्यायु, रोगी शरीर, विद्वानो से मतभेद।

षष्ठेश नवम भाव मे : पिता से मतभेद, वित्तीय स्थिति मे उतार–चढाव उच्च शिक्षा मे व्यवधान।

षष्ठेश दशम भाव मे नकारात्मक प्रकृति, सम्मान परतु दुष्कर्म मे लीन।

षष्ठेश एकादश भाव मे · शत्रु से धन प्राप्ति, बडे भाई के लिए शुभ।

षष्ठेश द्वादश भाव में : बुरे कार्यो के लिए धन व्यय करनेवाला तथा कजूस।

सप्तम भाव . पति या पत्नी, वैवाहिक जीवन, काम–वासना, मृत्युकारक, व्यापार मे साझेदारी, यात्रा।

सप्तम भाव सहयोग व भौतिक सबधो का भाव है। इसीलिए चाहे वह वैवाहिक जीवन मे जीवन साथी का प्रश्न हो या व्यापार मे सहयोगी से सबध का प्रश्न हो, इस सबध मे सप्तम भाव जातक के जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है। सप्तम भाव लबी यात्रा की समाप्ति भी बतलाता है। अत नवम भाव (जो लबी यात्रा प्रदर्शित करता है) व सप्तम भाव का सबध विदेश यात्रा का द्योतक है। विवाह का समय, वैवाहिक जीवन मे आपसी सबधो की नजदीकियाँ या तनाव जातक के पूरे जीवन को प्रभावित करते है। अत युवावस्था व उसके बाद के जीवन के लिए सप्तम भाव का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

किसी भी भाव से पूर्व का भाव (अपने से बारहवाँ भाव) उस

भाव का व्यय भाव होता है अष्टम भाव मुख्यत आयु का भाव है अत अष्टम भाव का बारहवा भाव अर्थात सप्तम भाव आयु का व्यय भाव होगा। आयु का व्यय ही मृत्यु प्रदर्शित करता है। अत सप्तम भाव आयु की समाप्ति अर्थात् मृत्यु का समय बताएगा। सप्तम भावेश (सप्तमेश) व सप्तम भाव मे स्थित ग्रह अपनी दशा व अंतर्दशा मे मृत्यु या गभीर रोग कर सकते है। अत सप्तमेश व सप्तम भाव मे स्थित ग्रह महत्त्वपूर्ण मारकेश होते हैं।

राजनीतिक ज्योतिष में देश के अतरराष्ट्रीय सबध व विदेश व्यापार के विषय मे सप्तम भाव से ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

प्रश्न कुंडली मे सप्तम भाव खोई सपत्ति की प्राप्ति तथा चोर के सबध मे प्रकाश डालते हैं।

सप्तम भाव मे स्थित विभिन्न ग्रहो का प्रभाव अध्याय 5 मे वर्णित है। सप्तमेश के विभिन्न भावो मे स्थित होने पर प्राप्त होनेवाले परिणाम नीचे दिए जा रहे है—

सप्तमेश प्रथम भाव में : योग्य व सहयोगी पति/पत्नी की प्राप्ति ज्ञानवान्।

सप्तमेश द्वितीय भाव मे : पति/पत्नी से आर्थिक स्थिति मे सुधार मे सहायता, आलसी, मानसिक एकाग्रता मे कमी।

सप्तमेश तृतीय भाव में : भाई के लिए शुभ, भाई की विदेश यात्रा।

सप्तमेश चतुर्थ भाव में . प्रसन्नतापूर्ण पारिवारिक जीवन, सच्चरित्र विद्वान्, वाहन सुख।

सप्तमेश पंचम भाव मे : पति/पत्नी उच्च परिवार से तथा जीवन मे सहयोग, सच्चरित्र, शीघ्र विवाह।

सप्तमेश षष्ठम भाव में : पति/पत्नी रोगी, पुनर्विवाह सभव, अप्रसन्नता, क्रोधी।

सप्तमेश सप्तम भाव मे योग्य पति/पत्नी की प्राप्ति अच्छा व्यक्तित्व

सप्तमेश अष्टम भाव मे . पति/पत्नी अच्छे परिवार से, परतु दापत्य जीवन मे कष्ट।

सप्तमेश नवम भाव मे : पति/पत्नी जीवन का सुपथ पर ले जाने के लिए विशेष सहयोगी होगे। जातक की विदेश यात्रा का योग। जातक के पिता के लिए भी शुभ व पिता का भी विदेश यात्रा का योग।

सप्तमेश दशम भाव में : विदेश यात्रा का योग, पति/पत्नी के द्वारा व्यवसाय/नौकरी मे सहयोग व परिवार की आय मे वृद्धि मे सहयोग।

सप्तमेश एकादश भाव मे : विवाह से आय मे वृद्धि, पुनर्विवाह की सभावना।

सप्तमेश द्वादश भाव में : पुनर्विवाह की सभावना, पति/पत्नी का खर्चीला होना।

अष्टम भाव आयु, विघ्न, मानसिक चिता, अपमान, मृत्यु आदि के सबध मे जानकारी के लिए अष्टम भाव का अध्ययन आवश्यक है।

अष्टम भाव जातक की आयु के निर्धारण के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है। यद्यपि प्रथम व तृतीय भाव की स्थिति को भी अष्टम भाव के साथ देखकर आयु का निर्धारण करना चाहिए। अष्टमेश किस भाव मे स्थित है, अष्टम भाव मे कौन से ग्रह उपस्थित है अष्टम भाव व अष्टमेश पर किन ग्रहो की दृष्टि पड रही है—ये सभी बाते अष्टम भाव से सबधित बिदुओ के सबध मे जानकारी देगे। शनि धीमी गति का ग्रह है। अत अष्टम ग्रह मे शनि की उपस्थिति प्रथम दृष्टया लबी आयु को प्रदर्शित करता है। फिर भी वास्तविक आयु का निर्धारण अन्य सभी बातों को भी ध्यान मे रखकर करना चाहिए। मृत्यु स्वाभाविक होगी या नही, कष्टप्रद होगी या नही,

दुर्घटना आग या ८ ८ द्वारा होगी इन सब बातो की जानकारी भी अष्टम भाव से प्राप्त होती है दुर्घटना अपमान व मानसिक चिता की जानकारी भी अष्टम भाव का अध्ययन गभीरता से करने पर प्राप्त होती है। शरीर के अगों मे गुदा की स्थिति अष्टम भाव से प्रदर्शित होती है। अत गुदा सबंधी रोग भी अष्टम भाव से ज्ञात होते है। उदाहरणार्थ—अष्टम भाव मे मगल की उपस्थिति से बवासीर रोग की आशका का पता चलता है। राजनीति ज्योतिष मे देश की जन्म, मृत्यु दर, बडी दुर्घटनाएँ, अकाल, भूकप आदि का ज्ञान अष्टम भाव से होता है। प्रश्न कुडली मे नदी—सबधी जानकारी, यात्राएँ व्यवधान आदि के सबध मे अष्टम भाव ज्ञान देता है। अष्टम भाव मे उपस्थित ग्रहों के प्रभाव का वर्णन अध्याय 5 मे किया जा चुका है। अष्टमेश के विभिन्न भावो मे उपस्थित होने पर प्राप्त परिणामो का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

अष्टमेश प्रथम भाव मे : अशुभकारी, कमजोर शरीर, शासन से सहायता प्राप्त होने मे कठिनाई।

अष्टमेश द्वितीय भाव मे · ऑख व दॉत मे कष्ट, अस्वाद भोजन प्राप्ति, आर्थिक स्थिति के लिए अशुभ, दापत्य जीवन के लिए अशुभ।

अष्टमेश तृतीय भाव में कान में कष्ट, भाई—बहन से कटु सबध, निराशाजनक सोच, अष्टम भाव की अन्य प्रतिकूल परिस्थिति भी होने पर विकृत मस्तिष्क या आत्महत्या की प्रवृत्ति।

अष्टमेश चतुर्थ भाव में : मॉ के स्वास्थ्य के लिए अशुभ, अचल सपत्ति व वाहन प्राप्ति के संबंध में कठिनाई। मानसिक अशाति।

अष्टमेश पंचम भाव में : सतान के लिए अशुभ, मस्तिष्क अशात।

अष्टमेश षष्ठम भाव में : भाग्यशाली, राजयोग, स्वास्थ्य के लिए अशुभ, शत्रु पर विजय, यश व धन की प्राप्ति।

अष्टमेश सप्तम भाव मे आयु मे कमी पति/पत्नी की भी आयु मे कमी, विदेश यात्रा की सभावना, परतु विदेश जाकर स्वास्थ्य सबधी कष्ट।

अष्टमेश अष्टम भाव में : बलशाली होने पर दीर्घायु व प्रसन्नता प्रदान करनेवाला, समृद्धि व उच्च पद प्राप्ति की सभावना।

अष्टमेश नवम भाव में · पिता के लिए अशुभ, पैतृक सपत्ति की क्षति अधार्मिक।

अष्टमेश दशम भाव में . व्यावसायिक जीवन में व्यवधान, आर्थिक स्थिति के लिए अशुभ, ऋणग्रस्त होने की आशका।

अष्टमेश एकादश भाव में . बडे भाई व मित्रो के लिए अशुभ, आर्थिक स्थिति के लिए कष्ट, व्यापार मे हानि।

अष्टमेश द्वादश भाव में · द्वादश के साथ स्थित होने पर राजयोग अन्यथा द्वादश भाव की स्थिति बलशाली होने पर धन–सपत्ति का योग। अशुभ स्थिति होने पर अनावश्यक व्यय।

नवम भाव आचार्य (गुरु), धर्म, देवता, आराध्य देव, पिता, लबी यात्रा, आध्यात्मिकता, उच्च शिक्षा—सब इन बिदुओ के सबध मे ज्ञान नवम भाव के अध्ययन से प्राप्त होगा।

नवम भाव मुख्यत धर्म के प्रति जातक के लगाव, पिता के प्रति आदर तथा उसकी उच्च शिक्षा की स्थिति को प्रदर्शित करता है। कुछ विद्वान् नवम भाव से जातक के भाग्य का भी सकेत करते है, परतु इस लेखक का अनुभव है कि भाग्य के विषय मे एकादश भाव से ही विचार करना उचित है। माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा की स्थिति पचम भाव से ही प्रदर्शित होती है, परंतु जातक की उच्च शिक्षा का स्तर क्या होगा, इसको जानकारी नवम भाव से ही ज्ञात होती है। बलशाली शनि आध्यात्मिक अभिरुचि प्रदान करता है, परतु

बाधा भी उत्पन्न करता है। यही कारण है कि बलशाली शनि का प्रभाव यदि नवम भाव पर है तो जातक मे अध्यात्म के प्रति अभिरुचि होगी, परतु उसकी उच्च शिक्षा मे कुछ व्यवधान होगा। गुरु व पिता के प्रति जातक का व्यवहार भी नवम भाव से ही प्रदर्शित होगा। राजनीतिक ज्योतिष मे नवम भाव से देश में दूर यातायात सबधी साधन, यथा–रेल यातायात, जलयान, वायुयान आदि के सबध मे ज्ञान प्राप्त किया जाता है। प्रश्न कुडली मे जातक के नवम भाव से प्रदर्शित बातो के उत्तर नवम भाव की स्थिति से बतलाए जाते है।

नवम भाव मे विभिन्न ग्रहो की स्थिति का परिणाम क्या होगा इसके सबध मे अध्याय 5 मे वर्णन किया जा चुका है। नवम भाव मे स्थित राशि के स्वामी गृह (नवमेश) के विभिन्न भावो मे स्थित होने का क्या प्रभाव होगा, इसका वर्णन नीचे दिया जा रहा है।

नवमेश प्रथम भाव मे स्वपरिश्रम से उन्नति, धनवान्, भाग्यशाली।

नवमेश द्वितीय भाव में . पैतृक धन की प्राप्ति, सम्मानित, प्रसन्नता की प्राप्ति।

नवमेश तृतीय भाव में . लेखक, वक्ता, कुशल अध्यापक, बुद्धिमान।

नवमेश चतुर्थ भाव मे : अचल संपत्ति की प्राप्ति, मॉ के लिए शुभ, वाहन प्राप्ति।

नवमेश पंचम भाव मे : पिता के लिए शुभ, प्रथम सतान की योग्यता व भाग्य मे वृद्धि।

नवमेश षष्ठम भाव में . पिता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ, नवमेश के सबल होने पर जातक को पैतृक सपत्ति के सबध मे चलनेवाली न्यायिक कार्यवाही मे सफलता मिलेगी।

नवमेश सप्तम भाव में : विवाह मे भाग्योदय, विदेश यात्रा व उससे आर्थिक लाभ, पिता के द्वारा भी विदेश मे लाभ प्राप्ति।

नवमेश अष्टम भाव मे उच्च शिक्षा मे व्यवधान पिता की आयु मे कमी

नवमेश नवम भाव मे पिता के लिए शुभ स्थिति, उच्च शिक्षा मे सफलता, धर्म मे आस्था, लबी यात्राएँ।

नवमेश दशम भाव मे . राजयोग, व्यावसायिक सफलता, उच्च पद की प्राप्ति, समृद्धि व सम्मान प्राप्ति।

नवमेश एकादश भाव में : धनवान्, अच्छे मित्रो का साथ, सच्चरित्र।

नवमेश द्वादश भाव में दुर्भाग्य की स्थिति, आर्थिक स्थिति के लिए अशुभ, धार्मिक, पिता की आयु मे कमी।

दशम भाव : कर्म स्थान, जीविकोपार्जन का साधन, शासन मे पद, यश, कार्य मे अभिरुचि, आचार आदि के सबध मे ज्ञान देने के कारण भारतीय समाज मे पुरुष जातक के लिए दशम भाव का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योकि अधिकतर पुरुष ही परिवार के पालन के लिए जीविकोपार्जन करते है। स्त्री जातक के लिए दशम भाव सबल होने पर भी वह यदि स्वय कोई सेवा, व्यवसाय आदि नही करती है तो इसका लाभ उसके पति को प्राप्त होता है। सूर्य राजकीय सत्ता का प्रतीक है। अत दशम भाव में सूर्य की उपस्थिति जातक को राजकीय सेवा प्रदान करने का स्पष्ट चिह्न है। यह राजकीय सेवा किस स्तर की होगी, इसकी जानकारी सपूर्ण लग्न तालिका का अध्ययन करने के उपरात ही करनी चाहिए। इसी प्रकार मगल शक्ति व खून का प्रतीक है, अत दशम भाव मे मगल उपस्थित होने पर जातक को सेना, पुलिस आदि में सेवा का अवसर दे सकता है अथवा सर्जन बना सकता है। इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों की उपस्थिति कर्म भाव के विषय मे महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है। कर्म भाव जातक के जीवन मे शिक्षा के बाद के जीवन के उस महत्त्वपूर्ण भाव के विषय मे जानकारी देता है, जिसमे जातक को अपने परिवार का

भरण–पाषण करना होता है जातक जा सेवा या व्यवसाय करता है या सेवा मे जो पद धारण करता है उससे ही उसकी आर्थिक स्थिति का भी बाध होता है, समाज मे किसी भी व्यक्ति की सेवा या व्यवसाय मे जो स्थिति है, उसी से उसे किसी सीमा तक यश भी प्राप्त होता है। अत दशम भाव से जातक के सामाजिक यश के विषय मे भी प्रकाश पडता है।

ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि स्त्री जातक का दशम भाव प्रबल होने पर भारतीय सामाजिक परिस्थिति में यह अनिवार्यत नही कहा जा सकता है कि जातक स्वयं सेवा, व्यवसाय आदि करेगी, परतु यदि वह स्वय जीविकोपार्जन नही करती है तो उसके दशम भाव का लाभ परिवार को अवश्य मिलेगा, अर्थात् उसके पति के दशम भाव को बल प्रदान करेगा। इस बात को चतुर्थ भाव के सबंध मे भी समझा जा सकता है। यदि स्त्री जातक का चतुर्थ भाव सबल है तो उसके (स्वय जीविकोपार्जन नही करने की दशा मे) वह स्वय अचल सपत्ति अर्जित नही कर सकती है, परतु यदि उसका पति उसके नाम से अचल संपत्ति क्रय करेगा तो उस क्रय से निश्चय ही लाभ होगा।

दशम भाव मे विभिन्न ग्रहो की उपस्थिति का प्रभाव क्या होगा, इसका उल्लेख अध्याय 5 मे किया जा चुका है। दशम भाव मे स्थित राशि के स्वामी (दशमेश या कर्मेश) के विभिन्न भावो मे उपस्थित होने का क्या परिणाम होगा, इसका वर्णन नीचे दिया जा रहा है—

दशमेश प्रथम भाव में : स्वपरिश्रम से उन्नति, ज्ञानी, यश प्राप्ति, बचपन मे कमजोर व्यवस्था।

दशमेश द्वितीय भाव में : भाग्यवान्, धन–प्राप्ति, राजकीय प्रश्रय, पारिवारिक व्यापार होने पर उसमे रुचि लेगा।

दशमेश तृतीय भाव मे : भाई से सहायता, छोटी यात्राएँ, अच्छा वक्ता

दशमेश चतुर्थ भाव मे विभिन्न विषयो का ज्ञाता सहृदय वाहन व अचल सपत्ति की प्राप्ति

दशमेश पंचम भाव में : सट्टा, शेयर आदि मे धन लगाने मे रुचि ज्ञानवान्, धनवान्।

दशमेश षष्ठम भाव में : कारागार, चिकित्सा या न्यायपालिका से सबधित व्यवसाय करने की सभावना। शत्रुओ से हानि।

दशमेश सप्तम भाव में · पति/पत्नी का जातक के व्यवसाय मे विशेष योगदान, विदेश यात्रा की सभावना, साझेदारी के व्यवसाय मे रुचि।

दशमेश अष्टम भाव में . व्यावसायिक/सेवा मे उतार–चढाव व परिवर्तन, लबी आयु।

दशमेश नवम भाव में : राजयोग, धन व यश की प्राप्ति, बृहस्पति की उपस्थिति या दृष्टि होने पर आध्यात्मिक प्रमुख।

दशमेश दशम भाव में : व्यवसाय/सेवा मे उच्च सफलता, उच्च पद की प्राप्ति, धन व यश की प्राप्ति।

दशमेश एकादश भाव में : भाग्यशाली, धनवान्, यश की प्राप्ति सच्चरित्र।

दशमेश द्वादश भाव में : व्यवसाय/सेवा मे असफलताएँ, इस सबध मे दूरस्थ स्थानो की यात्राएँ।

एकादश भाव भाग्य, लाभ, धन, ऐश्वर्य, बडा भाई–बहन, मित्र, सिद्धि, वैभव, काम, सरलता आदि के संबध मे ज्ञान के लिए एकादश भाव का अध्ययन किया जाता है।

चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष क्रमश नवम, दशम

एकादश व द्वादश भाव से प्रदर्शित होते हैं। इस क्रम मे एकादश भाव काम को प्रदर्शित करता है। काम को केवल सीमित अर्थ मे न लेकर यदि इसका व्यापक रूप ले तो काम मे सफलता धन व ऐश्वर्य से जुडी हुई है। भाग्यशाली जातक को ही जीवन मे सभी भौतिक सुख प्राप्त होते है। इसी कारण एकादश भाव से चिह्नित बातो मे काम के अतिरिक्त भाग्य, लाभ, धन, ऐश्वर्य, सिद्धि, वैभव आदि को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त मित्र व बडे भाई–बहन के सबंध में भी एकादश भाव की स्थिति महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालती है। तृतीय भाव दाऍं कान को प्रदर्शित करता है तथा एकादश भाव बाऍं कान को। जातक के भौतिक सुखो की प्राप्ति के ज्ञान हेतु एकादश भाव का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

एकादश भाव मे विभिन्न ग्रहो की स्थिति का प्रभाव का वर्णन अध्याय 5 मे दिया जा चुका है। एकादश भाव मे स्थित राशि के स्वामी एकादशेश या लाभेश के विभिन्न भावो में स्थित होने का प्रभाव नीचे दिया जा रहा है—

लाभेश प्रथम भाव मे : पैतृक धन–सपत्ति की प्राप्ति, कवि व कुशल वक्ता।

लाभेश द्वितीय भाव में : भाग्यशाली, धन व प्रसन्नता की प्राप्ति।

लाभेश तृतीय भाव में भाई व मित्रों से सहायता, सगीत व गायन हेतु समूह गठन।

लाभेश चतुर्थ भाव में : मॉ के लिए भाग्यशाली, अचल सपत्ति तथा वाहन की प्राप्ति और इन वस्तुओ के व्यापार से लाभ। ज्ञान व यश की प्राप्ति।

लाभेश पंचम भाव में : सतान सुख व सतान के लिए भाग्यशाली स्थिति, सट्टा, शेयर आदि मे धन लगाने से लाभ।

लाभेश षष्ठम भाव मे मुकदमेबाजी या मामा से धन की प्राप्ति बचपन मे कमजोर स्वास्थ्य

लाभेश सप्तम भाव मे · पति/पत्नी से धन प्राप्ति, अशुभ स्थिति होने पर पुनर्विवाह की सभावना।

लाभेश अष्टम भाव में : अभाग्यशाली स्थिति, अन्य व्यक्तियो द्वारा धोखा देकर जातक की धन–संपत्ति का हरण किया जा सकता है।

लाभेश नवम स्थान मे · भाग्यशाली, पैतृक सपत्ति की प्राप्ति, वाहन व अन्य भौतिक सुखों की प्राप्ति, धार्मिक मनोवृत्ति, दूसरो की सहायता हेतु सस्था का गठन।

लाभेश दशम भाव में . व्यापार/व्यवसाय मे सफलता व भाई का सहयोग प्राप्त होगा। राजकीय सहायता/अपने व्यवसाय के सबध मे शिक्षा/प्रशिक्षण हेतु प्रयासरत।

लाभेश एकादश भाव में : भाग्यशाली, मित्र, भाई व अन्य परिजनो की सहायता प्राप्त होगी। सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति।

लाभेश द्वादश भाव में : व्यापार/व्यवसाय मे हानि, पारिवारिक उत्तरदायित्वो के निर्वहण मे व्यय, भाई के स्वास्थ्य के लिए अशुभ।

द्वादश भाव : दु.ख, व्यय, बायॉ नेत्र, बधन, दरिद्रता, शयन–स्थान, पाप, पैर, हानि, मोक्ष आदि के संबध मे महत्त्वपूर्ण जानकारी द्वादश भाव के अध्ययन से ज्ञात होती है।

किसी भी भाव से पूर्व का भाव (बारहवॉ भाव) उस भाव की हानि प्रदर्शित करता है। उदाहरणार्थ, अष्टम भाव आयु प्रदर्शित करता है, अत· अष्टम भाव से बारहवॉ भाव अर्थात् सप्तम भाव आयु की हानि प्रदर्शित करता है, अत 'मारक स्थान' कहलाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव जातक के व्यक्तित्व व स्वतंत्रता का प्रमुख द्योतक है। अत द्वादश भाव जातक के बधन, दु ख, व्यय आदि को प्रदर्शित

करता है। यह बधन चिकित्सालय मे होगा या कारागार मे होगा कारागार मे भी आपराधिक मामले मे होगा या राजनीतिक कारणो से, इसका निर्णय लग्न तालिका का संपूर्ण अध्ययन करके ही बताया जा सकता है, परतु यह स्पष्ट है कि द्वादश भाव मे मगल की उपस्थिति से जातक के जीवन मे किसी स्थान पर बंधन की सभावना अवश्य बनेगी। इसी प्रकार द्वादश भाव मे चद्र की उपस्थिति जातक को खर्चीला बनाएगी, परतु शनि की उपस्थिति मितव्ययिता प्रदर्शित करती है। द्वादश भाव का अध्ययन भलीभाँति करने से यह भी ज्ञात होगा कि जातक जो व्यय करेगा, वह शुभ कार्य हेतु करेगा या स्वार्थवश अशुभ कार्य हेतु। द्वादश भाव शयन स्थान को भी प्रदर्शित करता है। अत इस भाव में शुक्र की स्थिति यह सभावना उत्पन्न करेगी कि जातक अपने शयन कक्ष को सुंदर, सुव्यवस्थित व विलासितापूर्ण रखना चाहेगा। द्वादश भाव में पाप ग्रह का प्रभाव बाएँ नेत्र को कमजोर करेगा तथा जातक को कम उम्र मे चश्मे की आवश्यकता होगी। अन्य विशेष प्रतिकूल प्रभाव होने पर नेत्र ज्योति बहुत कमजोर हो सकती है।

मोक्ष जन्म–मृत्यु चक्र से मुक्ति का द्योतक है तथा मोक्ष उसी व्यक्ति को प्राप्त होता है, जो इस जन्म में सत्कर्म कर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुँचने मे सफल हो। अत जातक की आध्यात्मिक उन्नति व आध्यात्मिक चितन के सबध में भी द्वादश भाव के अध्ययन से जानकारी प्राप्त होती है। आध्यात्मिक चिंतन का ऋणात्मक रूप धोखाधडी आदि के कुविचार हैं। अत द्वादश भाव मे प्रतिकूल स्थिति होने पर इस प्रकार कुविचार जन्म लेगे। जातक के मस्तिष्क मे जो विचार उत्पन्न होंगे वे आध्यात्मिक उन्नति के होगे या इसके प्रतिकूल होंगे, इस बात का निर्णय केवल द्वादश भाव के ही अध्ययन से नहीं, बल्कि संपूर्ण लग्न तालिका के अध्ययन से ज्ञात की जा सकती है।

द्वादश भाव में विभिन्न ग्रहों के स्थित होने पर प्राप्त परिणाम

का वर्णन अध्याय 5 मे किया जा चुका है द्वादश भाव में स्थित राशि के स्वामी ग्रह, जिसे 'द्वादशेश' या 'व्ययेश' कहते हैं, के विभिन्न भावो मे स्थित होने पर प्राप्त होनेवाले परिणाम निम्नवत् वर्णित है—

व्ययेश प्रथम भाव में : कमजोर स्वास्थ्य, अस्थिर मस्तिष्क, ऑख कमजोर, सुदर शरीर।

व्ययेश द्वितीय भाव में . धन—हानि, कमजोर ऑख, पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण।

व्ययेश तृतीय भाव मे : डरपोक, भाई के लिए अशुभ, कारागार या चिकित्सालय मे निरुद्ध होने की आशका।

व्ययेश चतुर्थ भाव मे : मॉ के लिए अशुभ, अचल सपत्ति की हानि, घर से दूर या विदेश निवास की संभावना।

व्ययेश पंचम भाव में : सतान के लिए अशुभ स्थिति, प्रारभिक व माध्यमिक शिक्षा मे कठिनाई, अस्थिर मस्तिष्क, धार्मिक प्रवृत्ति।

व्ययेश षष्ठम भाव में : प्रसन्नता, सुखी व समृद्ध जीवन। रोग व शत्रुओं पर विजय, मुकदमे मे जीत।

व्ययेश सप्तम भाव में : पति/पत्नी के लिए अशुभ। पारिवारिक जीवन मे तनाव।

व्ययेश अष्टम भाव में . भाग्यवान्, सुदृढ आर्थिक स्थिति, सुखी व समृद्ध जीवन, सच्चरित्र, प्रसिद्धि।

व्ययेश नवम भाव में ' विदेश में समृद्धि की प्राप्ति। सहृदय, परंतु धार्मिक व परपरागत मान्यताओ पर विश्वास नहीं होगा।

व्ययेश दशम भाव में : कठोर परिश्रमी, व्यवसाय, सेवा के संबध मे

यात्रारत, राजकीय सहायता के बगैर परिश्रम से जीवन–यापन।

व्ययेश एकादश भाव में : व्यापार मे रुचि, परंतु शत्रुओ के कारण आर्थिक हानि।

व्ययेश द्वादश भाव में : व्यय में रुचि, साथ ही व्यय, शुभ कार्य हेतु धार्मिक प्रवृत्ति से जातक द्वारा किया जाएगा। पारिवारिक जीवन मे प्रसन्नता।

भाव कारक : किसी भी भाव का अध्ययन करने के लिए केवल भाव मे स्थित राशि व भावेश की स्थिति की ही जानकारी पर्याप्त नही है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भाव के कारक ग्रह भी नीचे दी गई तालिका के अनुसार होते है। यदि कोई भाव राशि व ग्रह को प्रथम दृष्टया देखने से बलशाली प्रतीत नही होता है तो इसके कारक ग्रह का प्रभाव भी इस भाव को प्राप्त होगा। इसी प्रकार यदि कोई भाव प्रथम दृष्टया बलशाली दिखाई दे रहा है, परतु यदि इसका कारक ग्रह अशुभ स्थिति मे है तो इस भाव की भी स्थिति उतनी अच्छी नही होगी जितनी प्रथम दृष्टया प्रतीत हो रही है। उदाहरणार्थ—नीचे दी गई तालिका मे प्रथम भाव का कारक गृह सूर्य है। अत: प्रथम भाव के संबध मे विवेचना केवल प्रथम भाव मे स्थित राशि, लग्नेश व प्रथम भाव पर दृष्टि रखना ग्रहो को ही देखकर करना पर्याप्त नही होगा, बल्कि इसके अतिरिक्त लग्न तालिका में प्रथम भाव के कारक सूर्य की क्या स्थिति है—उसको भी देखना आवश्यक होगा। यदि सूर्य शुभ स्थिति मे है तो प्रथम भाव से प्राप्त परिणाम में वृद्धि करेगा, परतु यदि सूर्य अशुभ स्थिति मे है तो प्रथम भाव से प्राप्त होनेवाले परिणाम में हानि करेगा। इसी प्रकार सभी भावो के सबंध मे निष्कर्ष के पूर्व इस तालिका के अनुसार भावकारक ग्रह की स्थिति को भी ध्यान मे रखकर विवेचना की जानी चाहिए—

भाव	कारक ग्रह
प्रथम	सूर्य
द्वितीय	बृहस्पति
तृतीय	मगल
चतुर्थ	चद्र तथा बुध
पचम	बृहस्पति
षष्ठम	मगल और शनि
सप्तम	शुक्र
अष्ठम	शनि
नवम	बृहस्पति व सूर्य
दशम	सूर्य, बुध, बृहस्पति एव शनि
एकादश	बृहस्पति
द्वादश	शनि

भावों के विशिष्ट नाम

फलित ज्योतिष मे कुछ भाव समूहों को विशिष्ट नाम से जाना जाता है। अत फलित ज्योतिष का ज्ञान कराने के पूर्व यह आवश्यक है कि जिन भाव समूहो को विशिष्ट नाम से जाना जाता है, पाठक उनका ज्ञान प्राप्त कर ले। इस अध्याय मे केवल विशिष्ट नाम की जानकारी प्राप्त कर लेना पर्याप्त होगा। इस जानकारी का प्रयोग अगले अध्याय मे किया जाएगा।

केंद्र : लग्न तालिका के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम व दशम भाव को 'केद्र' नाम से जाना जाता है।

पणफर . केद्र से बादवाले चार भावो को 'पणफर' नाम दिया गया है। अत द्वितीय, पंचम, अष्टम व एकादश भावो को 'पणफर' के नाम से भी जाना जाता है।

आपोक्लिम पणफर के बाद आनेवाले चारो भाव आपोक्लिम के नाम से जाने जाते हैं। अत तृतीय, षष्ठम, नवम व द्वादश भाव 'आपोक्लिम' भाव कहलाते हैं।

त्रिकोण : उपर्युक्त नामो के अतिरिक्त प्रथम, पचम व नवम भाव को 'त्रिकोण' के भी नाम से जाना जाता है।

दुःस्थान या अशुभ भाव : षष्ठम, अष्टम तथा द्वादश भाव 'अशुभ भाव' या 'दु:स्थान' भी कहे जाते है।

☐

अध्याय–6

ज्योतिष फल–विचार

ज्योतिष विज्ञान का जो भी परिचय पूर्व अध्यायो मे दिया गया है उससे पाठक को यह भलीभॉति स्प्ष्ट हो गया होगा कि ज्योतिष विज्ञान के आधार पर किसी जातक का फल विचार करना इतना आसान नही है जितना सामान्यत लोग समझते है। फल–विचार की प्रवीणता कठिन परिश्रम व अधिकाधिक जातको के सबंध मे अनुभव के उपरात ही प्राप्त हो सकती है। मात्र सैद्धातिक अध्ययन ही फल–विचार मे तब तक प्रवीणता प्राप्त नही करा सकता है जब तक इसके साथ वास्तव में विभिन्न परिस्थितियो, विभिन्न सामाजिक–आर्थिक–पारिवारिक स्तरो से सबधित जातको की लग्न तालिका का अध्ययन न कर लिया जाए। मात्र एम बी बी एस या अन्य उच्च शिक्षा से ही कोई विद्यार्थी कुशल चिकित्सक नहीं बन जाता है। कुशल चिकित्सक वही बनता है, जो कडी मेहनत से अनेक रोगियो का परीक्षण कर उनकी चिकित्सा करता है तथा रोगो के निदान की अवधि मे अपने रोगी पर दवा आदि के प्रभाव पर पैनी नजर रखता है। अतः यदि आप ज्योतिष फल–विचार मे प्रवीणता लाना चाहते हैं तो सर्वप्रथम आपको यह सकल्प लेना होगा कि जब तक आप इस विषय मे स्वय पर्याप्त अनुभव प्राप्त नही कर लेते है तब तक अल्पज्ञान के आधार पर केवल कुछ महत्त्वपूर्ण बाते लोगों

को बताकर स्वय को 'ज्योतिषी' कहलाने के लालच मे नही पडे। लेखक का विचार है कि ज्ञान का अहकार ही व्यक्ति के ज्ञान–प्राप्ति के मार्ग में बहुत बडा बाधक है। ज्ञान–प्राप्ति एक सतत प्रक्रिया हे जिसका कोई अत नही है—यदि इस मूल सिद्धात के साथ आप ज्योतिष फल–विचार के सागर मे प्रवेश करेगे तो निश्चित ही ज्ञान के कुछ–न–कुछ मोती प्राप्त करने मे सफल हो सकेगे।

ज्योतिष फल–विचार एक बहुत बडा विषय है। अनेक प्राचीन ग्रथो मे इस विषय में विद्वानो ने अपने अनुभव के आधार पर कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। वर्तमान कालखड मे भी प्राचीन ग्रथों पर टीका करते समय विद्वानो ने इन सिद्धातो की व्याख्या की है। अत इन समस्त सिद्धातो व अनुभवो का ज्ञान इस पुस्तक के मात्र एक अध्याय मे नहीं दिया जा सकता है, परतु ज्योतिष फल–विचार के जो मूल सिद्धांत है, जिनपर चलकर किसी जातक की लग्न तालिका का फल बताया जा सकता है, उनका परिचय पाठक को इस अध्याय में कराया जा रहा है—

लग्न तालिका के किसी भाव का फल–विचार

जातक की लग्न तालिका के किसी भाव का अध्ययन कर उसके फल का विचार करते समय निम्नलिखित बिदुओं पर विचार करना होगा—

1. **उस भाव में स्थित राशि के गुण।**
2. **उस भाव में स्थित राशि का स्वामी (भावेश) कौन सा ग्रह है तथा वह ग्रह किस भाव मे स्थित है?**
3 **उस भाव में यदि कोई ग्रह स्थित है तो उसकी प्रकृति।**
4. **उस भाव व भावेश पर जिन अन्य ग्रहों की दृष्टि पड रही है, उनकी प्रकृति।**
5 **भाव के कारक की स्थिति।**
6. **भावेश की नवाश में स्थिति :** इसके लिए यह देखा जाता है कि

भावेश नवांश तालिका मे जिस भाव मे स्थित है उसकी राशि का स्वामी नवांश तालिका मे कहाँ स्थित है तथा कितना बलवान् है।

7 राशि (चद्र) तालिका मे भी उस भाव का परीक्षण उपर्युक्त बिदु 1, 2, 3 व 4 के अनुसार किया जाएगा।

8 यदि लग्न तालिका मे कोई विशेष योग बन रहा हो तो उसका विचार (विशेष योग आदि की जानकारी इस अध्याय मे आगे दी जाएगी)।

किसी भाव की वास्तविक स्थिति के सबध मे कोई भी फल बताने के पूर्व उपर्युक्त सभी आठ बिदुओ पर मस्तिष्क केद्रित करना आवश्यक है, मात्र एक या दो बिदुओ के सदर्भ मे ही लग्न तालिका देखकर फल की घोषणा कर देना अनुचित होगा।

भाव विशेष में स्थित राशियों के स्वामी (भावेश) के द्वारा दिए जानेवाले फल के संबध मे सामान्य सिद्धात—

1 त्रिकोण (प्रथम, पचम व नवम भाव) मे स्थित राशि के स्वामी सदैव अपनी महादशा व अंतर्दशा मे शुभ फल देते है। इसमे लग्नेश सर्वाधिक बलवान् होता है। उसके बाद नवमेश व उसके बाद पचमेश बली होता है।

2 केद्र मे प्रथम भाव छोड़कर चतुर्थ, सप्तम व दशम भाव मे स्थित राशि के स्वामी के सबध मे सामान्य सिद्धांत यह कहा गया है कि जो शुभ ग्रह केद्र के स्वामी होगे, वे शुभ फल नही देते है तथा जो अशुभ ग्रह केद्र के स्वामी है, वे अशुभ फल नही देते हैं। कुछ विद्वान् इसका यह अर्थ भी निकालते है कि शुभ ग्रह यदि केंद्र के स्वामी है तो शुभ फल नही देगे वरन् अशुभ फल देगे तथा जो अशुभ ग्रह केंद्र के स्वामी है वे अशुभ फल नही देगे, वरन् शुभ फल देंगे, परतु लेखक का यह अनुभव रहा कि केंद्र का स्वामी यदि शुभ ग्रह है तो स्वभावत शुभ फल नही

देगा वरन् अपनी स्थिति के अनुसार सामान्य फल देगा उसी प्रकार केंद्र का स्वामी यदि अशुभ ग्रह है तो वह स्वभावत अशुभ फल नही देगा वरन् अपनी स्थिति के अनुसार फल देगा। परतु केंद्र सबधी इस सिद्धात मे प्रथम भाव का स्वामी (लग्नेश) सदैव शुभ फल देता है (यदि लग्नेश छठे, आठवे या बारहवे भाव मे स्थित है तो उसके कुप्रभाव को अलग से देखना होगा)। केंद्र के स्वामियो मे सर्वाधिक बलवान् दशमेश, उसके बाद सप्तमेश व उसके बाद चतुर्थेश होता है।

3 दु स्थान (त्रिक) के स्वामी अर्थात् षष्ठेश, षष्ठेश व द्वादशेश यदि दु स्थान के अतिरिक्त अन्य किसी भाव मे स्थित हो तो अशुभ फल देते है। यह विशेष ध्यान देने की बात है कि दु स्थान का स्वामी भी यदि किसी दु:स्थान भाव मे स्थित होता है तो अशुभ फल नही देता है (आगे योग सबधी वर्णन मे आप देखेगे कि कुछ परिस्थिति मे यह राजयोग भी देता है)।
दु:स्थान के स्वामियों में सर्वाधिक अशुभ फल अष्टमेश देता है, परतु यदि सूर्य या चद्र अष्टमेश है (अर्थात् अष्टम भाव में कर्क या सिह राशि स्थित है) तो अशुभ फल नही देता है। द्वादशेश का अशुभ फल सामान्यत इसकी स्थिति व अन्य ग्रह जिसके साथ हो उसके अनुसार परिवर्तित हो जाती है।

4 तीसरे, छठे व ग्यारहवे भाव के स्वामी (तृतीयेश, षष्ठेश व एकादशेश) सदैव अशुभ फल देते है। इसमें भी सर्वाधिक अशुभ फल एकादशेश, उससे कम षष्ठेश व सबसे कम तृतीयेश देता है। पाठक के मन मे यह जिज्ञासा हो सकती है कि षष्ठेश का उल्लेख ऊपर बिंदु सख्या 3 मे भी किया जा चुका है, फिर षष्ठेश व एकादशेश का भी उल्लेख बिंदु संख्या 3 में ही क्यो नही कर लिया गया। इसका कारण यह है कि दु स्थान के स्वामी (तृतीयेश सहित) जब दु स्थान मे स्थित होते हैं तो अशुभ फल नही देते है, परतु षष्ठेश व एकादशेश सदैव अशुभ फल

ही देते ह चाहे वे कहीं भी स्थित हो

ऊपर जो सामान्य सिद्धात बताए गए हैं उनमे द्वितीयेश का फल किसी सामान्य सिद्धात से बँधा नही होता है, वरन् द्वितीयेश जिस राशि मे स्थित होता है तथा जिस अन्य ग्रह के साथ स्थित होता है, उसी के अनुसार फल भी देता है। कुछ हद तक द्वादशेश का व्यवहार भी द्वितीयेश के ही समान होता है जैसा ऊपर बिदु सख्या 3 के अंतिम वाक्य मे उल्लिखित है।

.ों के परस्पर संबध से उत्पन्न विशेष योग—

त्रिकोण केद्र सबध : तत्त्वदर्शी मुनियो ने त्रिकोण लक्ष्मीजी का स्थान व केद्र विष्णुजी का स्थान माना है। अत जहॉ भी त्रिकोणेश व केंद्रेश का परस्पर सबध होगा वहॉ जातक के लिए राजयोग उत्पन्न होगा। वर्तमान कालखंड में राजयोग से तात्पर्य यही ग्रहण किया जाए कि जातक को शासन मे उच्च अधिकार—सपन्न पद प्राप्त होगा। त्रिकोण व केद्र के विभिन्न भावो के बीच सबध से एक समान प्रबल सबध उत्पन्न नही होता है। विभिन्न ग्रथों मे दिए गए वर्णन व लेखक के अनुभव के अनुसार त्रिकोण व केद्र के सबध निम्नलिखित घटते हुए क्रम में बलशाली होते है, अर्थात् नीचे क्रम सख्या 1 का सबध सबसे अधिक बलशाली राजयोग उत्पन्न करेगा तथा क्रमानुसार 8 का सबंध सबसे कम बलशाली राजयोग उत्पन्न करेगा।

1. **नवमेश व दशमेश का संबंध**
2 **नवमेश व लग्नेश का संबध**
3. **नवमेश व चतुर्थेश का सबंध**
4. **नवमेश व सप्तमेश का संबंध**
5. **पंचमेश व दशमेश का संबध**
6. **पंचमेश व लग्नेश का संबंध**
7. **पंचमेश व चतुर्थेश का संबंध**

8 पचमेश व सप्तमेश का सबध

ऊपर जो त्रिकोणेश व केद्रेश के सबध की बात कही गई है, भी निम्नलिखित घटते हुए क्रम मे बलशाली होते है। अत नीचे क्रम सख्या का सबध सबसे बलशाली व क्रम सख्या 3 का सबंध सबसे कम बलशाली होगा।

1 त्रिकोणेश व केद्रेश का परस्पर स्थान परिवर्तन, उदाहरणार्थ नवमेश दशम भाव में तथा दशमेश नवम भाव मे हो।

2 त्रिकोणेश व केद्रेश दोनो एक साथ किसी अन्य भाव मे हो उदाहरणार्थ–नवमेश व दशमेश दोनो पचम भाव मे हो।

3 त्रिकोणेश व केद्रेश पृथक्–पृथक् भाव मे स्थित होकर परस्पर दृष्टि रखते हो, उदाहरणार्थ नवमेश पचम भाव मे हो तथा दशमेश एकादश भाव मे। ऐसी स्थिति मे ये दोनो परस्पर सातवे भाव में स्थित होकर एक–दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखेगे।

उपर्युक्त दोनो विवरणो से स्पष्ट है कि सबसे प्रबल राजयोग नवमेश व दशमेश के बीच उस स्थिति मे होगा, जब नवमेश दशम भाव मे व दशमेश नवम भाव मे स्थित हो। यह भी प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि इस राजयोग का फल कब मिलेगा। वैसे तो जातक की लग्न कुडली में जो योग हैं, उनका कुछ सामान्य फल पूरे जीवन मे मिलता है तथा जातक को जीवन मे सुख–समृद्धि प्राप्त होती है, यदि लग्न कुंडली मे अन्य प्रतिकूल स्थितियाँ है तो उसका प्रतिकूल प्रभाव भी ऑका जाएगा, परंतु राजयोग का पूर्ण प्रभाव तभी प्राप्त होता है, जब राजयोग बनानेवाले त्रिकोणेश व केद्रेश में से एक की महादशा मे दूसरे की अतर्दशा चल रही हो। यदि किसी जातक की महादशा उसके सक्रिय जीवन काल में आ ही नहीं रही हो तो उस जातक को राजयोग होते हुए भी जीवन–काल मे उस राजयोग का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होगा।

2. **दुःस्थान संबंध :** छठे, आठवे व बारहवे भाव के स्वामी सामान्यत जिस अन्य भाव मे स्थित होते है, उस भाव के फल को क्षति

ते ह परतु इन दु स्थानो के स्वामी यदि दु स्थान मे ही हो तो विशेष योग को जन्म देते हैं। इस प्रकार विद्वानो न विशेष योग बताए हैं–

हर्ष योग · यदि छठे भाव मे स्थित राशि का स्वामी, षष्ठेश अशुभ ग्रहो के साथ हो या अशुभ ग्रहो से देखा जाता हो तथा ऐसा षष्ठेश स्वय छठे, आठवें या बारहवे भाव मे स्थित हो तो इस स्थिति को 'हर्ष योग' नाम दिया गया है। 'हर्ष योग' की स्थिति मे जातक हर्षित यशवान्, भाग्यवान्, पुष्ट शरीरवाला व शत्रुओ को पराजित करनेवाला होता है।

सरल योग · यदि अष्टम भाव में स्थित राशि का स्वामी (अष्टमेश) छठे, आठवे या बारहवे भाव मे स्थित हो तो जातक सरल योग का लाभ प्राप्त करेगा। सरल योग से लाभान्वित जातक स्थिर चित्त, निर्भय, धनवान्, ज्ञानी व सफलता प्राप्त करनेवाला होता है। यह ध्यान देने योग्य है कि हर्ष योग में अशुभ ग्रहो के साथ होना या अशुभ ग्रहो की दृष्टि की भी बात कही गई है, परतु सरल योग मे यह नही कही गई है, क्योंकि अष्टम भाव मे मंगल का प्रभाव कष्ट देता है, परतु अष्टम मे शनि का प्रभाव आयु–वृद्धि करता है, अतः अष्टमेश के साथ अशुभ ग्रह के सयोग को सरल योग मे सम्मिलित नही किया गया है। ऐसे अशुभ ग्रह के सबध मे पूर्व अध्यायो मे दिए गए विवरण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करना उचित होगा।

विमल योग . यदि बारहवे भाव मे स्थित राशि का स्वामी छठे, आठवे या बारहवे भाव मे स्थित हो तथा अन्य अशुभ ग्रह के साथ स्थित हो या उसकी दृष्टि मे हो तो 'विमल योग' उत्पन्न होता है। विमल योग के फलस्वरूप

जातक धनवान सत्कार्यों मे व्यय करनेवाला सच्चरित्र व सुखी होता है

ग्रहो की विशेष स्थिति से उत्पन्न योग

पूर्व अध्यायो मे दिए गए विवरण के गभीर अध्ययन से पाठक स्वय यह पाएँगे कि ग्रह विशेष राशि व विशेष भाव मे स्थित होने पर कुछ विशेष फल देते है। इसी प्रकार ग्रह उच्च राशि मे या स्वराशि में स्थित होने पर बलशाली हो जाते है। इस स्थिति मे जातक को उस भाव के फल अधिक बल के साथ प्राप्त होते है, जिसमे उक्त ग्रह स्थित है या उक्त ग्रह द्वारा देखा जाता है। यदि जातक की जन्म कुडली मे इस प्रकार के कई ग्रह हो तो स्पष्ट है कि उसके सम्मिलित फल से जातक उत्तरोत्तर उन्नति प्राप्त करेगा। इस प्रकार ग्रहों की विशेष स्थिति के अनवरत अध्ययन से विद्वानो ने अनेक योगो को नाम दिया है, जिनके अंतर्गत जातक को उस योग का विशेष लाभ प्राप्त होता है। यद्यपि इस प्रकार से उत्पन्न होनेवाले योगों का पूरा विवरण देने के लिए पृथक् से एक पुस्तक की आवश्यकता होगी, परतु प्रारभिक अध्ययन के साथ पाठकगण को महत्त्वपूर्ण योगो की जानकारी देना पर्याप्त होगा। गभीर अध्ययन करनेवाले पाठक यदि स्वय अनेक जातकों के सबंध में अध्ययन करे तथा वास्तविक जीवन से तुलना करे तो स्वयं भी विशेष योगो के संबध मे निष्कर्ष प्राप्त कर सकते है।

1. **उच्च ग्रह योग :** यदि किसी जातक की जन्म कुंडली मे छह ग्रह उच्च के हों तो वह राजा के समान पद, प्रतिष्ठा, धन व शक्ति प्राप्त करेगा। यदि लग्न मे कुंभ राशि में शुक्र और वृष राशि मे चंद्रमा स्थित हो तथा पाँच अन्य ग्रह भी उच्च के हों तो इस स्थिति मे भी राजा के समान फल प्राप्त होगे।

उपर्युक्त योग एक स्वाभाविक निष्कर्ष है, क्योकि यदि एक ग्रह भी उच्च का है तो वह सामान्य से अधिक शुभ फल देता है। ऐसी

हा छह ग्रह उच्च के होगे वहा अत्यत प्रतिष्ठा धन व
ा होना अवश्यभावी है ऐसे व्यक्ति की तुलना राजा से ही
कती है। साथ ही यदि छह से कम ग्रह उच्च के हैं तो
मे भी प्रतिष्ठा, धन व शक्ति प्राप्त होगे, केवल उसका
म होता जाएगा।

में स्वराशि ग्रह–सबंधी योग : केद्र मे यदि मंगल, बुध
ाति, शुक्र या शनि मे से कोई भी ग्रह स्वराशि में या उच्च
मे स्थित हो तो विशष योग का जन्म देते है। विद्वानों ने
प्रकार पॉच विशेष योग बताए हैं—

रुचक योग : यदि जन्म कुडली मे मगल केद्र मे मेष, वृश्चिक या मकर राशि के अतर्गत स्थित हो तो इस स्थिति को 'रुचक योग' नाम दिया गया है। रुचक योग मे उत्पन्न जातक अत्यत साहसी, बली व सशस्त्र बल का मुखिया होता है। वर्तमान समय मे वह सेना या पुलिस मे उच्च पद प्राप्त करनेवाला कहा जा सकता है।

भद्र योग : यदि केद्र मे मिथुन या कन्या राशि मे बुध स्थित हो तो जातक का जन्म भद्र योग मे होना कहा जाता है। 'भद्र योग' में उत्पन्न जातक गणितीय विज्ञान का ज्ञाता, स्वच्छ रहन–सहनवाला तथा कुशल वक्ता होगा। ऐसा व्यक्ति भौतिक शास्त्र व ज्योतिष शास्त्र मे भी रुचि रखेगा।

हंस योग : यदि जन्म कुडली मे बृहस्पति केद्र मे स्थित कर्क, धनु या मीन राशि मे हो तो जातक को 'हस योग' का लाभ प्राप्त होता है। 'हस योग' मे उत्पन्न जातक अत्यत ज्ञानवान्, सतत अध्ययनरत, सुदर व्यक्तित्ववाला व सम्मानित होता है। ऐसा व्यक्ति ऐसे उच्च पद पर आसीन होगा जिसपर कार्य हेतु ज्ञान व मासिक शक्ति का प्रयोग हो। अतः अध्ययन या प्रशासन मे उच्च पद

प्राप्ति की सभावना कही जा सकती है

(iv.) **मालव्य योग :** यदि वृष, तुला या मीन राशि मे स्थित शुक्र जातक की जन्म कुडली मे केद्र मे हो तो इस स्थिति को विद्वानो ने 'मालव्य योग' का नाम दिया है। 'मालव्य योग' मे उत्पन्न जातक सगीत या कला के क्षेत्र मे दक्षता प्राप्त करता है तथा धैर्यवान् व स्थूल शरीरवाला होता है। ऐसे व्यक्ति को अच्छे वाहन का सुख भी प्राप्त होता है।

(v) **शश योग .** यदि जातक की जन्म कुडली मे शनि केद्र मे तुला, मकर या कुभ राशि मे स्थित हो तो विद्वानो ने इस स्थिति को 'शश योग' का नाम दिया है। 'शश योग मे उत्पन्न व्यक्ति अचल संपत्ति के स्वामी, बलवान् व धनवान् होते है, परतु इनका आचरण उत्तम नही होता है।

यदि किसी जातक की जन्म कुडली में उपर्युक्त एक से अधिक योग होगे तो उसी के अनुसार फल में वृद्धि हो जाएगी। कुछ विद्वानो का यह भी मत है कि उपर्युक्त पॉच योग उत्पन्न करनेवाले ग्रह के साथ यदि सूर्य या चद्रमा भी उपस्थित हो तो उपर्युक्त योग के शुभ फल में कमी हो जाती है। लेखक का मत है कि ऐसी स्थिति मे भी केद्र के जिस भाव मे उपर्युक्त ग्रह स्वगृही या उच्च होकर है, उस भाव के फल मे वृद्धि अवश्य करेगा, सूर्य या चद्रमा उस ग्रह के स्वाभाविक गुण में हानि नहीं करेगे, क्योकि ग्रह उच्च या स्वगृही होने के कारण बली है।

चंद्रमा की स्थिति से उत्पन्न योग : अन्य ग्रहो के सापेक्ष चद्रमा की स्थिति से कुछ विशेष योग जन्म लेते है। इसमे कुछ योग शुभ तथा कुछ अशुभ फल देनेवाले होते हैं। नीचे दिए गए प्रथम चार योग शुभ फल देनेवाले है, जबकि अतिम दो योग अशुभ फलदायक हैं–

(i) **अनफा योग :** यदि चंद्रमा से द्वितीय भाव मे कोई ग्रह न हो

तथा द्वादश भाव मे सूर्य राहु व केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह अर्थात् मगल बुध बृहस्पति शुक्र या शनि) हो तो अनफा योग' कहलाता है। 'अनफा योग' में उत्पन्न जातक सच्चरित्र प्रतिष्ठित, स्वस्थ शरीरवाला तथा सुखी होता है।

सुनफा योग : यदि चद्रमा से द्वादश भाव मे कोई ग्रह न हो तथा द्वितीय भाव मे सूर्य, राहु व केतु के अतिरिक्त अर्थात् मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि मे से कोई ग्रह उपस्थित हो तो 'सुनफा योग' कहलाता है। 'सुनफा योग' मे उत्पन्न जातक बुद्धिमान, धनवान् व यशवान् होता है।

दुरुधरा योग : यदि चद्रमा से द्वितीय व द्वादश दोनो भावो मे सूर्य, राहु व केतु के अतिरिक्त उपर्युक्त पॉच ग्रह (मगल, बुध बृहस्पति, शुक्र या शनि) मे से कोई उपस्थित हो तो इस स्थिति को विद्वानों ने 'दुरुधरा योग' नाम दिया है।

राजकेसरी योग : यदि चद्रमा से केद्र में, अर्थात् चद्र कुडली मे प्रथम, चतुर्थ, सप्तम या दशम भाव में बृहस्पति उपस्थित हो तो इस स्थिति को विद्वानो ने राजकेसरी योग नाम दिया है। 'राजकेसरी योग' मे उत्पन्न जातक बुद्धिमान, यशवान्, शत्रुओ पर विजय प्राप्त करनेवाला, दीर्घायु व कुशल वक्ता होता है।

केमद्रुम योग : यदि चद्रमा से द्वितीय व द्वादश दोनो भाव मे कोई ग्रह न हो, अर्थात् ये दोनों भाव रिक्त हो तो इस स्थिति को 'केमद्रुम योग' नाम दिया गया है। केमद्रुम योग होने से मनुष्य निर्धन, भाग्यहीन व अधीनस्थ स्थिति मे कार्य करनेवाला होता है। कुछ विद्वानों ने यह अनुभव किया है कि यदि उपर्युक्त स्थिति मे भी चद्रमा के केद्र मे कोई अन्य ग्रह हो तो 'केमद्रुम योग' का कुप्रभाव नहीं होता है।

शकट योग : यदि चद्र लग्न से छठे, आठवे या बारहवे भाव मे बृहस्पति उपस्थित हो तो इस स्थिति मे जातक 'शकट योग' के कुप्रभाव के अधीन होता है। 'शकट योग' के अंतर्गत जातक

दु खग्रस्त होता है तथा उसके जीवन मे कई उतार चढाव होते हैं अर्थात कभी वह अत्यत प्रतीत होता है और कभी भाग्यहीन प्रतीत होता है, परतु यदि लग्न कुडली मे चद्रमा केद्र मे हो तो 'शकट योग' का कुप्रभाव नही होता हे।

ज्योतिष विज्ञान के दृष्टिकोण से कुछ कुंडलियों की विवेचना

1. स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरू, जन्मतिथि : 14.11 1889, जन्म का समय 11.03 बजे रात्रि, स्थान · इलाहाबाद।

लग्न कुडली एवं राशि कुडली

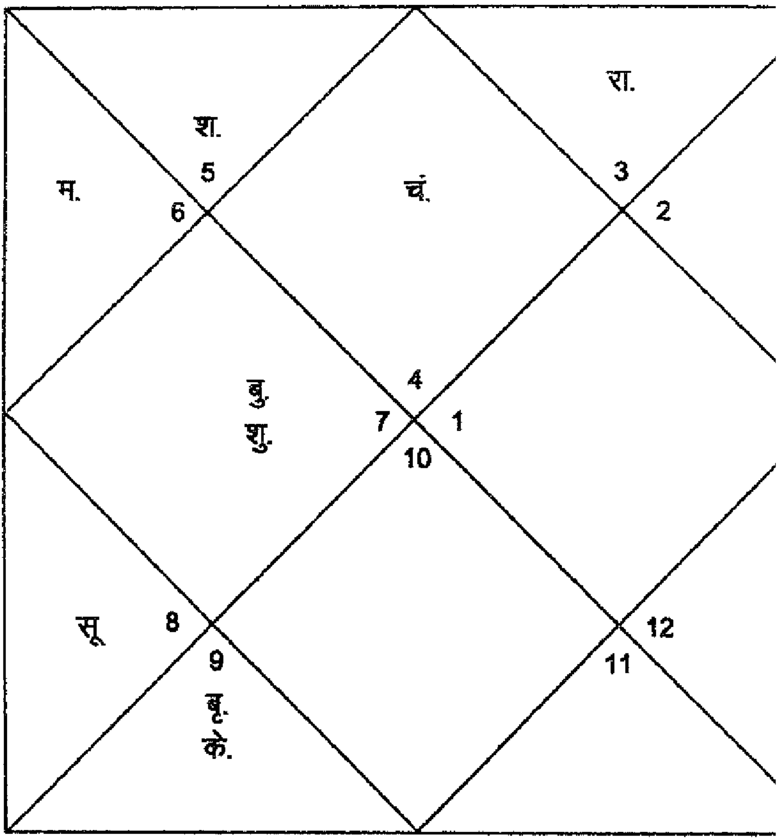

उपर्युक्त तालिकाओ मे लग्न व राशि दोनो कर्क हैं तथा प्रथम भाव मे लग्नेश चद्रमा स्वय स्थित है अन्य किसी ग्रह की दृष्टि प्रथम भाव पर नही है। लग्नेश चद्रमा नवाश तालिका मे एकादश भाव मे ः नु राशि मे स्थित है तथा इस राशि का स्वामी बृहस्पति सप्तम भाव मे सिह राशि मे स्थित है। बृहस्पति के साथ नवाश तालिका मे केतु भी स्थित है तथा राहु की दृष्टि इस भाव पर है। अत. प्रथम भाव की नवाश मे भी स्थिति सबल है। प्रथम भाव के परिणाम कर्क राशि मे चंद्रमा व ृहस्पति ग्रहो के गुणो से प्रभावित होगे। लग्नेश के प्रथम भाव मे ही उपस्थित होने तथा अन्य कोई पाप ग्रह की दृष्टि प्रथम भाव पर न पडने के कारण लग्न को पर्याप्त बल प्राप्त हो रहा है।

नवांश कुडली

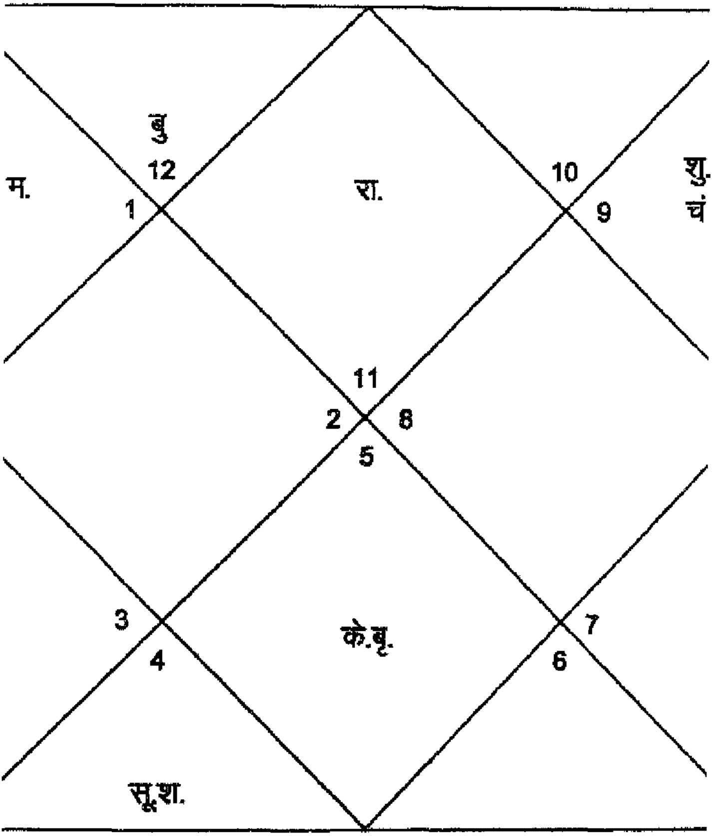

लग्न तालिका मे तीन ग्रह–चद्रमा, शुक्र व बृहस्पति स्वगृही है तथा शुक्र केद्र मे तुला राशि मे स्थित होने के कारण 'मालव्य योग उत्पन्न कर रहा है। पाठक प्रथम दृष्टया जातक के दशम भाव के साथ कोई महत्त्वपूर्ण ग्रह उपस्थित न होने व दशम भाव के साथ कोई शुभ योग उत्पन्न न होने की बात से प्रभावित न हों, परतु दशम भाव की पूर्ण स्थिति को गभीरता से देखे। दशमेश सूर्य पचम भाव मे है तथा सूर्य सत्ता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त मगल, बुध, शुक्र व बृहस्पति ग्रहो की दृष्टि दशम भाव पर पड रही है। अत दशम भाव पर कुल पॉच ग्रहो का प्रभाव इस भाव की स्थिति को अत्यत सबल बताता है। इसके अतिरिक्त दशमेश मगल नवाश तालिका मे भी तृतीय भाव मे अपनी ही राशि मे है। इस प्रकार दशम भाव मे मगल व सूर्य का प्रभाव बुध, शुक्र व बृहस्पति की भी दृष्टि से अंतर्गत है। इसके अतिरिक्त प्रथम भाव में लग्नेश स्वयं स्थित है तथा अन्य किसी ग्रह की दृष्टि से प्रभावित नही है। इसी कारण जातक के व्यक्तित्व मे कर्क व चद्रमा का प्रभाव अधिक रहा। अत उनका प्रशासक के रूप मे व्यक्तित्व से भी अधिक एक कल्पनाशील चितनकर्ता, भावुक, प्रेमी व लेखक (डिस्कवरी ऑफ इडिया) के रूप मे व्यक्तित्व उभरा। यदि स्वर्गीय प नेहरू देश के प्रधानमत्री नही होते तो भी उनके उत्तम मानवीय गुण उन्हे एक महापुरुष की श्रेणी मे रखने के लिए पर्याप्त है।

स्वर्गीय पं. नेहरू की प्रथम विदेश यात्रा सन् 1905 मे केतु की महादशा में राहु की अतर्दशा के अंतर्गत हुई। लग्न तालिका मे नवमेश बृहस्पति छठे भाव में केतु के साथ है तथा राहु द्वादश भाव मे है। राहु–केतु परस्पर दृष्टि में हैं। केतु पर मंगल की भी दृष्टि है। नवम व द्वादश भाव के साथ यह संयोग विदेश यात्रा के लिए पर्याप्त है। इसके उपरांत प्रधानमत्री बनने के बाद राहु की महादशा मे भी जातक ने अनेक विदेश–यात्राऍ कीं। अत नवम व द्वादश भाव के उक्त सयोग से विदेश यात्रा की स्थिति स्पष्ट होती है। यह भी

उल्लेखनीय है कि जातक प्रथम बार प्रधानमंत्री भी मंगल (दशमेश) की महादशा प्रारंभ होने के समय ही बने तथा जीवनपर्यंत इस पद पर रहे, क्योंकि दशम भाव पर प्रतिकूल प्रभाव डालनेवाली कोई परिस्थिति लग्न तालिका में नही है।

2 नाम : 'क', जन्म का विवरण : 21.8.69., सायं 7.45 बजे स्थान : गाजीपुर, उ.प्र।

जातक 'क' की लग्न मीन है तथा लग्नेश बृहस्पति सप्तम भाव मे है। नवांश मे बृहस्पति दशम भाव मे है तथा इस भाव का स्वामी

लग्न तालिका

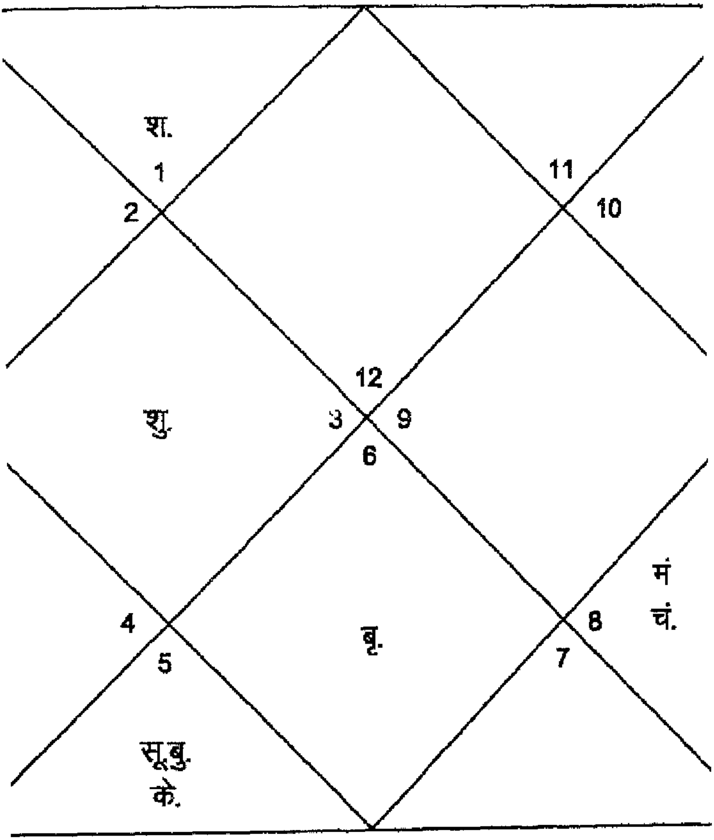

नवांश तालिका

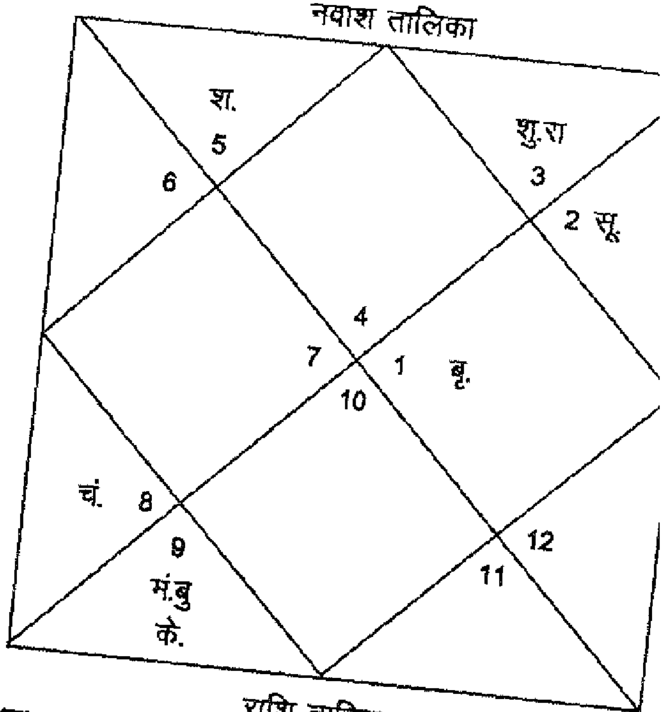

राशि तालिका

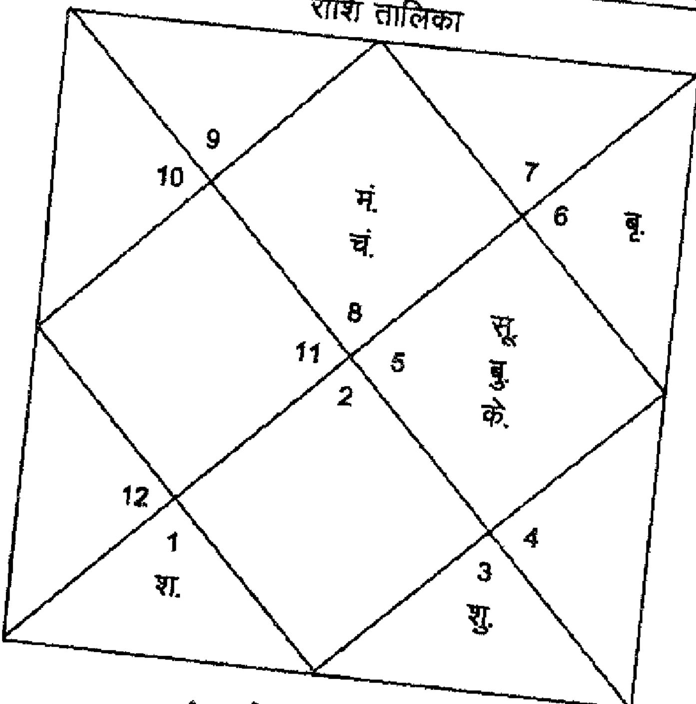

मगल नवाश चक्र के छठे भाव मे है यह स्थिति लग्न चक्र में प्रथम भाव को कोई बल नहीं देती है परतु कोई विशेष प्रतिकूल स्थिति भी नही है। राशि चक्र मे प्रथम भाव मे चद्रमा वृश्चिक राशि मे होने के कारण नीच है तथा इसके साथ मगल है। लग्न चक्र मे यही स्थिति नवम मे है। चद्रमा कल्पनाशीलता, भावुकता व मस्तिष्क पर नियत्रण रखनेवाला ग्रह है। पूर्व मे प जवाहरलाल नेहरू की लग्न तालिका मे एक सबल चद्रमा ने उन्हे उच्च कल्पनाशीलता व चितक का गुण प्रदान किया, परतु जातक 'क' की तालिकाओ मे इसके प्रतिकूल नीच का चद्रमा मगल के साथ है। इस कारण जातक को निराशाजन्य व्यक्तित्व मिला। यह जातक भावुक है, परतु अपनी भावनाओं को चितन के फलस्वरूप जातक ने सन् 1991–92 मे (केतु महादशा के अतर्गत मगल की अतर्दशा मे) आत्महत्या का भी प्रयास किया। पाठक कृपया देखें कि मगल चद्रमा को दूषित करने के साथ द्वितीय भाव का स्वामी होने के कारण जातक की आयु दीर्घ है। अत. इस परिस्थिति में जातक ने आत्महत्या का प्रयास अवश्य किया, परतु उसकी मृत्यु नही हुई। जातक 'क' घटना के समय एम.ए अंतिम वर्ष का छात्र था। अत घटना से उसकी उच्च शिक्षा व जीवन का कुप्रभावित होना अवश्यभावी था। दूसरी ओर पाठक यह भी देखे कि लग्न तालिका का प्रथम भाव विशेष कमजोर नही है। चतुर्थ भाव मे मित्र राशि मे शुक्र की उपस्थिति व सप्तम भाव मे दशमेश व लग्नेश बृहस्पति की उपस्थिति भी यह प्रदर्शित करती है कि जातक एक सामान्य सुख–सुविधा से परिपूर्ण वैवाहिक जीवन व्यतीत करेगा।

उपर्युक्त परिस्थिति ज्योतिष विज्ञान द्वारा उपचार का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। सन् 1991–92 मे जातक के द्वारा आत्महत्या के प्रयास के समय ज्योतिष उपचार का परामर्श प्राप्त किया गया। जातक के द्वारा पूर्णमासी की तिथि पर चाँदी की चंद्रमा की आकृति काले धागे मे गले मे धारण की गई तथा मगलवार का वृत प्रारभ किया गया। इसके उपरात जातक ने दूसरे विश्वविद्यालय से पुन एमए का

अध्ययन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा बी.एड उत्तीर्ण करने के उपरांत एक विद्यालय मे शिक्षक के पद पर नियुक्ति भी प्राप्त की। सन 1996 मे शुक्र की महादशा प्रारभ होने के उपरात उसका विवाह भी हो गया। यह जातक यद्यपि अपनी भावनाओ को अभी भी पूर्णत सकारात्मक नियत्रण देने मे समर्थ नही है तथा समय–समय पर निराशा अनुभव करता है, वह फिर भी ज्योतिष उपचार के उपरात कुछ हद तक सामान्य जीवन–यापन करने में वह सफल रहा है।

3 नाम : 'ख', जन्म का विवरण · 11.10.1965, समय : 3 10 अपराह्न, स्थान : इलाहाबाद।

लग्न कुंडली

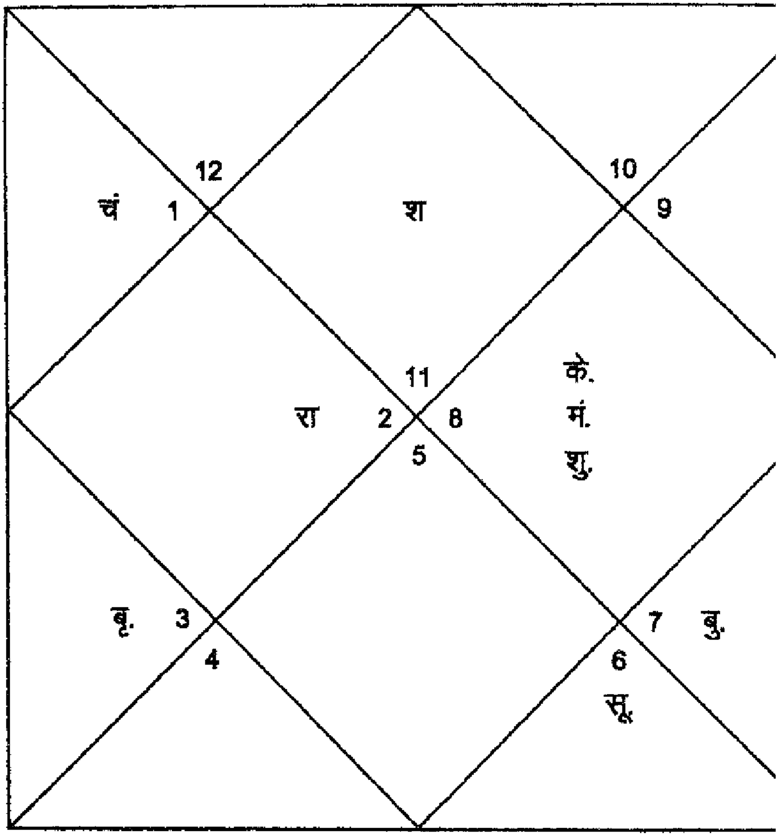

नवांश कुडली

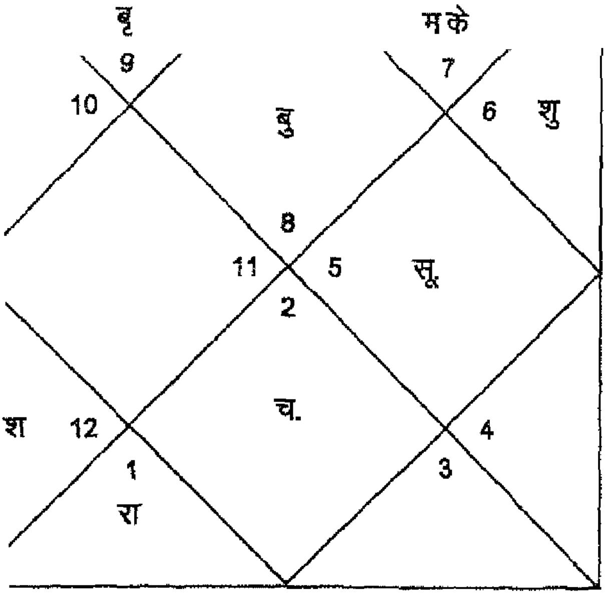

राशि कुंडली

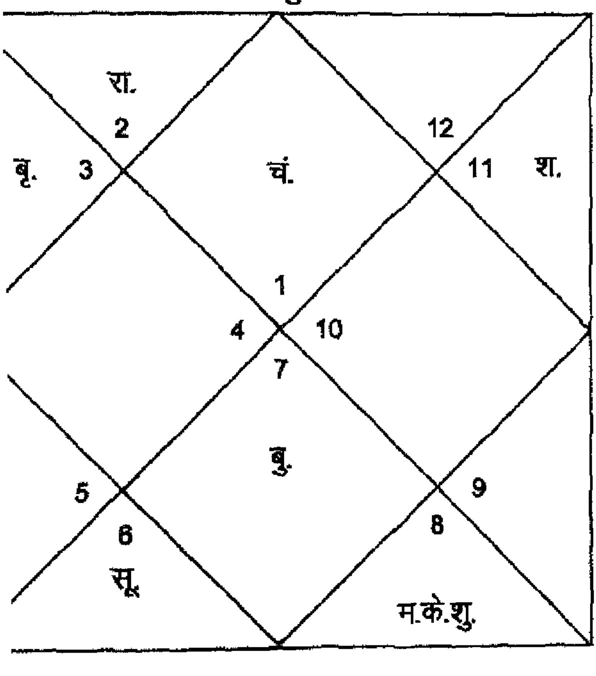

जातक 'ख' के प्रथम भाव मे लग्नेश शनि उपस्थित है तथा उसपर बृहस्पति की दृष्टि है। अन्य किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि प्रथम भाव पर नहीं है। लग्नेश शनि नवाश चक्र मे पचम भाव में मीन राशि मे है तथा मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नवाश कुडली मे द्वितीय भाव मे धनु राशि मे स्थित होने के कारण स्वगृही है। इसपर पचम भाव मे स्थित शनि की दृष्टि भी पड रही है। नवांश कुडली मे भी लग्नेश शनि के लिए अन्य कोई प्रतिकूल स्थिति नही है। इसके अतिरिक्त राशि चक्र मे प्रथम भाव का स्वामी मगल यद्यपि अष्टम भाव मे स्थित है, परतु वृश्चिक राशि मे स्थित होने के कारण स्वगृही है। अत तीनो चक्र से प्रथम भाव की स्थिति पर्याप्त सबल हो जाती है तथा जातक को कुभ राशि, स्वगृही शनि व उसपर बृहस्पति की दृष्टि का पूर्ण फल प्राप्त हो रहा है। अत गभीर, ज्ञानी, अध्ययनरत व कुशल प्रशासक होगा।

प्रथम भाव के अतिरिक्त दशम भाव मे स्वगृही मंगल की उपस्थिति रुचक योग को जन्म दे रहा है। नवमेश शुक्र व दशमेश मगल दोनो दशम भाव मे एक साथ उपस्थित होकर उच्च स्तरीय त्रिकोण केद्र सबध को जन्म दे रहे हैं। यह स्थिति स्पष्ट राजयोग उत्पन्न कर रही है। अत. जातक को वर्तमान मे सर्वोच्च राजकीय सेवा भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) मे चयन शुक्र की महादशा मे केतु की अतर्दशा के समय मे हो गया। पाठक कृपया यह देखे कि शुक्र त्रिकोण केद्र सबध से राजयोग उत्पन्न कर रहा है तथा केतु दशम भाव मे ही शुक्र व मगल के साथ उपस्थित है। जातक के जीवन मे मंगल की महादशा सन् 2007 से 2014 तक रहेगी। इस अवधि मे जातक अत्यत उच्च पद प्राप्त करेगा तथा शासन की शक्तियों का कुशल प्रशासक के रूप मे उपयोग कर प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। नवम भाव में बुध की उपस्थिति तथा नवमेश की शुभ स्थिति जातक को सदैव ज्ञान की प्राप्ति हेतु अध्ययनरत रहने की भी प्रवृत्ति देगा।

4 जातक 'ग' का जन्मतिथि 13 9 1984 समय 11 30 पूर्वा
स्थान इटावा

लग्न कुडली

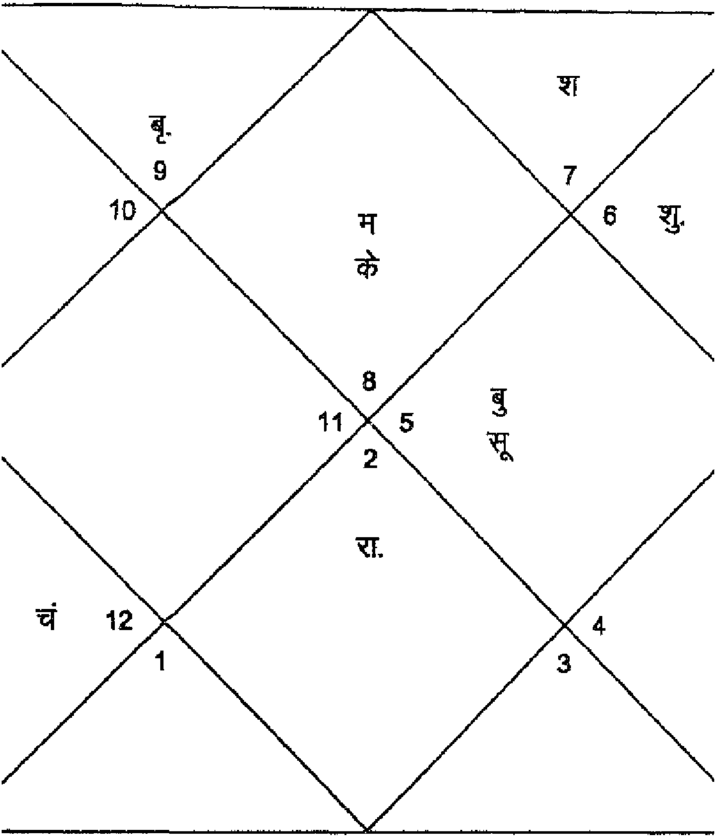

जातक 'ग' के लग्न चक्र मे प्रथम तीन ग्रह अपनी राशियो मे ही स्थित होकर जन्म कुंडली को पर्याप्त बल प्रदान करते दिखाई देते है। प्रथम भाव मे स्वगृही मगल, द्वितीय भाव मे स्वगृही बृहस्पति व दशम भाव मे स्वगृही सूर्य किसी भी जातक के जीवन मे उल्लेखनीय प्रगति ला सकते हैं, परतु जातक 'ग' के जीवन मे प्रथम भाव मे मगल के साथ उपस्थित केतु की महादशा एक वर्ष की ही आयु मे प्रारभ हो गई। प्रथम भाव जातक के सिर को भी प्रदर्शित करता है।

नवांश कुंडली

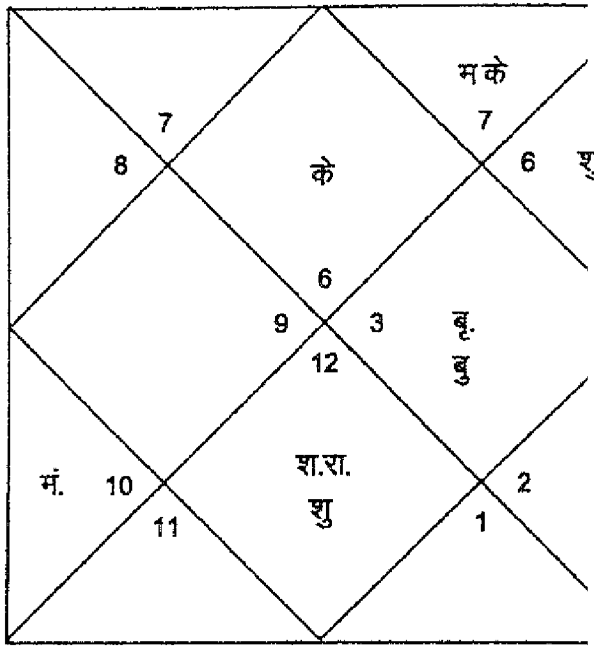

राशि कुंडली

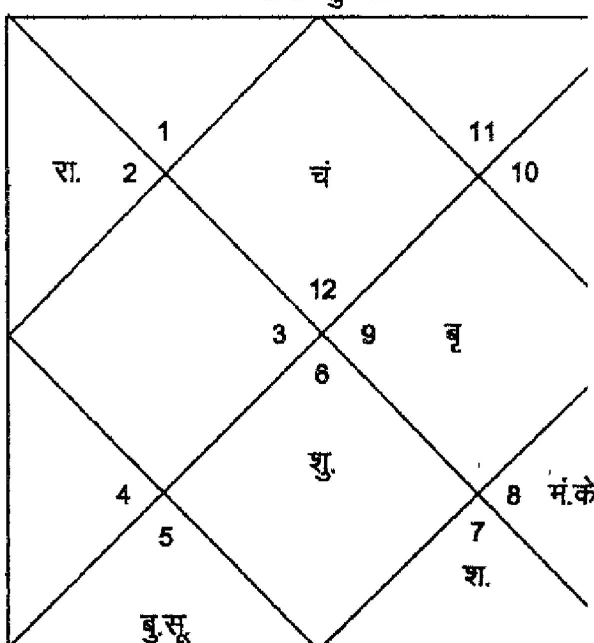

प्रथम भाव मे मगल की ही राशि व मगल के साथ उपस्थित केतु पर अन्य किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नही पड रही है। अत केतु अपनी महादशा मे अत्यत अशुभकारी परिणाम देनेवाला सिद्ध हुआ। लगभग एक वर्ष की ही आयु मे जातक को तीव्र ज्वर के फलस्वरूप उसके मस्तिष्क का कोई ऐसा भाग कुप्रभावित हो गया जिसके कारण जातक का भौतिक व मानसिक विकास लगभग अवरुद्ध हो गया। जातक आगे जीवन में बैठने, चलने, बोलने आदि के कार्य भी नही सीख सका।

जातक 'ग' के अष्टम भाव पर भी मगल की दृष्टि है, परतु इसके साथ बृहस्पति की भी दृष्टि है। इस परिस्थिति में जातक की मृत्यु अल्प बाल्यावस्था मे प्रदर्शित नही होती है। जातक की मृत्यु सत्रह वर्ष की आयु मे शुक्र की महादशा मे राहु की अतर्दशा के समय हुई। यह स्पष्ट है कि जातक की लग्न कुडली मे सप्तमेश होने के कारण शुक्र मारकेश है तथा राहु भी सप्तम भाव मे उपस्थित होने के कारण द्वितीय मारकेश है।

उपर्युक्त विवेचना उदाहरणस्वरूप कुछ जातको के सबध मे केवल इस उद्देश्य से की गई है कि पाठक ज्योतिष फल की विवेचना के सबध मे यह समझ सके कि मात्र किसी भाव विशेष की स्थिति या ग्रह विशेष की स्थिति से कोई निष्कर्ष निकालना अनुचित होगा। पूर्ण लग्न चक्र, नवाश चक्र व राशि चक्र के साथ ही महादशा व अतर्दशा पर भी दृष्टि रखते हुए ही सफल विवेचना की जा सकती है। जिस पाठक को इतने अध्ययन के उपरांत ज्योतिष विज्ञान में आगे दक्षता प्राप्त करने की रुचि हो तथा अध्ययन के लिए समय हो उनके लिए यह उचित होगा कि वह ज्योतिष फल–विवेचना सबधी पुस्तको का आगे अध्ययन करे। साथ ही वे स्वयं जिन व्यक्तियो के सबध में विवेचना करना चाहे उनके चक्र आदि के विवरण अपने पास स्थायी रूप से किसी पुस्तिका मे बना ले तथा जो निष्कर्ष आप प्राप्त करते हैं, उनका मिलान संबधित व्यक्ति के

जीवन की घटनाओं से करे। इस प्रकार आप जितने अधिक व्यक्तियो के सबध मे अध्ययन करेगे, आपकी ज्योतिष फल–विवेचना बुद्धि उतनी ही परिपक्व होती जाएगी।

किसी भी ज्ञान का उपयोग मानव–हित मे ही किया जाना श्रेयस्कर है। अत पाठकगण से यह भी निवेदन है कि आपको इस पुस्तक के अध्ययन से जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसकी सहायता से किसी व्यक्ति के जीवन के कष्ट को ज्योतिष विज्ञान की सहायता से यथासंभव दूर करने मे समर्थ हो, उसका सत्प्रयास अवश्य करे, केवल अपने ज्योतिष ज्ञान से अन्य व्यक्तियो को प्रभावित करना इस ज्ञान का दुरुपयोग ही होगा।

□□□